मासिक

शिविरा पत्रिका

वर्ष : 60 | अंक : 05 | नवम्बर, 2019 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹20

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

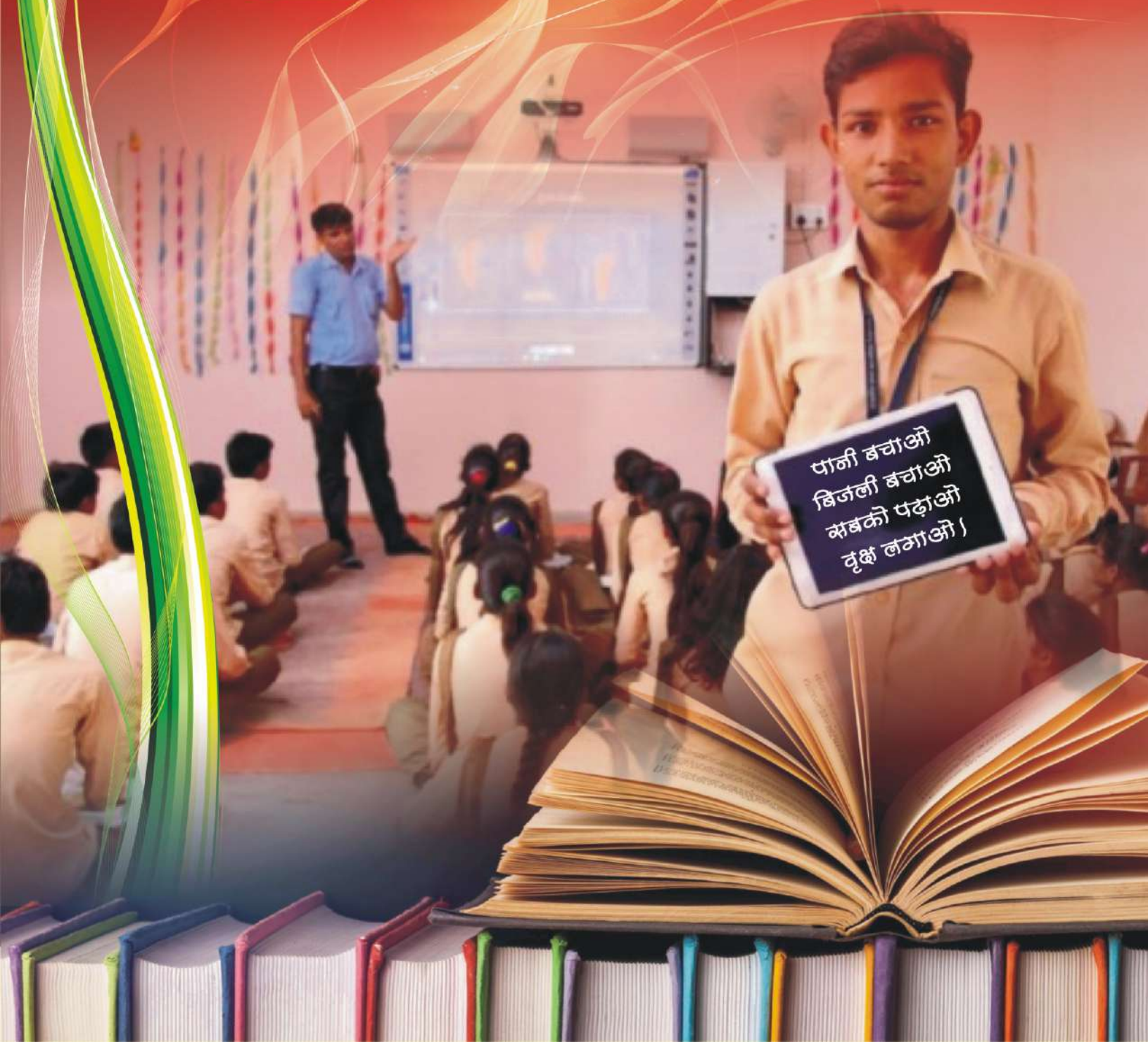

सत्यमेव जयते

श्री गोविन्द सिंह डोटासरा
राज्य मंत्री
शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा) विभाग
(स्वतंत्र प्रभार)
पर्यटन एवं देवस्थान विभाग
राजस्थान सरकार

गुणवत्तापूर्ण हो प्राथमिक शिक्षा

शिक्षा संस्कार ही प्रदान नहीं करती बल्कि निरंतर आगे बढ़ने के अवसर भी देती है। राजस्थान में इसी सोच को दृष्टिगत रखते हुए शैक्षिक विकास के निरंतर प्रयास की पहल की गई है। हम चाहते हैं कि हमारे विद्यार्थी प्रतिभावान, संस्कारवान हों और उन्हें विद्यालयों में भरपूर इसका वातावरण मिले।

शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थियों को बेहतरीन शिक्षा के साथ ही उनके कौशल विकास का भी अवसर मिले, इसके लिए भी कार्य किए जाने की जरूरत है। इस बात को गहरे से समझे जाने की जरूरत है कि विद्यार्थी कच्ची मिट्टी सरीखा होता है। शिक्षक अपने अनुभव और ज्ञान से इस कच्ची मिट्टी से घड़ा तैयार करता है। गिजुभाई जैसे शिक्षाविदों को पढ़ते बहुत कुछ सीखने को मिलता है कि कैसे उन्होंने विद्यार्थियों की पढ़ने में रूचि नहीं होते हुए भी अपने प्रयासों से रूचि पैदा की। आज के समय में शिक्षण संस्थाओं में इसी तरह के कार्य किए जाने की जरूरत है कि जो कुछ विद्यार्थियों के पास है, उसमें अपने प्रयासों से शिक्षक और कैसे वृद्धि करे। कैसे विद्यार्थी पढ़े और अपने कौशल में भी निरंतर पारंगत हो।

बच्चे देश का भविष्य हैं, इसे ध्यान में रखते हुए क्यों नहीं आरंभ से ही उनके समग्र व्यक्तित्व विकास के लिए प्रयास किए जाएं। यह बात इसलिए है क्योंकि इस माह 14 नवम्बर को बाल दिवस है। यह देश के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू का जन्म दिन है पं. नेहरू बालकों में सदैव देश का भविष्य देखते थे। मेरा यह मानना है कि प्राथमिक एवं पूर्व प्राथमिक स्तर के छोटे-छोटे बालक-बालिकाओं की शिक्षा पर हमें ज्यादा से ज्यादा ध्यान देना चाहिए। अतः भौतिक रूप से हमारे प्राथमिक स्कूलों के भवन व अन्य शिक्षण अधिगम सामग्री तथा मानव संसाधन की दृष्टि से प्राथमिक शिक्षक दोनों की गुणवत्ता सुनिश्चित करना आवश्यक है। न्यूरों साइंस के शोध बताते हैं कि मस्तिष्क का 85 प्रतिशत विकास 6 वर्ष की आयु से पहले हो जाता है। ऐसे में पूर्व प्राथमिक (नर्सरी एवं के.जी.) शिक्षा पर फोकस करना एक अहम आवश्यकता है।

मेरा प्रारम्भिक शिक्षा से जुड़े शिक्षकों/अधिकारियों तथा आंगनबाड़ी व्यवस्था से सम्बन्धित सभी कार्यकर्ताओं/अधिकारियों से अनुरोध है कि वे इन छोटे-छोटे बच्चों को घर जैसा माहौल माता-पिता जैसा वात्सल्य व संरक्षण तथा गिजुभाई जैसा 'आनन्ददायी शिक्षण दे कर उन्हें तैयार करें। इन बालकों के लिए भोजन, तन्दुरूस्ती, खेल-खिलौने, गीत-नृत्य, काम-आराम सब चिन्ताएं आप को करनी चाहिए। इस पौध को तैयार करना जड़ों को सींचने तथा भवन की नींव भरने जैसा कार्य है। आखिर ये बच्चे ही तो हैं राष्ट्र की जड़ें और राष्ट्र की नींव! इन बालकों की शिक्षा में गुणवत्ता का समावेश ही नेहरू के प्रति राष्ट्र की सच्ची श्रद्धाजंलि होगी।

इस माह 11 नवम्बर को हम राष्ट्रीय शिक्षा दिवस के रूप में मनाएंगे। यह दिन भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री डॉ. मौलाना अबुल कलाम आजाद का जन्म दिन है। महात्मा गाँधी के अनुयायी मौलाना हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रबल पक्षधर थे। मौलाना अबुल कलाम शिक्षाविद्, कवि, लेखक और पत्रकार सभी थे आइये, मौलाना साहब को स्मरण करते हुए प्राथमिक शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण बनाने की दिशा में हम अपनी चाल को और तेज करें।

शुभकामनाओं के साथ,

(गोविन्द सिंह डोटासरा)

"शिक्षा संस्कार ही प्रदान नहीं करती बल्कि निरंतर आगे बढ़ने के अवसर भी देती है। राजस्थान में इसी सोच को दृष्टिगत रखते हुए शैक्षिक विकास के निरंतर प्रयास की पहल की गई है। हम चाहते हैं कि हमारे विद्यार्थी प्रतिभावान, संस्कारवान हों और उन्हें विद्यालयों में भरपूर इसका वातावरण मिले।"

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।

In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 60 | अंक : 5 | कार्तिक शु.-मार्गशीर्ष शु. २०७६ | नवम्बर, 2019

प्रधान सम्पादक
नथमल डिडेल

❁

वरिष्ठ सम्पादक
अनिल कुमार अग्रवाल

❁

सम्पादक
मुकेश व्यास

❁

सह सम्पादक
सीताराम गोदारा

❁

प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 20

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 100
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 200
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 300
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता

वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका

माध्यमिक शिक्षा राजस्थान

बीकानेर-334 011

दूरभाष : 0151-2528875

E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

- अपना विद्यालय : श्रेष्ठ विद्यालय 5

आलेख

- इक बाबा अकाल रूप 6
  हरप्रीत सिंह कंग
- शिक्षा विचारक महात्मा गाँधी 9
  सन्तोष कुमारी
- बेशकीमती समय 10
  संकलन प्रस्तुति : **अशोक कुमार व्यास**
- गाँधी : कल, आज, और कल 11
  रामकिशन कुमावत 'श्याम'
- दूरस्थ शिक्षा के मसीहा नेहरु 12
  ओम प्रकाश सारस्वत
- वृक्ष मित्र अभियान 14
  मानाराम जाखड़
- भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण 15
  सुरेन्द्र माहेश्वरी
- वैश्विक आदर्श : भूटान 17
  दीपक जोशी
- जल, थल और स्वास्थ्य के लिए घातक प्लास्टिक : **अंकुश्री** 19
- कर्त्तव्य कर्म 21
  सतीश चन्द्र श्रीमाली
- बाल-साहित्य में नवाचार 22
  डॉ. ऋषि मोहन श्रीवास्तव
- बच्चों में आत्मशक्ति का विकास 23
  सम्पतमल प्रजापति
- शिक्षक की भूमिका : **कुमार जितेन्द्र** 24
- संस्थागत नियोजन की आवश्यकता 28
  मदन लाल मीणा
- शिष्ट विद्यार्थी के लक्षण 29
  अजय कुमार ओझा
- पुस्तकों की बातें 30
  डॉ. रमेश 'मयंक'
- अनूठे व्यक्तित्व की धनी ग्रेटा थनबर्ग 32
  टेकचन्द्र शर्मा
- कमजोर बालक : निदानात्मक उपाय 33
  महेश कुमार चतुर्वेदी
- शिक्षा एवं समाज 35
  सत्यपाल अवस्थी
- विद्यार्थी सुरक्षा विद्यालय प्रबन्धन का एक पहलू : **रवीन्द्र दाधीच** 36
- बच्चे को डाँटिए नहीं, रुचि पहचानिए 37
  पवन चौहान
- नेतृत्व एक दृष्टि 38
  श्रवण सिंह राजपुरोहित

कविता

- यह अधिकार हमारा है 8
  सुरेन्द्र कुमार चेजारा
- शिक्षा की दीक्षा 18
  बद्री प्रसाद शर्मा
- चाचा नेहरु 34
  जगदीश चन्द्र शर्मा

स्तम्भ

- पाठकों की बात 4
- आदेश-परिपत्र 25-26
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 27
- पञ्चाङ्ग (नवम्बर, 2019) 27
- बाल शिविरा 42-44
- शाला प्रांगण 45-48
- चतुर्दिक समाचार 49
- हमारे भामाशाह 50

पुस्तक समीक्षा 39-41

- जुम्मै री नमाज, लेखक : राजेन्द्र जोशी
  समीक्षक : **हरीश बी. शर्मा**
- बालकों की अदालत
  लेखिका : डॉ. चेतना उपाध्याय
  समीक्षक : **ब्रह्म प्रकाश गौड़**

मुख्य आवरण :
नारायणदास जीनगर, बीकानेर

विभागीय वेबसाइट : www.education.rajasthan.gov.in/secondary

▼ चिन्तन

कर्मण्येवाधिकारस्ते
मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफल हेतुः भूः मा
ते सङ्गोऽस्त्व कर्माणि।।

(गीता : अध्याय 2, श्लोक 47)

केवल कर्म पर तेरा अधिकार है। फल में कभी नहीं। अतः तू कर्मफल का हेतु भी मत बन और तेरी अकर्मण्यता में भी आसक्ति न हो।

पाठकों की बात

- 'अपनों से अपनी बात' स्तंभ में श्री गोविन्द सिंह डोटासरा शिक्षा राज्य मंत्री ने महात्मा गाँधी जी की जयन्ती 2 अक्टूबर, 2019 से पूरे साल मनाने का ऐलान किया है। उनके जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान किया है। वृक्षारोपण परीक्षा उत्सव सोत्साह मनाने का आह्वान किया है। बच्चों का बस्ते का बोझ 2/3 कम करने का प्रयोग प्रारम्भ कर दिया है। दीपावली की शुभकामनाएँ शिविरा पाठकों को दी है। दिशाकल्प-मेरा पृष्ठ निदेशक महोदय श्री नथमल डिडेल (माध्यमिक शिक्षा) को हार्दिक धन्यवाद। क्योंकि शैक्षिक क्षेत्र में उनके पारदर्शी सफल निर्देशन में साल 2019 में राजस्थान रैंकिंग में द्वितीय स्थान पर रहा। निदेशक महोदय ने पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जो ईमानदारी, सादगी व भावना के पोषक थे, को भी याद किया। यह उनकी विशिष्टता है। उनकी कर्त्तव्यपरायणता सदैव स्मरणीय रहेगी। महात्मा गाँधी बापू की 150 वीं जयन्ती विश्व स्तर पर मनाई गई, शिविरा ने उनसे सम्बन्धित समस्त आलेख चुनने में जो सतर्कता की वह प्रशंसनीय है। प्रत्येक आलेख एक से बढ़कर एक हैं। किसी को कमतर नहीं कह सकते। बापू जी के एकादश व्रतों का उल्लेख बहुत ही भाया। इस आलेख की जितनी प्रशंसा की जाय वह कम ही है। राज्य का गौरव, राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार से पुरस्कृत परम आदर्श शिक्षाधिकारी डॉ. कल्पना शर्मा का सचित्र उन्हीं के शब्दों में वर्णित आलेख पाठकों के लिए एक अनूठी सौगात है। उनकी उपलब्धियों को बार-बार पढ़ें और अनुमान करने का प्रयत्न करें। बड़ी खुशी की बात है कि शिविरा ने पूर्व प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री का प्रसंग व प्रकरण भी लिखा जो उनकी बेहद सादगी का प्रतीक है। कुछेक आलेख 'मैं पढ़ाने आऊँगा', आम जीवन में 'समय का बोध' राजस्थान में 'बस्ते का बोझ' पठनीय आलेख हैं। 'हमारा कर्म हो सेवा, हमारा धर्म हो सेवा' लेख भी बार-बार पढ़ने योग्य है। छोटा सा प्रसंग प्रकरण अविस्मरणीय बड़ा ही प्रेरणास्पद है, 'खुशियों का तरीका है पैदल चलना', 'समय की कीमत' अवश्य पढ़ा जावें। माह अक्टूबर 2019 का अंक अभ्युदय पृष्ठ बापू गाँधी जी व पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री राज्यस्तरीय शिक्षक समारोह के मनोहारी चित्रों से सुसज्जित व सुशोभित है। सम्पादक मण्डल बधाई व हार्दिक धन्यवाद के पात्र है। ऐसा सुन्दर अंक प्रेरणादायक लेखों से संकलित अंक सम्पादित करने हेतु धन्यवाद।

टेकचन्द्र शर्मा, झुंझुनूं

- शिविरा पत्रिका का अक्टूबर, 2019 का अंक इतने शानदार मुख्य पृष्ठ के साथ था कि कवर पृष्ठ के सृजन एवं कल्पना-प्रतिभा की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सका। राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह की सारी सूचनाएँ और चित्र माला के मोती के समान शोभायमान हो रहे हैं। गाँधीजी के विषय में सभी लेख शानदार रहे, विशेषकर डॉ. वेद प्रकाश रेडू जी का। 'जय जवान, जय किसान' का नारा देने वाले भूतपूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के बारे में मदन लाल मीणा ने अच्छे विचार व्यक्त किए। बाल शिविरा में सुरजीत प्रजापत की रचना 'किसान' की ये पंक्तियाँ बड़ी मार्मिक है।

उसकी मुस्कान खेतों की कलियों में बसती,
पर उसकी जिंदगी हमेशा, दुःखों में है कटती।।

राज्यभर से चुनिंदा विद्यालयों के प्रांगण में आयोजित गतिविधियाँ भी सारगर्भित जानकारी 'शाला प्रांगण' स्तंभ से मिली अच्छा लगा, अब सरकारी विद्यालय इस प्रतियोगी दुनिया में किसी से पीछे नहीं हैं। शिविरा पत्रिका के सम्पादक मण्डल व सदस्यों को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ।

रतन लाल पंवार, बीकानेर

- शिविरा मासिक पत्रिका का स्थाई स्तम्भ 'पाठकों की बात' में अपने विचार प्रकाशनार्थ हैं। माह अक्टूबर 2019 का अंक दो महापुरुषों के चित्र युक्त आकर्षक मुख पृष्ठ वाला प्राप्त हुआ। महात्मा गाँधी की 150वीं जयन्ती हम विभिन्न कार्यक्रमों के साथ मनाते हुए श्रद्धाजंली अर्पित कर रहे हैं। गाँधी जी के जीवन के दो आदर्श सत्य और अहिंसा के अनुशरण से विश्व शांति और मानव कल्याण सम्भव है। समय बोध मनुष्य की सफलता का मूल मंत्र है- ''बाल शिविरा'' स्तम्भ विद्यार्थियों को अपनी सृजनशीलता की अभिव्यक्ति के लिए सुअवसर प्रदान करने का मंच है और प्रेरणादायक है।

महेन्द्र कुमार शर्मा, नसीराबाद, अजमेर

सत्यमेव जयते

नथमल डिडेल
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

अपना विद्यालय : श्रेष्ठ विद्यालय

मैं आशा करता हूँ कि दीपोत्सव धूमधाम से मनाने और लम्बी अवकाश अवधि पश्चात सभी विद्यार्थियों और शिक्षकों में नई ऊर्जा का संचार हुआ होगा।

वर्तमान सत्र अपने उत्कर्ष पर है। यह समय अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। विद्यालयी वार्षिक परीक्षा, बोर्ड परीक्षा से पूर्व, अर्द्धवार्षिक परीक्षा मूल्यांकन का बड़ा आधार है। बोर्ड की परीक्षा इस बार फरवरी माह से आयोजित होनी है अत: समस्त संस्थाप्रधान अपने प्राध्यापकों एवं शिक्षकों को अधिकतम अतिरिक्त कक्षाएँ लगाने के लिए प्रेरित करें ताकि बोर्ड परीक्षाओं में मात्रात्मक और गुणात्मक वृद्धि हो।

पिछले कुछ समय से समाज, विद्यालय के प्रति अधिक संवेदनशील होकर सहयोगी की भूमिका निभा रहा है। अभिभावक और स्थानीय ग्रामीण अपना महत्त्वपूर्ण योगदान विद्यालय के विकास में दे रहे हैं। शिक्षा के प्रति समाज के इस दृष्टिकोण से लोगों में नया विश्वास और जागरूकता आ रही है। अभिभावक अपने बच्चों के भविष्य के प्रति अधिक सचेत हो रहे हैं, यह शुभ लक्षण है।

विद्यार्थी बहुआयामी प्रतिभा के धनी होते हैं। बालसभा में उनके सहभागित्व से उनकी अभिव्यक्ति को प्रभावी माध्यम मिलता है, अत: प्रत्येक शिक्षक को चाहिए कि वो अपने विद्यार्थियों को बाल सभा में अधिकतम भाग लेने के लिए प्रेरित करें।

राजकीय विद्यालयों के विकास कार्यों में स्थानीय सहयोग की भावना भी पिछले दिनों बलवती हुई है। मैंने देखा है कि सक्रिय संस्थाप्रधानों ने अपने राजकीय विद्यालयों की एसएमसी और एसडीएमसी में प्रस्ताव पारित करवाकर भामाशाहों के सहयोग से विद्यालय भवनों का कायाकल्प ही कर दिया है। मुझे आशा है कि इस तरह के रचनात्मक परिवर्तनों से अन्य संस्थाप्रधान भी प्रेरणा प्राप्त करेंगे। सभी अपना-अपना कर्त्तव्य पूरी निष्ठा और मनोयोग से करते रहें।

सभी के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना के साथ...

(नथमल डिडेल)

"वर्तमान सत्र अपने उत्कर्ष पर है। यह समय अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। विद्यालयी वार्षिक परीक्षा, बोर्ड परीक्षा से पूर्व, अर्द्धवार्षिक परीक्षा मूल्यांकन का बड़ा आधार है। बोर्ड की परीक्षा इस बार फरवरी माह से आयोजित होनी है अत: समस्त संस्थाप्रधान अपने प्राध्यापकों एवं शिक्षकों को अधिकतम अतिरिक्त कक्षाएँ लगाने के लिए प्रेरित करें ताकि बोर्ड परीक्षाओं में मात्रात्मक और गुणात्मक वृद्धि हो।"

गुरु नानक जयन्ती विशेष

इक बाबा अकाल रूप

❒ हरप्रीत सिंह कंग

भारत के अन्तिम हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज चौहान की पराजय के उपरान्त सल्तनत काल व मुगल काल के दौरान भारत पर शासन करने वाले विदेशी शासकों के शासनकाल में जबरन धर्म परिवर्तन, धार्मिक कट्टरता, अत्याचार, अन्याय व लूटपाट से आम जनता बहुत त्रस्त थी। साथ ही अशिक्षा के अन्धकार के कारण जातिप्रथा, ऊँच-नीच, बाल विवाह, सती प्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियों का बोलबाला था। देश की आम जनता विशेषकर महिलाएँ व निम्न वर्ग के लोग बहुत दुख में जीवन यापन कर रहे थे।

भाई गुरदास जी ने उस समय की राजनैतिक व सामाजिक परिस्थितियों का जिक्र इन शब्दों में किया है –

राजे पाप कमावदे उल्टी
वाड़ खेत कउ खाई।।
परजा अन्धी गिआन बिन
कूड़ कुसति मुखहु आलाई।।
काजी होये रिसवती वढी लै कै हक गवाई।।
वरतिया पाप समस जग माही।।30।।

(वार भाई गुरदास जी)

अर्थात्-राजा ऐसे पाप कर रहे हैं जैसे बाड़ खेत को खा रही हो। प्रजा ज्ञान के अभाव में अन्धी होकर, झूठ बोल-बोल कर अधर्म कर रही है। न्यायाधीश रिश्वत लेकर अन्याय का साथ दे रहे हैं। सारे जगत में पाप ही पाप हो रहे हैं।

चारों तरफ फैले इस अत्याचार, अन्याय व अधर्म के कारण लोग प्रतिदिन प्रभु चरणों में किसी ऐसे मार्गदर्शक को भेजने की प्रार्थना करते थे जो उनके कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सके। भाई गुरदास जी के अनुसार प्रभु ने प्रार्थना स्वीकार की व जगत के कल्याण हेतु श्री गुरु नानक देव जी को इस जगत में भेजा-

सुनी पुकार दातार प्रभु
गुरू नानक जग माहि पठाइया।।

(वार भाई गुरदास जी)

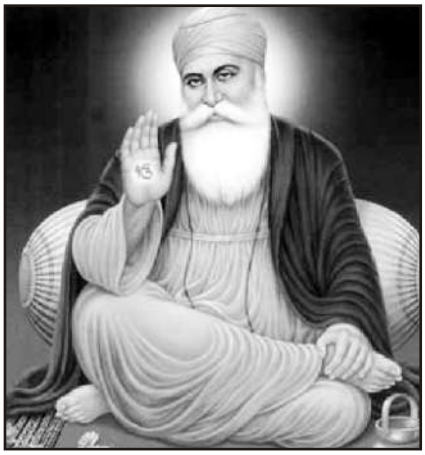

इस प्रकार आज से लगभग 550 वर्ष पहले 1469 ई. में पंजाब के एक छोटे से नगर राय भोये की तलवण्डी (वर्तमान ननकाणा साहिब, पाकिस्तान) में एक खत्री परिवार (बेदी वंश) में पिता मेहता कल्याण दास (मेहता कालू) व माता तृप्ता जी के गृह गुरु नानक देव जी का प्रकाश (जन्म) हुआ जिन्होंने सम्पूर्ण भारत के साथ-साथ दूर विदेशों तक पैदल यात्राएँ (उदासीया) करके अज्ञानता के अन्धकार को समाप्त कर ज्ञान के प्रकाश को फैलाया व प्रभु नाम के सिमरन का सन्देश अपनी वाणी के माध्यम से देकर लोगों को जाग्रत किया। भाई गुरदास जी ने उस समय का चित्रण इन शब्दों से किया है-

सतिगुरु नानक प्रगटिआ।
मिटी धुंध जग चानण होआ।
जिउ करि सूरज निकलिआ।
तारे छपि अंधेरे पलोआ।

(वार भाई गुरदास जी)

बाल्यकाल से ही गुरु नानक जी चामत्कारिक व्यक्तित्व के धनी थे। बाल्यकाल में अन्य बालकों के विपरीत उनके खेल बहुत अनोखे थे। वे बालकों का मार्गदर्शन करते हुए उन्हें समानता, प्रेम सत्य व बहादुरी का पाठ पढ़ाते रहते थे। वे अपने घर से लाई हुई खाने पीने की वस्तुएँ बालकों के साथ मिल-बाँट कर खाते व उन्हें भी बाँट कर खाने को कहते। वे एक स्थान पर बैठकर बालकों की मण्डली बनाकर ज्ञान गोष्ठियाँ करते व बालकों को बाल्यावस्था में ही प्रभु नाम का सिमरण करने की सीख देते हुए कहते-

पहिलै पहरै रणि कै वणजारिआ
मित्रा बालक बुधि अचेत।।
खीर पीअै खेलाइए वणजारिया
मित्रा पिता सुत हेत।।
राम नाम बिन मुक्ति न
होइ बूढी दूजै हेत।।
कहु नानक प्राणी पहिलै
पहरै छुटहिमा हरि चेत।।1।।

(गु.ग्रा.सा.अंग-75)

अर्थात् - जीवन रूपी रात्री के पहले भाग (बाल्यावस्था) में बाल बुद्धि होती है, बालक दूध पीता है, माता-पिता लाड़ लड़ाते हैं। प्रभु नाम के बिना मुक्ति नहीं होती लेकिन दुनिया मोह माया में डूबी रहती है। नानक कहते हैं कि बाल्यावस्था से ही प्रभु नाम का सिमरण प्रारम्भ करने से मुक्ति पाई जा सकती है।

जब गुरु जी किशोरावस्था में पहुँचे तब एक बार वे कई माह तक मौन रहे। वे एकान्त में बैठकर प्रभु भक्ति करते रहते या साधु सन्तों की सेवा में लगे रहते। घरेलू कार्यों में उनका जरा भी ध्यान न लगता। उनकी यह स्थिति देख पिता मेहता कालू चिन्ता में सोचने लगे कि कहीं मेरा पुत्र संन्यासी न बन जाए जरूर इसे कोई मानसिक रोग लग गया है। उन्होंने गुरु जी के इलाज हेतु वैद्य हरिदास को बुलवाया। वैद्य गुरु जी की बाँह पकड़ नब्ज टटोल कर रोग का पता लगाने की कोशिश करने लगा। गुरु जी ने इस घटना के बारे में इस तरह लिखा है -

वैद बुलाइया वैदगी पकड़ि ढंढोले बांह।।
भोला वैद न जाणई करक कलेजे मांहि।।

(गु.ग्रा.सा.अंग-1279)

अर्थात् - वैद्य बुलाया गया जो मेरी बांह पकड़ कर रोग का पता लगाने लगा। लेकिन

अनजान वैद्य यह नहीं जानता कि (प्रभु के बिछोड़े का) दर्द तो मेरे दिल में है।

गुरु जी वैद्य को प्रभु से बिछोड़े के अपने दर्द का इलाज व अपनी इस दशा का कारण बताते हुए समझाते है –

जीऊ डरत है आपणा कै सिउ करी पुकार।।
दुख विसारण सेविआ सदा सदा दातार।।1।।

(गु.ग्रा.सा.अंग–660)

अर्थात् – यह जगत दुःखों का समन्दर है जिसे देख कर मेरी रूह काँपती है, प्रभु के बिना और कोई बचाने वाला दिखाई नहीं देता जिसके पास जाकर मैं मिन्नत करूँ। इसलिए अन्य सभी सहारे छोड़ कर वे अपने दिल के दर्द के इलाज हेतु (प्रभु मिलाप हेतु) मैं प्रभु नाम का सिमरण करता हूँ।

जब गुरु जी युवावस्था में पहुँचे तब पिता मेहता कालू ने उन्हें खेती बाड़ी या किसी व्यापार के कार्य में लगाने की बहुत कोशिशें की लेकिन गुरु जी का मन तो हमेशा दीन दुखियों की सेवा व प्रभु भक्ति मे लगा रहता था। तब पिता मेहता कालू ने गुरु जी को उनकी बहन नानकी व बहनोई जयराम के पास सुल्तानपुर लोधी (पंजाब) भेज दिया। बहन नानकी गुरु जी से पाँच वर्ष बड़ी थी अपने छोटे भाई के लालन–पालन में उनका बहुत योगदान था। बहन नानकी ने ही सबसे पहले गुरुजी की शख्सियत को पहचाना था। वह अपने भाई नानक को भगवान (अकाल) का रूप समझती थी। भाई गुरुदास जी ने अपनी रचनाओं में इस पुष्टि करते हुए लिखा है –

इक बाबा अकाल रूप
दूजा रवाबी मरदाना।
नानक कलि पिच आइया,
रब फकीर इको पहिचान।।
धरति आकास चहुं दिस जाना।।

(वार भाई गुरदास जी)

गुरु जी के बहनोई जयराम जी ने गुरुजी को वहाँ के नवाब दौलत खाँ लोधी के मोदी खाने (अनाज के भण्डार) में मोदी (अनाज का तौल कर लेनदेन करने वाला) की नौकरी पर लगवा दिया।

गुरु जी पूरी मेहनत व ईमानदारी से अपना कार्य करते व खाली समय में प्रभु भक्ति में लीन हो जाते। गुरु जी अनाज के रूप में मिलने वाला अपना रोज का हिस्सा भी जरूरतमन्दों में बाँट देते थे। तराजू में अनाज तौलते समय जब बारह के बाद तेरह की गिनती आती तो गुरु जी प्रभु की मस्ती में गाने लगते, तेरा... तेरा... तेरा...तेरा तेरा भाव है निरंकार मैं तेरा हूँ।''

ईर्ष्यालु लोगों ने नवाब के पास गुरुजी के विरूद्ध शिकायतें करनी शुरू कर दी कि गुरु नानक तो मोदी खाने का अनाज मुफ्त में लोगों को लूटा रहा है। लेकिन जब नवाब ने आकर जाँच पड़ताल की तो मोदी खाने का सारा हिसाब किताब सही निकला तब नवाब बहुत प्रसन्न हुआ। ईर्ष्यालु लोगों के मुँह बन्द हो गए व गुरु जी की सारे नगर में प्रशंसा होने लगी।

इसी दौरान गुरु जी का विवाह बटाला निवासी मूलचन्द की सुपुत्री सुलखणी जी से हो गया। गुरु जी के दो पुत्र हुए श्री चन्द जी व लखमीदास जी।

सुल्तानपुर लोदी में गुरु जी चौदह वर्ष से अधिक समय तक रहे व प्रतिदिन प्रातःकाल जल्दी उठकर नगर के पास बहने वाली वेई नदी में स्नान करते व नदी के किनारे बैठ घण्टों तक प्रभु भक्ति में लीन हो जाते, दिन में मोदी खाना सम्भालते व शाम के समय सत्संग करते। भाई मरदाना रवाब बजाते, गुरु जी कीर्तन करते व सत्संग में आने वाले मेहनतकश किसानों व व्यापारियों को अपनी जीविका कमाने के साथ–साथ अपना जीवन शुद्ध करने हेतु इस तरह प्रेरित करते–

मन हाली किरसाणी करणी
सरम पाणी तन खेत।।
नाम बीज संतोख सुहागा रख गरीबी वेस।।
भउ करम करि जमंसी से घर भागठ देख।।

(गु.ग्रा.सा.अंग–595)

अर्थात् – अपने तन को खेत बनाकर, मन के हल से खेती (साधना) करनी चाहिए, उसे श्रम के पानी से सींचना चाहिए। प्रभु नाम का बीज चाहिए व संतोष का सुहागा फिराकर मन में नम्रता धारणा करते हुए प्रेम की फसल उगानी चाहिए। प्रभु कृपा से ऐसे तन में प्रेम का बीज पैदा हो जाएगा व तेरा यह शरीर भाग्यशाली हो जाएगा।

हाण हट कर आरजा सच नाम कर वथ।।
सुरति सोच कर भांडसाल तिस विच तिस नो रख।।
वणजारिया सिउ वणज कर लै लाहा मन हस।।

(गु.ग्रा.सा.अग–595)

अर्थात्–हमेशा घटती जा रही अपनी आयु को दुकान, प्रभु नाम का सौदा व अपनी समझ व सोच को माल गोदाम बना ले। इस माल गोदाम में प्रभु के सच्चे नाम को टिका ले। प्रभु नाम के व्यापारियों से व्यापार कर, इस तरह के व्यापार से जो लाभ मिलेगा उससे अपने आप को खुश रख।

गुरु जी उस समय चारों तरफ हो रहे अत्याचार, अन्याय, अन्धविश्वास व सामाजिक कुरीतियों को देखकर चिन्तित थे व विभिन्न धर्मों के धर्मप्रचारकों से मिलकर धर्म प्रचार का उचित मार्ग बताना चाहते थे। उस समय तीन प्रकार के धार्मिक स्थल प्रसिद्ध थे, हिन्दू तीर्थ स्थल, योगियों के मठ व इस्लाम धर्म के केन्द्रीय स्थान। गुरु जी ने इन स्थानों पर मनाए जाने वाले पर्वों पर एकत्र होने वाले लोगों व धर्म प्रचारकों से मिलकर अपनी बात उन तक पहुँचाने का निर्णय लिया। गुरु जी उदासी बाणा पहनकर, भाई मरदाना को साथ लेकर सुल्तानपुर लोधी से पैदल ही लम्बी यात्राओं के लिए चल पड़े (उदासी का मतलब न तो फकीर बने न संन्यासी केवल गृहस्थ के विपरीत उदासी की रीत प्रारम्भ की) भाई गुरदास जी इस बारे में लिखते हैं –

बाबा देखै ध्यान धर जलती सभ पृथ्व दिस आई।
बाबे भेख बनाइया उदासी की रीत चलाई।
चड़िया सोधन धरत लुकाई।।

(वार भाई गुरदास जी)

अपनी पूर्व योजनानुसार उन्होंने सूर्यग्रहण पर कुरुक्षेत्र, कुम्भ मेले पर हरिद्वार, दीपावली पर अयोध्या, मकर सक्रान्ती पर इलाहाबाद, शिवरात्रि पर बनारस, वैशाख सक्रान्ति पर गया, दुर्गापूजा पर कलकत्ता, रथयात्रा के समय जगन्नाथपुरी, होली पर नाथद्वारा, उर्स पर अजमेर, हज यात्रा के समय मक्का मदीना व अन्य अनेक स्थानों पर मनाए जाने वाले पर्वों पर लगने वाले मेलों पर पहुँचकर वहाँ एकत्र हुए श्रद्धालुओं, धर्म प्रचारकों व सिद्ध योगियों का अहंकार व अन्धविश्वास त्यागने तथा अच्छे कर्म करने का सन्देश अपनी वाणी के माध्यम से दिया व उनकी शंकाओं का समाधान भी किया।

इस तरह अगले 20 से भी ज्यादा वर्षों तक उन्होंने सम्पूर्ण भारत के साथ–साथ श्रीलंका, चीन, लद्दाख, नेपाल, तिब्बत, बांग्लादेश, अफगानिस्तान, ईरान, ईराक व मिश्र आदि देशों तक पैदल यात्राएँ की।

गुरुजी जहाँ भी गए उन्होंने बड़े नाटकीय व अनोखे तरीके से उपदेश दिए व अपने मनोरथ में सफलता भी प्राप्त की। गुरु जी ने अपने विचार व उपदेश लोगों पर जबरदस्ती नहीं थोपे वरन् इस तरीक से पेश किए की आम लोग उनको अपनाने के लिए सहज ही तैयार हो जाते थे।

गोरखमत्ते के योगियों का असली योगी के लक्षण बताते हुए समझाया कि योग केवल भेष बदलने से नहीं होता वरन् दोष रहित भी रहना पड़ता है व असली योगी की निशानी बताई–

अंजन माहि निरंजनि रहीऐ
जोग जुगति ईव पाइऐ।।1।।
ऐक दृसटि कर समसरि जाणै
जोगी कहिऐ सोई।।1।। रहाउ

(गु.ग्रा.सा.अंग–730)

अर्थात् – प्रभु से मिलने का ढंग सिर्फ यह है कि माया के मोह की कालिख में रहते हुए माया से निरलेप प्रभु से जुड़े रहें, सिर्फ बातें करने से प्रभु मिलाप नहीं होता। वही मनुष्य योगी कहलवा सकता है जो एक जैसी निगाह से ही सब को बराबर समझें।

ऐमनाबाद (पाकिस्तान) में उन्होंने उच्च वर्ग के अमीर मालिक भागो के पकवानों के स्थान पर निम्न वर्ग के भाई लालो के रूखे–सुखे भोजन को ग्रहण करके ऊँच नीच का त्याग करने व गरीबों का साथ देने का सन्देश देते हुए फरमाया –

नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीच।।
नानक तिन के सांगि वडिआ सिउ किया रीस।।

(गु.ग्रा.सा.अंग–15)

गुरु जी ने सती प्रथा की निन्दा करते हुए स्त्री जाति को समाज में समानता का दर्जा दिलाने के लिए फरमान किया कि राजाओं व सूरमाओं को जन्म देने वाली स्त्री जाति को बुरा नहीं कहना चाहिए।

सो किउ मंदा आखीऐ जित जंमहि राजान।

(गु.ग्रा.सा.अंग–473)

देश–विदेश की प्रचार यात्राओं के उपरान्त गुरु जी लगभग 18 वर्ष करतारपुर (पाकिस्तान) में आकर रहे यहाँ रहकर आपने लोगों को मेहनतकश बनने की सीख देने हेतु अपने हाथों से मेहनत कर खेती बाड़ी का कार्य किया। यहाँ एक धर्मशाला स्थापित कर मानव कल्याण व समाज सुधार के अपने मिशन को जारी रखा। उन्होंने उस समय प्रचलित धारणाओं के विपरीत गृहस्थ जीवन में रहते हुए ईश्वर प्राप्ति व शान्तमय जीवन व्यतीत करने का सीधा व सरल मार्ग बताया। इस मार्ग पर चलने के लिए उन्होंने मनुष्य को तीन नियमों नाम जपो, किरत करो, वंड छको अर्थात अपने जीवन में प्रभु नाम का सिमरण करने, मेहनत व ईमानदारी से अपने कर्त्तव्यों का पालन करने व दान पुण्य करते हुए मिल–बाँट कर उपयोग करने का उपदेश दिया।

गुरुनानक देव जी ने जपुजी, पट्टी, सिद्ध गोसटि, अलाहणियाँ, आसा दी वार व वार मलार आदि बाणियों की रचना की व देश विदेश की यात्राओं के दौरान विभिन्न सन्तों महापुरुषों की रचनाओं को एकत्र कर एक पोथी में संग्रहित किया। इन सभी रचनाओं की पोथी व गुरु गुद्दी अपने शिष्य लहणा जी (गुरु अंगद देव जी) को सौंप कर 1539 ई. में करतारपुर में ज्योति ज्योत समा गए। तब वहाँ उपस्थित गुरु जी के शिष्यों ने नम आँखों से गुरु जी द्वारा बताए गए इन शब्दों का उच्चारण किया –

जिनी नाम धियाइया गए मसकति घालि।
नानक ते मुख ऊजले केती छुटी नालि।।

(गु.ग्रा.सा.अंग–8)

अर्थात् – हे नानक जिन लोगों ने प्रभु नाम का सिमरण किया व जीवन में मेहनत सफल कर गए है उनके चेहरे रोशन होंगे व अनेक जीव भी उनके साथ–साथ मुक्ति को प्राप्त कर लेंगे।

1604 ई. में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का सम्पादन करते समय सिख धर्म के पाँचवें गुरु श्री गुरु अर्जन देव जी ने श्री गुरु नानक देव जी द्वारा रचित 974 श्लोकों (19 रागों में) को शामिल किया व गुरु नानक देव जी की वन्दना करते हुए शब्द उच्चारण किए कि मुझ मूर्ख का क्या कहना, जिन लोगों ने भी गुरु नानक देव जी के उपदेशों को सुना व माना वे जन्म मरण के चक्र से मुक्त हो गए –

मैं मूर्ख की केतक बात है
कोटि पराधी तरिआ रे।।
गुर नानक जिन सुणिआ पेखिआ
से फिरि गरभासि न परिआ रे।।

(गु.ग्रा.सा.अंग–612)

व्याख्याता (वाणिज्य)
शहदी कैप्टन नवपाल सिंह सिद्धू
रा.उ.मा.वि., पदमपुर, श्रीगंगानगर (राज.)

राष्ट्रीय शिक्षा दिवस विशेष

यह अधिकार हमारा है

❐ सुरेन्द्र कुमार चेजारा

शिक्षा से फैले उजियारा,
यह अधिकार हमारा है।
अज्ञानी बनकर मानव को,
जीना नहीं गवारा है।
पहले शिक्षा–मंत्री हमारे,
मौलाना हैं अबुल कलाम।
अच्छे काम किये थे जिससे,
देश उन्हें करता है सलाम।
आज उन्ही का जन्म दिवस है,
शिक्षा दिवस हमारा है।
शिक्षा से फैले.....
शिक्षा तम को दूर भगाती,
घट में ज्ञान की ज्योति जलाती।
शिक्षा से हो सबका नाता,
शिक्षा सबकी भाग्य–विधाता।
पढ़ा लिखा मानव हो तब ही,
लगता सबको प्यारा है।
शिक्षा से फैले.....
शिक्षा का स्वरूप हो ऐसा,
लगे सभी को मनभावन।
अच्छी शिक्षा से ही सबका,
जीवन बनता है पावन।
प्रारंभिक सुशिक्षा ही,
जीवन आधार हमारा है।
शिक्षा से फैले.....
शिक्षा से सब फूले–फले,
न्याय–नीति के मार्ग चलें।
भेदभाव को दूर भगाकर,
आपस में सब गले मिलें।
शिक्षा से सद्भाव जमाना,
यह सत्कर्म हमारा है।
शिक्षा से फैले.....
सरकारी स्कूलों में अब,
अच्छी शिक्षा मिलती है।
मुफ्त में शिक्षा मुफ्त में भोजन,
मुफ्त पुस्तकें मिलती हैं।
समग्र शिक्षा अभियान चला है,
यह उपकार हमारा है।
शिक्षा से फैले.....
चेजारा सबके हित की,
इक बात बताता ज्ञान की।
मान बढ़ायें, शिक्षा पायें,
आन–मान–सम्मान की।
आज हमारा भारत प्यारा,
जग में सबसे न्यारा है।
शिक्षा से फैले उजियारा,
यह अधिकार हमारा है।
अज्ञानी बनकर मानव को,
जीना नहीं गवारा है।

व्याख्याता, रा.उ.मा.वि., होल्याकाबास,
श्रीमाधोपुर (सीकर) **मो. 9461044090**

गाँधी 150वीं जयन्ती विशेष

शिक्षा विचारक महात्मा गाँधी

❒ सन्तोष कुमारी

मोहनदास करमचन्द गाँधी शिक्षा के महान पुजारी थे। एक शिक्षा विचारक के रूप में उनके विचार आज के आधुनिक युग में भी प्रासंगिक है। गाँधीजी पुस्तकें पढ़ने के लिए सदैव तैयार रहते थे। अनेक ऐसी पुस्तकें और महापुरुष हैं, जिनका प्रभाव महात्मा गाँधी के जीवन पर पड़ा। इन पुस्तकों तथा महापुरुषों के कारण ही गाँधीजी के दार्शनिक विचारों का निर्माण हुआ। बाल्यकाल में गाँधीजी के विचारों पर रामायण, भागवत, वैष्णव सन्तों तथा जैन संतों आदि का भी अत्यधिक प्रभाव पड़ा था। हिन्दू धर्म ग्रंथों में उन पर सर्वाधिक प्रभाव भगवद्गीता का पड़ा। इस सम्बन्ध में उन्होंने एक स्थान पर लिखा है कि वे कठिनाइयों के समय इसी महान ग्रंथ से प्रेरणा तथा मनोबल प्राप्त करते रहते थे। भगवद्गीता के अतिरिक्त वे भागवत तथा नर्मदा शंकर की पुस्तक धर्म विचार से भी अत्यधिक प्रभावित थे। महात्मा गाँधी के विचारों तथा उनके व्यक्तित्व पर मैक्समूलर, वॉशिंगटन, इरविन, रस्किन, कार्लाइल, एनी बेसेन्ट, महावीर, ईसा, मुहम्मद आदि का भी काफी प्रभाव पड़ा था। हालांकि महात्मा गाँधी परम्परागत अर्थों में दार्शनिक नहीं थे किन्तु उन्होंने दर्शन की सभी समस्याओं पर गम्भीर विचार किया था। महात्मा गाँधी ने अपने दार्शनिक विचारों को यथार्थ जगत में मूर्त रूप देने का प्रयास किया था। वास्तव में उनका दर्शन, व्यावहारिक दर्शन है। समकालीन भारतीय शिक्षा-दार्शनिकों में महात्मा गाँधी के शिक्षा सम्बन्धी विचारों का उनके जीवनकाल में जितना अधिक प्रचार हुआ, उतना अधिक प्रचार किसी भी अन्य समकालीन भारतीय शिक्षा-दार्शनिक के विचारों का नहीं हुआ।

वर्तमान गुजरात प्रदेश के पोरबन्दर नामक स्थान पर 2 अक्टूबर, 1869 को एक वैष्णव धर्मावलम्बी, सम्पन्न एवं सम्मानित परिवार में इनका जन्म हुआ था। इनका वास्तविक नाम मोहनदास करमचन्द गाँधी था। इनके पिता करमचन्द गाँधी पोरबन्दर राज्य के दीवान थे और बड़े धार्मिक एवं सात्विक स्वभाव के व्यक्ति थे।

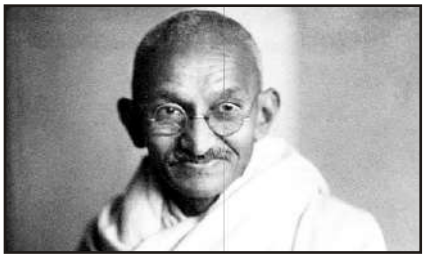

इनकी माता श्रीमती पुतलीबाई भी बड़ी धार्मिक एवं सात्विक स्वभाव की महिला थी। गाँधीजी पर अपने इस पारिवारिक पर्यावरण का बड़ा प्रभाव पड़ा।

यह कहना बिल्कुल उपयुक्त होगा कि राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी मात्र राजनैतिक अगुवा ही नहीं थे अपितु एक बहुत बड़े धर्म मर्मज्ञ एवं समाज सुधारक भी थे। इन्होंने अपने समय की पुस्तकीय, सैद्धांतिक, संकुचित और परीक्षा प्रधान शिक्षा में सुधार के लिए भी कई महत्त्वपूर्ण सुझाव दिए थे। शिक्षा जगत में ये शिक्षाशास्त्री के रूप में सम्मानित है। महात्मा गाँधी के शैक्षणिक विचार आज भी पूर्णतः प्रासंगिक है।

गाँधीजी शिक्षा को व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार मानते थे और मनुष्य की किसी भी तरह की भौतिक या आध्यात्मिक विकास के लिए इसे उतना ही आवश्यक मानते थे जितना कि बच्चे के शारीरिक उन्नति के लिए माँ का दूध। यही कारण है कि इन्होंने एक निश्चित आयु तक के बच्चों के लिए सामान्य शिक्षा की व्यवस्था अनिवार्य रूप से करने पर जोर दिया और उसे निःशुल्क करने की बात कही। गाँधीजी, शिक्षा द्वारा मनुष्य को आत्मनिर्भर बनाना चाहते थे उसे अपनी रोजी-रोटी कमाने योग्य बनाना चाहते थे, इसलिए इन्होंने हस्तकौशलों की शिक्षा पर विशेष जोर दिया। साथ ही ये मनुष्य की आत्मिक उन्नति भी करना चाहते थे, इसलिए इन्होंने शिक्षा के माध्यम से मानव को एकादश व्रत (सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्वाद, अस्तेय, अपरिग्रह, अभय, अस्पृश्यता निवारण, कायिक श्रम, सर्वधर्म समभाव और विनम्रता) पालन की ओर प्रवृत्त करने पर जोर दिया। गाँधीजी केवल साक्षरता को शिक्षा नहीं मानते थे। इनके अपने शब्दों में 'साक्षरता न तो शिक्षा का अन्त है और न प्रारम्भ। यह केवल एक साधन है जिसके द्वारा पुरुष और स्त्रियों को शिक्षित किया जा सकता है। गाँधीजी मनुष्य को शरीर, मन, हृदय और आत्मा का योग मानते थे। उनका विचार था कि शिक्षा ऐसी हो जो कि मानव के शरीर मन, हृदय और आत्मा की उन्नति करे। उनके अपने शब्दों में-'शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक और मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा के उच्चतम विकास से है।' साक्षरता को वास्तव में गाँधीजी ने ही सही अर्थों में समझा था।

गाँधीजी के विचार से मनुष्य जीवन का अन्तिम ध्येय मोक्ष है। मुक्ति को इन्होंने बड़े विस्तृत अर्थ में लिया है। वे प्रथम शारीरिक, मानसिक, आर्थिक और राजनैतिक मुक्ति की बात करते थे और फिर आत्मिक मुक्ति की। उनका तर्क था कि जब तक मनुष्य को शारीरिक दुर्बलता, मानसिक तनाव, आर्थिक अभाव और राजनीतिक दासता से मुक्ति नहीं मिलती तब तक वह आध्यात्मिक मुक्ति की प्राप्ति नहीं कर सकता। यही कारण है कि वे शिक्षा द्वारा मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा की श्रेष्ठ उन्नति करना चाहते थे।

शिक्षा और उसके उद्देश्य की पूर्ति के लिए गाँधीजी मनुष्य में शारीरिक विकास, मानसिक एवं बौद्धिक विकास, सामाजिक विकास तथा सांस्कृतिक विकास, नैतिक एवं चारित्रिक विकास व औद्योगिक विकास और आध्यात्मिक विकास जैसे महत्त्वपूर्ण घटकों को आवश्यक मानते थे अर्थात् गाँधीजी का मानना था कि मनुष्य जीवन के ध्येय की प्राप्ति इस शरीर द्वारा ही होती है। अतः शिक्षा पद्धति में शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास के लिए चिन्तन एवं व्यावहारिक पक्ष अवश्य होना चाहिए।

गाँधीजी का मानना था कि वैयष्टिक विकास का श्रेष्ठ रूप आत्मिक उन्नति है और आत्मिक उन्नति के लिए मनुष्य का सामाजिक

विकास आवश्यक है। सामाजिक विकास से अभिप्राय गाँधीजी का आशय मनुष्य को समाज में प्रेम और सहयोग के साथ मिल-जुलकर रहना-सिखाने से था। उनका अटूट विश्वास था कि मानव मात्र से प्रेम करने से और उनकी सेवा करने से ही आत्मिक उन्नति संभव है।

इसी प्रकार महात्मा गाँधी सांस्कृतिक, नैतिक एवं चारित्रिक विकास पर जोर देते हुए विद्या के मंदिर विद्यालयों को चरित्र निर्माण की उद्योगशाला मानते हैं। उनका मानना है कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए, जिससे बालकों में अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्तेय, अपरिग्रह एवं निर्भयता जैसे उत्तम चारित्रिक गुणों का स्वाभाविक विकास हो।

विवेचना में यह स्पष्ट करना उपयुक्त होगा कि गाँधीजी देश की आधारभूत आवश्यकताओं के प्रति बहुत सजग थे। इन्होंने इन आवश्यकताओं की पूर्ति सुन्दर समाज के निर्माण के लिए क्रिया प्रधान शिक्षण सामग्री पर जोर दिया। महात्मा गाँधी ने अपने द्वारा प्रस्तावित बुनियादी शिक्षा (कक्षा 01 से 08 तक) के लिए क्रिया प्रधान शिक्षण सामग्री को निर्मित किया और उसमें सर्वप्रथम हस्त कौशल एवं उद्योगों, कताई, बुनाई, बागवानी, कृषि, काष्ठकला, पुस्तककला-जिल्दबन्दी, मिट्टी का काम, गृह विज्ञान आदि को और द्वितीय स्थान पर मातृभाषा के माध्यम द्वारा शिक्षा प्राप्त करने पर बल दिया। इसके साथ ही ये व्यावहारिक गणित (अंकगणित, बीज गणित, वैदिक गणित) तथा भौतिक, रसायन, प्राणी विज्ञान और सामान्य विज्ञान तथा नागरिक शास्त्र एवं संगीत, चित्रकला तथा सफाई एवं व्यायाम व खेलकूद जैसे विषयों का समावेश प्रारम्भ से ही शिक्षा में आवश्यक मानते थे।

वास्तव में गाँधीजी एक अद्भुत शिक्षा विचारक थे। उनका शैक्षिक दर्शन उच्च है। गाँधीजी शिक्षण प्रणालियों को स्वाभाविक रूप से प्रयोग करने पर जोर देते थे। वे शिक्षण प्रणाली में अनुकरण, क्रिया, मौखिक तथा श्रवण-मनन-निदिध्यासन जैसे तत्वों द्वारा उत्तम शिक्षण के मार्ग को पुष्ट करते थे। एतदर्थ गाँधीजी का मानना था कि अनुकरण करना बच्चों की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है, बच्चे प्रारम्भ में अनुकरण द्वारा ही सीख ग्रहण करते हैं। सदाचरण की नींव शिशुकाल में रखी जानी चाहिए ताकि बच्चे के विकास के साथ-साथ अच्छे संस्कार स्थायी रूप ले सकें। अतः उनके अनुसार अनुकरण एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। इसी प्रकार क्रिया-प्रणाली को इंगित करते हुए गाँधीजी का कहना था कि बच्चों में कुछ न कुछ करते रहने की आदत होती है, उनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है कि वे हर समय कुछ न कुछ करते रहते है। अतः उनको कला-कौशल की शिक्षा इस समय दी जानी चाहिए। मौखिक प्रणाली के अन्तर्गत गाँधीजी के अनुसार बच्चों से प्रश्नोत्तर, अन्त्याक्षरी, वाद-विवाद आदि के माध्यम से शिक्षा दी जाकर उनका स्वाभाविक रूप से शैक्षिक विकास किया जा सकता है।

उल्लेख करना उपयुक्त होगा कि श्रवण-मनन-निदिध्यासन भारत की प्राचीन वैदिक अध्ययन प्रणाली रही हैं। श्रुति परम्परा में विद्यार्थी गुरु के मुख से सुना करते थे फिर उस पर चिन्तन और अन्त में उसका अभ्यास करते थे। वस्तु ज्ञान का तब तक कोई अर्थ नहीं जब तक वह हमारे व्यावहारिक जीवन का अंग बनकर हमारी उन्नति में सहायक नहीं होता। महान् विचारक गाँधीजी ने धर्म और दर्शन जैसे नैतिक विषयों के ज्ञान के लिए शिक्षा की इस प्रणाली की उपयोगिता स्वीकार की है, किन्तु कुछ परिवर्तन के साथ। उनके अनुसार जब बच्चे किशोर हो जाए तो सत्संग करे, खूब स्वाध्याय करे, उपदेश सुने, चिन्तन करे, बुद्धि और विवेक से सत्य का अन्वेषण करें और जो-जो सत्य हो उसको आत्मसात करते हुए व्यावहारिक जीवन में नित्यप्रयोग करें। यह प्रणाली उच्च शिक्षा वर्ग के विद्यार्थियों के लिए व्यक्तित्व निर्माण में अधिक उपयोगी है।

निष्कर्षतः महात्मा गाँधी शिक्षा के ऐसे अद्भुत विचारक थे जिन्होंने भारतीय शिक्षा को भारतीय बनाने का नारा बुलन्द किया। उन्होंने शिक्षा के लगभग सभी पक्षों की दार्शनिक व्याख्या की है। समकालीन भारतीय शिक्षा दार्शनिकों में उनके विचार आज के आधुनिक युग में भी अत्यंत प्रासंगिक हैं।

वरिष्ठ पुस्तकालयाध्यक्ष
राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय,
सादुलशहर, श्रीगंगानगर (राज.)
मो: 9928323578

बेशकीमती समय

जिन दिनों गाँधीजी नोआखाली प्रवास पर थे, तब उनकी एक गाँव से दूसरे गाँव की यात्रा प्रतिदिन सवेरे सात बजे आरंभ हो जाती थी। यदि किसी कारणवश दो मिनट की भी देर हो जाती थी तो उन्हें बहुत बुरा लगता था। एक दिन गाँव वाले और कीर्तनवाले सभी लोग आ चुके थे। गाँधीजी की पौत्री मनु उनके साथ-साथ रहती थी। गाँधीजी को उसी के साथ जाना था, लेकिन अभी तक उसका सामान नहीं बँध पाया था। अकसर कई चीजें ऐसी होती थी, जो गाँधीजी को उठने के बाद ही बाँधी जाती थीं। उन्हें पूरा सामान यथास्थान रखने में पाँच मिनट लग गए। समय निकलते देखकर गाँधीजी को बेचैनी होने लगी। वे मनु से बोले, 'देखा, बाहर कब के लोग आकर खड़े हुए हैं और तुम्हें अभी भी निकलने में देर है। समय की कीमत को समझो। बाहर लगभग पाँच सौ आदमी एकत्र हैं। तुमने पाँच मिनट व्यर्थ करके उन पाँच सौ आदमियों के पाँच-पाँच मिनट चुरा लिए हैं। यह कैसे चल सकता है? मुझसे यह देखा नहीं जा रहा। मैं तो जा रहा हूँ। तुम पीछे से आती रहना।' इसके बाद वे बाहर निकलने को हुए कि सहसा पीछे मुड़े और मनु से बोले, 'आज मैं देर होने के कारण तुम्हें छोड़कर पहले जा रहा हूँ, इससे यह न समझ बैठना कि अगर इस तरह रोज देर की तो तुम हमेशा पीछे से आ सकोगी। इस खयाल से तुम पीछे रह सकती हो कि मैं बूढ़ा हूँ और तुम बच्ची हो, दौड़कर मुझे पकड़ लोगी, मगर यह गुनाह है। इसलिए हमेशा नियमित रहना चाहिए और बेशकीमती समय की कद्र करनी चाहिए। सब काम समय पर ही होने चाहिए। यदि किसी को मिलने के लिए सात बजे का समय दिया गया है तो सात के बाद दो सेकंड होना भी गलत है। आशा है कि आगे से तुम इस बात को समझोगी।' यह कहकर गाँधीजी बाहर निकल गए और मनु खड़ी देखती रही।

संकलन प्रस्तुति: अशोक कुमार व्यास,
सहायक प्रशासनिक अधिकारी, बजट अनुभाग,
माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, बीकानेर

गाँधी 150वीं जयन्ती विशेष

गाँधी : कल, आज और कल

❒ रामकिशन कुमावत 'श्याम'

सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे संतु निरामया सर्वेभद्राणिपश्यन्तु, माकश्चिददुःखभागभवेत्।

गाँधीजी सत्य, अहिंसा, प्रेम व भ्रातृभाव के पुजारी थे तथा इनकी व्याख्या कर, अनुभव में लाकर, प्रसारित करके वे इस विश्व जगत को सुखी, स्वस्थ और संतुष्ट बनाना चाहते थे। गाँधीजी उस चली आ रही परिपाटी को तोड़ते थे जो विश्वास करती थी कि ईंट का जवाब पत्थर से दिया जाना चाहिए। वरन् गाँधीजी तो कहते थे कि 'शठ प्रत्यपि सत्यम्' यानि दुष्टों के साथ भी प्रेमपूर्ण आचरण करना चाहिए।

वो उदीयमान भारतीय लोकतंत्र की प्रत्यूष वेला में उपस्थित वो सितारा था जिसने भारतवर्ष रूपी नवोदित सूर्य को सत्य, अहिंसा, प्रेम व साधनों की पवित्रता का चिरस्थायी प्रकाश व पाथेय प्रदान किया। बी.पी. सीतारमैया के शब्दों में ''गाँधीवाद सिद्धातों का, मतों का, नियमों का, विनियमों का और आदेशों का समूह नहीं वरन् वह जीवन शैली या जीवन दर्शन है। यह एक नई दिशा की और संकेत करता है तथा मनुष्य के जीवन तथा समस्याओं के लिए प्राचीन समाधान प्रस्तुत करता है।'' वस्तुत: गाँधीजी अपने पीछे किसी भी प्रकार का वाद नहीं छोड़ना चाहते थे। उनका तरीका प्रयोगात्मक अनुभववादी था। उनका जीवन पवित्र विचारों से ओतप्रोत था। वे जब बोलते थे तो ऐसा कतई नहीं लगता था, कि कोई भाषण दे रहा है और न ही सुनने वालों का खून खौलता था। बल्कि उनके विचार तो रक्तशोधक व पूरक थे जो सुनने वालों के रक्त परिसंचरण में लेश मात्र भी मौजूद हिंसा, घृणा, असत्य जैसे विचारों का शोधन करके जन गण के मन मस्तिष्क को सत्य, अहिंसा व प्रेम के विचारों से परिपूरित कर देते थे। गाँधीजी कार्य में विश्वास करते थे, वह कर्मयोगी थे और अहिंसा के मार्ग पर चलते हुए अपने कार्यों को विश्वास के आधार पर करते थे। वे किसी व्यक्ति, देश या समय के लिए नहीं थे बल्कि वे मानवता के लिए और सार्वदेशिक तथा सार्वभौमिक थे और सबसे बढ़कर सच्चे मानवतावादी थे। गाँधीदर्शन:- 'गाँधी मर सकता है परन्तु सत्य, अहिंसा सर्वदा जीवित रहेंगे।' गाँधीजी द्वारा कही गई ये बात उनके जीवन दर्शन को अभिव्यक्त करती है और जिन सिद्धांतों को उन्होंने मृत्यु तक जीया उन सिद्धांतों के महत्त्व को परिलक्षित करती है।

गाँधीजी के प्रतिनिधि विचार :-

1. राजनीति का आध्यात्मीकरण: गाँधीजी के लिए धर्म और राजनीति एक ही काम के दो नाम हैं। वो मानवतावादी धर्म में विश्वास करते थे और उनका मत था कि राजनीति का उद्देश्य भी धर्म के उद्देश्य के समान मानव मात्र की सेवा ही हो।

2. साध्य व साधनों की पवित्रता:- वे कहा करते थे कि 'मेरे जीवन दर्शन में साधन और साध्य संपरिवर्तनीय शब्द हैं।' न केवल साध्य ही नैतिक, पवित्र, शुद्ध और उच्च होने चाहिए बल्कि साधन भी उसी मात्रा में नैतिक, पवित्र और शुद्ध होने चाहिए उनके लिए 'साधन एक बीज की तरह है और साध्य एक वृक्ष, साधन व साध्य में वही संबंध है जो बीज एवं वृक्ष में है।''

3. ट्रस्टीशिप सिद्धांत: यदि किसी अमीर या उद्योगपति के पास बेहिसाब संपत्ति है तो वह व्यक्ति उतने ही धन का उपयोग करेगा जितनी कि उसकी आवश्यकता है। शेष संपत्ति को यह समझकर अपने पास रखेगा कि यह संपत्ति राष्ट्र की है तथा वह तो केवल ट्रस्टी (अमानतदार) है यानि उस संपत्ति की देखभाल करने के लिए है। यह सिद्धांत संपत्ति के असमान वितरण की समस्या का अहिंसक समाधान प्रस्तुत करता है।

4. सत्याग्रह:- जो कुछ सत्य है उसका आग्रह करना, आजीवन उस सत्य के साथ खड़े रहना तथा असत्य का विरोध ही सत्याग्रह है। गाँधीजी का सत्याग्रह सत्य, अहिंसा, चरित्र, निर्व्यसन, सहिष्णुता, धैर्य तथा साध्य व साधनों की पवित्रता के बिना अधुरा है-

गाँधीजी के अनुसार सत्याग्रह के औजार:-

- असहयोग
- हिजरत: जब किसी स्थान विशेष के लोग अपने आत्मसम्मान की रक्षा के लिए अपने निवास स्थान को छोड़कर दूसरे स्थान पर रहने के लिए चले जाते हैं।
- सविनय अवज्ञा: अनियमित, अन्यायी कानून या निरंकुश सत्ता को विनयपूर्वक मानने से इनकार कर देना ही सविनय अवज्ञा है। गाँधीजी इसे ''पूर्ण, प्रभावी सशस्त्र क्रांति का रक्तहीन विकल्प'' कहते थे।
- उपवास : अनुकूल परिस्थितियों में उपवास विरोध हेतु सर्वश्रेष्ठ साधन है। उपवास ऐसा कष्ट है, जिसे व्यक्ति स्वयं अपने ऊपर लागू करता है।

5. अस्तेय :- चोरी न करना। गाँधीजी ने शारीरिक, मानसिक, वैचारिक व आर्थिक सभी प्रकार की चोरी से दूर रहने को ही अस्तेय माना है।

6. अपरिग्रह : धन संचय नहीं करना। गाँधीजी ने न केवल धन संचय अपितु भविष्य के लिए किसी भी रूप में किसी भी प्रकार का संचय न करने को ही अपरिग्रह माना है।

7. स्वदेशी : गाँधीजी प्रथमत: तो पूर्ण देशी वस्तुओं के उपयोग के समर्थक थे।

केवल अति आवश्यक होने पर ही विदेशी वस्तुओं के उपयोग की अनुमति देते थे । ताकि मुद्रा विनिमय भी होता रहे अर्थात इस विषय में भी गाँधीजी के विचार विस्तृत थे।

आज के युग में प्रासंगिकता :-

आज जब संपूर्ण विश्व बेकारी, बेरोजगारी, अस्वच्छता, लैंगिक भेदभाव, अशिक्षा, हिंसा, वर्ग-विभेद एवं शहरीकरण जैसी समस्याओं से पीड़ित है। ऐसे समय में गाँधी दर्शन आशा की एक प्रखर किरण के रूप में मौजूद है। गाँधीजी की चरखा आधारित ग्राम अर्थव्यवस्था आर्थिक संकट की समस्या को हल करने के लिए सहज सरल व सस्ता साधन है। ये साधन अमीर भले ही न बनाए परन्तु आलस्य, बेरोजगारी व बेकारी को दूर करने के लिए रामबाण औषधि है।

- गाँधीजी की चरखा आधारित अर्थव्यवस्था ग्राम स्वराज्य का आधार है। चरखा कृषि का पूरक होने के साथ ही अन्य कुटीर उद्योगों का विकास करके गाँव को पूर्णत: आत्मनिर्भर बनाता है। जिससे गाँवों से शहरों की ओर पलायन रूकेगा। साथ ही साथ देश के भाग्य विधाता किसान का जीवन सुखी समृद्ध व संतुष्ट होगा

आत्महत्या का तो विचार ही नहीं उठेगा।

- 'हिन्द स्वराज' में गाँधीजी के विचार यंत्र विरोधी व पूंजी विरोधी रूप में सामने आते हैं। लेकिन बाद के वर्षो में गाँधीजी यंत्र व पूंजी को कुछ शर्तों व इसकी कमियों के उपचार के साथ स्वीकारते हैं। ट्रस्टीशिप का सिद्धांत समग्र मानवता के लिए वरदान है जो अत्यधिक पूंजी के कारण उत्पन्न समस्याओं यथा वर्ग संघर्ष भेदभाव आदि को बिना किसी हिंसा व घृणा के नष्ट कर देता है। गाँधीजी का जीवन स्वयं ही स्वस्थ भारत, स्त्री-पुरुष समानता, शिक्षा, अहिंसा जैसी ज्वलंत जरूरतों को व्यावहारिक रूप से साकार करता हुआ चलचित्र है। जो हमें पल-पल मार्गदर्शित करता हैं।

भारत का भविष्य व गाँधीदर्शन :-

गाँधीजी न केवल भारत के थे। वे तो सार्वकालिक व सर्वदेशीय थे। दुनिया जब बेकारी, निराशा, हिंसा, अविश्वास, असत्य के रसातल में धँसती जा रही है तब गाँधीजी के विचार भविष्य में भी उतने ही तर्कपूर्ण व मार्मिक रहेंगे जितने की आज व भूतकाल में रहे हैं। उनके सत्य, अहिंसा, प्रेम, सहयोग, त्याग और तपस्या के विचार प्यासी मानवता को तलातल में प्राणदान देते रहेंगे।

शिक्षक और गाँधीदर्शन :-

युग शिल्पी शिक्षक का दिया गया ज्ञान बिना गाँधीदर्शन को आत्मसात् किए अधूरा है। उसके पास पढ़कर निकला विद्यार्थी इस देश समाज के लिए अवश्य ही उपयोगी होगा, बशर्ते उसका जीवन मानवता, सत्य, अहिंसा, प्रेम व राष्ट्रीय अस्मिता से ओत-प्रोत हो।

गाँधी दर्शन मात्र पुस्तकों का ज्ञान नहीं है वरन् एक श्रेष्ठ जीवन दर्शन है जिसको स्वयं आत्मसात् करने पर ही शिक्षक, शिक्षण के साथ ही स्वच्छ विद्यालय- स्वच्छ देश, वृक्षारोपण, अहिंसक वर्ग और सहयोगी समाज निर्माण में अपना अधिकतम एवं श्रेष्ठतम् योगदान दे पाएगा।

गाँधीजी के बारे में बर्नार्ड शॉ ने कहा था कि ''आने वाली पीढ़ियाँ बड़ी मुश्किल से विश्वास कर पाएगी कि क्या संसार में गाँधी जैसा व्यक्ति भी रहा होगा।'' ऐसे महामानव के विचारों को अंश मात्र भी हम अपने आचरण में साकार कर पाए तो वह उनकी 150 वीं जन्म शताब्दी के अवसर पर सार्थक नमन होगा।

प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान)
रा.उ.मा.वि.नेवरिया चित्तौड़गढ़
मो: 7976270170

पिता के पत्र पुत्री के नाम

दूरस्थ शिक्षा के मसीहा नेहरु

❐ ओम प्रकाश सारस्वत

बच्चों के द्वारा अक्सर अपने माता-पिता, अन्य अभिभावकों तथा गुरुजन के सामने प्रश्न एवं जिज्ञासाएँ प्रकट की जाती रहती है यथा-यह क्या है... ऐसा क्यों है... यह कैसे हुआ... वह कब होगा... यह कहाँ से आया... कहाँ, कौन, कब, कैसे, कितना, किधर आदि-आदि । भले ही शिक्षक ऐसे प्रश्नों/जिज्ञासाओं से खुश न रहते हो मगर शिक्षा व शिक्षण शास्त्र तो यही कहता है कि बच्चों को ज्यादा से ज्यादा प्रश्न करने हो। अपनी शंकाएँ एवं जिज्ञासाएँ शिक्षकों एवं अभिभावकों के समक्ष व्यक्त करने की योग्यता उनमें विकसित करो तथा जब तक सन्तुष्टि न हो जाए उन्हें प्रश्न / प्रति प्रश्न करने दो। शिक्षा शास्त्री कहते हैं कि शिक्षक धैर्यवान होकर इन प्रश्नों को सुनें तथा सोचकर उनका समाधान करें। अधीर होना शिक्षक को शोभा नहीं देता। याद रखिए कि प्रत्येक प्रश्न स्वयं शिक्षक को सीखने की राह दिखाने वाला होता है।

दुनिया का इतिहास इस बात का गवाह है कि इस क्या, क्यों, कब, कैसे, कहाँ, कितना, किधर, किससे को जब गम्भीरता के साथ लिया गया, तब-तब कोई नया ज्ञान धरती पटल पर सामने आया। 'किमकुर्वत संजय' यह प्रश्न महाराज धृतराष्ट्र का है जो श्रीमद्भगवद्गीता के पहले अध्याय के पहले श्लोक में है -

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः।
नामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय।।

(हे संजय ! धर्म भूमि कुरुक्षेत्र में इकट्ठे हुए युद्ध की इच्छा वाले मेरे और पाण्डु के पुत्रों ने क्या किया ?)

''क्या किया ?'' महाराज धृतराष्ट के इस प्रश्न का ठीक-ठीक से जवाब देने के लिए संजय माध्यम बनता है और भगवान श्री कृष्ण और अर्जुन के संवाद गीता ज्ञान के रूप में जगत के सामने होते हैं। अर्जुन की जिज्ञासाएँ एवं प्रश्नों / शंकाओं के समाधान भगवान करते हैं। गुरु-शिष्य के रूप में दोनों की भूमिका है। गीता का उपदेश कालजयी है। गीता की शिक्षाएँ धर्म,

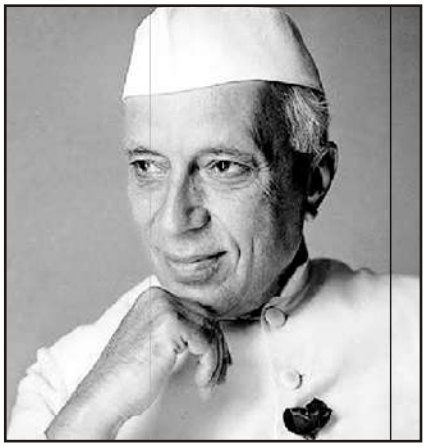

जाति, सम्प्रदाय, देश, प्रदेश, धनी, निर्धन, बलशाली, कमजोर इन सबकी सीमाओं से परे हैं। धृतराष्ट्र के एक छोटे से प्रश्न 'क्या किया' का परिणाम गीता के रूप में हम देखते हैं। इसी प्रकार बच्चों के प्रश्नों पर चिन्तन करके गुरुजन ज्ञान की गीता रच सकते हैं।

ऐसे ही प्रश्न एक 9-10 साल की बालिका के मस्तिष्क में उमड़ते है। यह बालिका है इन्दिरा प्रियदर्शनी। सन् 1927 में इन्दिरा अपने पिता पं. जवाहर लाल नेहरु एवं माँ कमला नेहरु के साथ जहाज के ऊपरी डेक पर खड़ी होकर घंटों वह समुद्र की लहरों को निहारती, तब उसके बाल मन में प्रश्न उपस्थित होते-

- यह समुद्र क्या है?
- यह पानी कहाँ से आया है?
- जहाज कैसे चल रहा है ?
- आसमान में तारे क्या हैं ?
- यह संसार कैसे बना?
- जीव कहाँ से आया ?
- देश विदेश क्या है ? आदि-आदि।

पिता जवाहर जब आवाज लगाकर बालिका को बुलाते तो वह गुमसुम सी थी सारे प्रश्न उनसे पूछती। माँ-बाप बेटी को दुलार-पुचकार सन्तुष्ट करने का प्रयास करते लेकिन यह क्या ? बालिका तो सपने में भी बड़बड़ाती ऐसे प्रश्न करती। जवाहर चिन्तनशील व्यक्ति थे। खूब पढ़ते, सोचते, चिन्तन-मनन कर उतना ही

शानदार लिखते भी। उनके लिखे ग्रंथ धर्म और धर्म नायक, विश्व इतिहास की झलक (2 खण्ड) मेरी कहानी, हिन्दुस्तान की समस्याएँ आदि उनके गहन अध्ययन एवं लेखकीय कुशलता की परिचायक हैं। खेर बालिका इन्दिरा के इन प्रश्नों ने पिता के भीतर बैठे शिक्षक को चेतन किया। **''किस सरल से सरल तरीके से बताऊँ कि मेरी प्यारी बिटिया को इन प्रश्नों के उत्तर समझ में आ जाएँ''** यह नेहरु जी का स्वयं से प्रश्न था।

पर नेहरु कोई आम पिता संरक्षक तो थे नहीं। वे तो ठहरे स्वतंत्रता सेनानी। सेनानियों का क्या ठिकाना। जेल को अपना घर ही मानते हैं स्वाधीनता सेनानी। यात्रा पूर्ण कर नेहरु परिवार मद्रास पहुँच गया। बालिका अपनी चंचल प्रवृत्ति में कहीं खो गई लेकिन पिता के मस्तिष्क में वे प्रश्न उमड़ते रहे। सच तो यह है कि बालिका इन्दु के सवालों ने नेहरु को एक शिक्षक की तरह सोचने को मजबूर कर दिया।

वर्ष बदलकर 1928 हो गया। बालिका इन्दिरा मसूरी हिमालय पर और पिता पं. जवाहर लाल नेहरु इलाहाबाद में। अब तो पत्र ही लिखा जा सकता है। ''कैसे लिखूं'' ''क्या लिखूं'' ''कितना लिखूं'' की विषय वस्तु बेटी के समझ आ जाए। यही तो एक शिक्षक की विशेषता होती है कि वह बालमन की गहराइयों में डुबकी लगाता हुआ इतनी सरल व सरस प्रस्तुति देता है कि वह बालक के समझ में आ जाए।

बाप (शिक्षक) यहाँ तो बेटी (शिष्य) वहाँ! पढ़ाई हो कैसे! जहाँ चाह-वहाँ राह। अन्ततः राह मिल गई। विद्यालय और कक्षाकक्ष का स्थान लिया दूरस्थ शिक्षा प्रणाली (Distance Education System) ने । दूरस्थ शिक्षा प्रणाली यानी शिक्षा में शिक्षण-अधिगम की वह व्यवस्था जिसमें शिक्षक (Teacher) व विद्यार्थी (Student) साथ आमने-सामने नहीं होते बल्कि दूर-दूर होते हैं। उनका पठन-पाठन डाक द्वारा शिक्षण अधिगम सामग्री (TLM) भेजकर होता है। इतना ही नहीं, एक निश्चित क्रम एवं समय पूरा होने के बाद परीक्षा एवं प्रमाणन (Examination and certification) का कार्य भी बकायदा होता है।

नेहरु जी ने बालिका इन्दिरा के भोले-भाले प्रश्नों को चिह्नित कर उनके अनुरूप प्रमाणित सामग्री का संकलन किया। अब एक-एक करके पन्नों की पोशाक में उन प्रश्नों का जवाब दिया। पत्र की शुरुआत बाप बेटी के लिए आवश्यक स्नेह से सिंचित दुलार से और शनैः शनैः कहानी के रूप में विषय सामग्री की प्रस्तुति। नेहरुजी के द्वारा इन्दिरा प्रियदर्शनी को ये पत्र अंग्रेजी भाषा में लिखे गए थे। कालान्तर में इनका बहुत ही सरल अनुवाद हिन्दी भाषा में मुंशी प्रेमचंद ने किया। वह संकलन 'पिता के पत्र पुत्री के नाम' शीर्षक से प्रकाशित हुआ। ये पत्र अद्भुत हैं। विषय सामग्री तो बालोपयोगी है सो है; इसकी प्रस्तुति बहुत मोहक है। पढ़ने पर कहीं नहीं लगता कि कोई शिक्षा दी जा रही है बल्कि स्वयं बालक पढ़ते-पढ़ते सीख जाए, ऐसा प्रयास है। इन पत्रों के विषय इस प्रकार है-

1. संसार पुस्तक है
2. शुरू का इतिहास कैसे लिखा गया
3. जमीन कैसे बनी
4. जानदार चीजें कैसे पैदा हुई
5. जानवर कब पैदा हुए
6. आदमी कब पैदा हुआ
7. शुरू के आदमी
8. तरह-तरह की कौमें क्योंकर बनी
9. आदमियों की कौमें और जुबानें
10. जुबानों का आपस में रिश्ता
11. सभ्यता क्या है
12. मजहब की शुरूआत और काम का बँटवारा
13. खेती से पैदा हुई तब्दीलियाँ
14. खानदान का सरगना कैसे बना
15. सरगना का इख्तियार कैसे बढ़ा
16. सरगना राजा हो गया
17. शुरू का रहन-सहन
18. पुरानी दुनिया के बड़े-बड़े शहर
19. मिस्र और क्रीट
20. चीन और हिन्दुस्तान
21. समुद्री सफर और व्यापार
22. भाषा लिखावट और गिनती
23. आदमियों के अलग-अलग दरजे
24. राजा, मंदिर और पुजारी
25. पीछे की तरफ एक नज़र
26. 'फासिल' और पुराने खंडहर
27. आर्यों का हिन्दुस्तान में आना
28. हिन्दुस्तान के आर्य कैसे थे
29. रामायण और महाभारत

पं. नेहरु इन पत्रों में एक आदर्श बाल मनोविज्ञान के ज्ञाता शिक्षक प्रमाणित होते हैं। छोटे बच्चों को जिस मखमली अंदाज में शिक्षा देनी होती है, वह सब इन पत्रों में समाया है। एक अच्छे शिक्षक की विशेषता होती है कि वो कभी भी यह नहीं कहता कि जो मैंने बता दिया, बस वह ही किनारा है बल्कि वह तो यह कहता है कि यह तो शुरुआत है। ज्ञान अथाह अनन्त है। आप उसे प्राप्त कीजिए। ऐसी ही विनम्रता एवं साफगोई पं. नेहरु में हैं। वे अपने पत्र 'संसार एक पुस्तक में लिखते हैं-''मुझे मालूम है कि मैं इन छोटे-छोटे खतों में बहुत थोड़ी सी बातें ही बता सकता हूँ, लेकिन मुझे विश्वास है कि इन थोड़ी सी बातों को भी तुम शौक से पढ़ोगी और समझोगी कि दुनिया एक है और जो लोग इसमें आबाद है, वे हमारे भाई-बहन हैं। जब तुम बड़ी हो जाओगी तो तुम दुनिया और उसके आदमियों का हाल मोटी-मोटी किताबों में पढ़ोगी। उससे तुम्हें जितना आनन्द मिलेगा, उतना किसी कहानी या उपन्यास में भी नहीं मिलता।''

शिक्षा के सम्बन्ध में नेहरु जी का चिन्तन एवं चिन्ता जग जाहिर है। उनके इन पत्रों में से कुछ अंश राज्यों की पाठ्यपुस्तकों में शुमार हैं। इनकी सचित्र पुस्तकें तथा लघु फिल्में बनी हुई हैं। आजादी के पश्चात शिक्षा के लिए गठित तीन आयोग डॉ. राधाकृष्णन् आयोग, मुदालियर आयोग और कोठारी आयोग नेहरु जी की ही देन थी। प्रौद्योगिकी में आई.आई.टी., प्रबन्ध में आई.आई.एम. का वर्तमान में जो रूप देख रहे हैं, यह सब प्रधानमंत्री के रूप में पं. जवाहर लाल नेहरु के द्वारा ही किया हुआ है।

सदस्य, राज्य शिक्षा नीति समिति,
ए, विनायक लोक, बाबा रामदेव रोड,
गंगाशहर (बीकानेर)
मो. 9414060038

चाहे बीस वर्ष का हो
या अस्सी का हो,
बूढ़ा वह है जो सीखना
बन्द कर देता है।

-हेनरी फोर्ड
(विश्वविख्यात उद्योगपति)

पर्यावरण संरक्षण

वृक्ष मित्र अभियान

❒ मानाराम जाखड़

वृक्षारोपण एवं पर्यावरण का प्राणवायु एवं जीवन से सीधा सम्बन्ध है अर्थात् जिस प्रकार प्राणवायु (ऑक्सीजन) के बिना किसी भी जीव का जीना संभव नहीं है उसी प्रकार पेड़ पौधों के बिना पर्यावरण का शुद्ध एवं संतुलित रहना असंभव है। मानव का प्रकृति में बढ़ता हस्तक्षेप पर्यावरण के असंतुलन का कारण है। आवश्यकता के लिए प्रकृति से जो कुछ भी लिया जाता है उसका बुद्धिमत्तापूर्ण उपभोग करने से प्रकृति में विशेष असंतुलन नहीं होता है किन्तु मानव ने स्वार्थपूर्ति एवं अधिकतम दुरुपयोग के प्रवृत्ति के कारण प्रकृति का अंधाधुंध दोहन करना प्रारंभ कर दिया जिसके फलस्वरूप आज मानव स्वयं वैश्विक पर्यावरणीय असंतुलन की भयंकर आपदा से जूझ रहा है।

प्रकृति प्रेमियों एवं वैज्ञानिकों की माने तो आने वाले कुछ वर्षों में प्रकृति इतनी असंतुलित हो जाएगी कि मानव को जीवन के लिए न केवल विशेष संघर्ष करना पड़ेगा अपितु विभिन्न रोगों के साथ प्राकृतिक आपदाओं की त्रासदियाँ झेलनी पड़ेगी। मानव की औसत आयु में भी कमी होना अवश्यंभावि है। इन सब समस्याओं का एक मात्र प्रमुख समाधान वृक्षारोपण को बढ़ावा देना है। उजड़ते वनों एवं बेतहासा फैल रहे कंक्रीट के जंगलों के कारण शहर तो शहर आज गाँवो में भी पर्यावरण तीव्र गति से प्रदूषित होता जा रहा है। गाँव शहरों में बदलते जा रहे हैं या यूँ कहें कि गाँवों का शहरीकरण होता जा रहा है। जिसके कारण सड़कों पर बेतहाशा वाहन दौड़ते रहते हैं जिनके कारण गाँवों का पर्यावरण भी प्रदूषित हो चुका है।

बढ़ते औद्योगिकीकरण, जनसंख्या वृद्धि तथा विज्ञान एवं तकनीक का दुरुपयोग पर्यावरण को तहस नहस करने पर आमादा है। कुछ वर्षों पूर्व तक हमारी समस्या केवल यह थी कि शुद्ध पेयजल नहीं था किन्तु अब भविष्य में हमें शुद्ध प्राणवायु भी प्राप्त होती नहीं दिख रही है। आज व्यक्ति खाने-पीने से लेकर श्वास लेने तक हर स्तर पर प्रदूषण का शिकार है। हम अधिकाधिक वृक्षारोपण कर इस समस्या से काफी हद तक निजाद पा सकते हैं। क्योंकि पर्यावरण के शुद्धिचक्र का प्रारम्भ वृक्षों व पेड़ पौधे से ही होता है। जल प्रदूषण की समस्या को हम वाटरप्योरिफायर उपकरणों से कुछ नियंत्रित कर सकते हैं। ध्वनि प्रदूषण की समस्या को अधिक ध्वनि करने वाले साधनों को सीमित कर एवं उनकी ध्वनि को कम कर नियंत्रित कर सकते हैं किन्तु वायु प्रदूषण की समस्या को केवल पेड़ पौधे लगाकर ही नियंत्रित किया जा सकता है।

आज हम वृक्षारोपण पर अधिकाधिक बल दे रहे हैं किन्तु हजारों वर्ष पूर्व महाभारत में वृक्षारोपण के महत्त्व को बताते हुए महर्षि वेदव्यास ने लिखा था -

वृक्षाणां कर्तनं पापं वृक्षाणां रोपणं हितम्।
सुवृष्टिर्जायते वृक्षैरुक्तं विज्ञानवादिभि:।।

अर्थात् वृक्षों को काटना पाप है, वृक्षारोपण करना हितकारी है, वृक्षों से अच्छी वर्षा होती है, ऐसा वैज्ञानिकों का कहना है।

यदि हम आज भी नहीं जागे तो बहुत देर हो जाएगी क्योंकि धरती से जंगलों का जिस गति से विनाश एवं दोहन हो रहा है, वह दिन दूर नहीं जब हमें श्वास लेने के लिए शुद्ध वायु मिलना भी दुर्लभ हो जाएगा।

पर्यावरण संरक्षण हेतु वृक्षारोपण के महत्त्व को समझते हुए हमारे प्रदेश के शिक्षामंत्री महोदय श्री गोविन्द सिंह डोटासरा ने फूल मालाओं एवं गुलदस्तों से स्वागत करने की परम्परा बंद करते हुए एक नवीन एवं पर्यावरण को पुष्ट करने वाली परम्परा की शुरूआत करते हुए स्वागत अभिनन्दन के समय पौधा भेंट करने के न केवल निर्देश जारी किए है अपितु स्वयं भी इसका पालन कर रहे हैं।

इस कड़ी में हमारे प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने एक कदम ओर आगे बढ़ाते हुए 28 जून के भामाशाह सम्मान समारोह 2019 के अवसर पर अपने पूर्ववर्ती नारे में वृक्ष लगाओ वाक्यांश जोड़ते हुए नवीन नारा दिया है -

पानी बचाओ, बिजली बचाओ,
सबको पढ़ाओ, वृक्ष लगाओ।

इस नारे से हमारे मुख्यमंत्री महोदय की पर्यावरण के प्रति सजगता एवं चिंता स्पष्ट रूप से झलकती है।

हमारे शिक्षामंत्री महोदय ने राजकीय विद्यालयों में इस सत्र में जितने नए नामांकन उतने ही वृक्ष विद्यालय परिसर में लगाए जाने का आह्वान कर पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने हेतु वृक्ष मित्र योजना बनाकर राजकीय विद्यालयों में वृक्षारोपण कार्यक्रम को प्रभावी ढंग से लागू करने का महत्त्वपूर्ण निर्णय लिया है साथ ही वृक्षारोपण को बढ़ावा देने हेतु राजकीय विद्यालयों में हरित क्लब गठन के भी निर्देश दिए हैं। जिसके फलस्वरूप प्रदेश में लाखों की संख्या में नए पेड़ पौधे लगा कर शिक्षा विभाग के कार्मिकों एवं अधिकारियों ने अपना संकल्प दर्शाया है।

इसी क्रम में वृक्षारोपण को बढ़ावा देने एवं जन-जन तक संदेश पहुँचाने हेतु शिक्षा संकुल परिसर जयपुर में एक-कर्मचारी-एक पेड़ का जिम्मा देकर हरियाली अमावस्या को वृक्षारोपण का वृहद् कार्यक्रम भी माननीय शिक्षामंत्री के सान्निध्य में आयोजित किया गया। आवश्यकता है तो इस संकल्प एवं उत्साह को अक्षुण्ण बनाए रखने की। हमारे प्रयासों में यदि शिथिलता नहीं आएगी तो लक्ष्य प्राप्ति में असफलता की गुंजाइश नहीं रहेगी। प्राय: देखा जाता है कि मानसून के समय हम वृक्षारोपण करते हैं किन्तु देखभाल की कमी के चलते लगाए गए पेड़ पौधे कुछ समय पश्चात् नष्ट हो जाते हैं और यही सिलसिला वर्षों से चला आ रहा है।

अब की बार शिक्षामंत्री महोदय के निर्देशानुसार जो वृक्ष मित्र योजना बनाई गई उसमें प्रत्येक वृक्ष की जिम्मेदारी किसी न किसी छात्र को दी गई है साथ ही विद्यालय परिवार की भी संयुक्त जिम्मेदारी तय की गई है कि वे लगाए गए वृक्षों की सुरक्षा सुनिश्चित करें ताकि वह वृद्धि कर सकें एवं हमारे उद्देश्य में सफलता मिल सके तथा हम सब मिलकर पर्यावरण संरक्षण का संदेश जन-जन तक पहुँचा पाएँ।

आओ हम सब मिलकर यह प्रण करें कि हम हमारी धरती-धरा को हरी-भरी बनाएँगे।

उपनिदेशक (प्रशासन)
राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद्, जयपुर (राज.)
मो: 9829082311

पर्यावरण संरक्षण

भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण

❐ सुरेन्द्र माहेश्वरी

भारत के सांस्कृतिक धरातल पर पर्यावरण का अत्यधिक महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। पर्यावरण के संरक्षण में प्राचीन भारतीय परम्पराओं का विशेष योगदान है। हमारे मनीषियों ने प्रकृति की समग्र शक्तियों को जीवन दायिनी स्वीकार करते हुए उन्हें देवत्व का स्थान प्रदान किया है। आज के भौतिक युग में हमारी ये प्राचीन मान्यताएँ तिरोहित हो गई हैं, जो प्रतीक रूप में हमारी सांस्कृतिक परम्पराओं में सबल आधार स्तम्भ रही है। हमारे पूर्वजों को पर्यावरण में असंतुलन होने पर दुनिया पर बढ़ने वाले खतरों की पर्याप्त जानकारी रही है। वे प्रकृति को मनुष्य मात्र के लिए सर्वाधिक फलदायी मानते थे। इसीलिए प्रकृति को जीवन का अभिन्न अंग मानते हुए उसकी पूजा अर्चना की व्यवस्था स्थापित की गई थी। संत पुरुषों ने इसी संस्कृति को अपने आश्रमों में और बाहर भी पल्लवित पुष्पित किया।

हमारे धर्म शास्त्रों ने मंत्रोच्चार से प्रकृति को संबद्ध कर उसे पवित्रता प्रदान की। धरती को मातृवत मानकर जल, हवा, नदियाँ, पर्वत, वृक्ष और जलाशयों को पूजनीय मानकर उनकी सुरक्षा एवं संरक्षण की व्यवस्था की गई।

वेदों का संदेश है कि मानव शुद्ध वायु में श्वास ले, शुद्ध जलपान करे, शुद्ध अन्न-फल का भोजन करे, शुद्ध मिट्टी में खेले-कूदे और कृषि करे, तब ही वेद प्रतिपादित उसकी आयु **'शतम् जीवेम् शरदः शतम्'** हो सकती है। वृक्ष वनस्पति भगवान नीलकंठ का रूप है। क्योंकि वे विषैली गैसों को पीकर अमृतमयी गैस निकालते हैं। अतः वृक्षों को सींचना भगवान शिव को जल चढ़ाने के समान हैं। वेदों में इस बात का संकेत है कि पीपल के नीचे बैठना स्वास्थ्यप्रद है तथा पलाश (ढाक) के पेड़ दिन-रात सुगन्ध और प्राणवायु छोड़ते हैं।

वृक्ष हमारी संस्कृति की धरोहर है। इसीलिए अनेक वृक्ष पूज्य माने जाते हैं। तुलसी को विष्णुप्रिया माना गया है। भक्त व भगवान के तिलक लगाने के लिए चन्दन सर्वमान्य है। मत्स्य

पुराण में दस कुओं, बावड़ियों व तालाबों से भी बढ़कर वृक्ष लगाने को विशेष महत्त्व दिया गया है। पुरातनकाल में यदि अपरिहार्य कारणों से किसी वृक्ष को काटना पड़ता था तो वृक्ष से क्षमा माँगने का प्रावधान था। राजस्थान में विश्नोई समाज द्वारा जोधपुर जिले में खेजड़ी के वृक्ष को बचाने हेतु लोगों ने बलिदान दिए हैं। पीपल और बरगद के पेड़ों को तो ब्राह्मण माना गया है। तुलसी का पौधा तो इतना पवित्र माना गया है कि हर भारतीय उसे घर में लगाता है तथा उसके विवाह की भी परम्परा भारतीय समाज में रही है। हमारे ऋषि महात्माओं के आश्रम, वन खण्डों में स्थित हैं। अनेक पेड़ों के संबंध देवी देवताओं से संलग्न किए गए हैं।

पीपल में विष्णु वास, नीम को नारायण कहा गया है। बरगद को भगवान शंकर से संबद्ध माना और तुलसी को सालिगराम की पत्नी के रूप में स्वीकार किया गया है। वैशाख में पीपल पूजा, कार्तिक में आँवला व तुलसी पूजा, मिंगसर (मार्गशीर्ष) मास में कदम्ब के वृक्ष को पूजने की परम्परा रही है। पेड़ों की स्थिति पर भी विचार किया जाता है। नीम का पेड़ गाँव की चौपाल पर और पीपल का पेड़ गाँव के बाहर जलाशय के किनारे शोभायमान होता है।

जिस वृक्ष पर पक्षियों के घौंसले हों तथा देवालय और श्मशान भूमि पर खड़े पेड़ों को नहीं काटना चाहिए जैसे बड़, पीपल, आक, नीम आदि। भारत में आर्यों के आगमन से पूर्व सिंधु घाटी की सभ्यता में प्राप्त मुहरों पर अंकित चित्रों से स्पष्ट है कि सिन्धु घाटी के निवासी वृक्षों की पूजा किया करते थे। प्राचीनकाल से ही पेड़ों को सींचने की परम्परा चली आ रही है। वैशाख महीने में भारतीय नारियाँ व बालिकाएँ पीपल के पेड़ को सींचती हैं। इसके पीछे यही धारणा है कि ज्येष्ठ मास की भीषण गर्मी से इन पेड़ों को बचाया जा सके। पेड़ों के बचाव व संरक्षण हेतु गोचर भूमि, डोली और ओरण आदि व्यवस्थाओं को क्रियान्वित किया गया।

वन्य जीव-जन्तु भी हमारे पर्यावरण के प्रमुख अंग माने जाते हैं। इनका सही संतुलन होने पर पर्यावरण शुद्ध तथा स्वच्छ रहता है। इनकी सुरक्षा के लिए वन्य जीवों को पूज्य मानकर इनकी पूजा का भी प्रावधान हमारी सांस्कृतिक परम्पराओं में रखा गया है। भारतीय संस्कृति में दस अवतारों में चार अवतार पशुओं व जन्तुओं से संबद्ध हैं जैसे मत्स्य अवतार, वराह अवतार, कच्छव अवतार तथा नृसिंह अवतार आदि। विशेषतः गणेश, हनुमान और नागपूजा की व्यवस्था की गई है ताकि लोगों में पशु प्राणियों के लिए आस्था अक्षुण्ण बनी रहे। गायों की महत्ता को प्रकट करने हेतु गोपाष्टमी, बछबारस का त्योहार मनाया जाता है। गाय किसानों की जीवन धारा है।

कृषि भूमि में उत्पादन को हानि पहुँचाने वाले चूहों पर नियंत्रण रखने वाले साँपों के प्रति श्रद्धा सूचक नागपंचमी व गोगानवमी का त्योहार मनाया जाने लगा। पशु-पक्षियों के संरक्षण हेतु अनेक परम्पराएँ भारतीय समाज में प्रचलित हैं। शनिवार के दिन 'कीड़ी नगरा' सींचने की परम्परा में उन चींटियों की सुरक्षा की व्यवस्था दी गई है। जो हानिकारक तथा बर नियंत्रण करती है, जो नई मिट्टी बाहर निकालते हैं। मरे हुए जानवरों की गंदगी को दूर करने वाले कौओं के प्रति श्रद्धा स्वरूप श्राद्ध पक्ष में उनको भोजन

खिलाने की परम्परा है। विवाह के समय तोरण लगाने की परम्परा में भी पक्षियों को याद किया है। तोरण पर प्रतीकात्मक रूप से पक्षियों की आकृतियाँ बनाई जाती हैं। भोजन से पहले एक रोटी अथवा पाँच ग्रास चींटी, कौए, कुत्ते आदि के लिए निकालकर उन्हें जीवित रखने की व्यवस्था प्रकट की गई है।

'जल ही जीवन है' अतः जल के शुद्धीकरण एवं पवित्रता बनाए रखने का-प्रयत्न प्राचीनकाल से चला आ रहा है। जल को भारतीय समाज में देवता माना गया है। जल संरक्षण की परम्परा से नदियों को 'माता' का स्थान दिया गया है। इनकी पूजा की जाती है। गंगाजल को समस्त संस्कारों में महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। कुआं, बावड़ी, तालाब तथा झीलों के निर्माण की धार्मिक प्रथाएँ रही है।

गाँवों में आज भी जल स्रोतों को गंदा करने पर सामाजिक प्रतिबंध रहता है। नदियाँ भूमिगत जल का स्तर ऊँचा उठाती हैं और प्राकृतिक सौंदर्य में वृद्धि करती हैं। पृथ्वी पर जल का तीन चौथाई हिस्सा होते हुए भी पीने योग्य जल का हिस्सा 0.33 प्रतिशत है। जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ जल संकट बढ़ता जा रहा है। अतः जल संरक्षण आवश्यक हो गया है।

संसार में पर्यावरण संरक्षण का कार्य सर्वप्रथम ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में सम्राट अशोक ने किया था। प्रकृति की महत्ता को स्वीकारते हुए वन्य जीव जंतुओं के शिकार पर प्रतिबंध लगाया जो आज भी अशोक के शिलालेखों में अंकित है।

जल को आदिकाल से शुद्ध व पवित्र बनाए रखने का प्रयास किया जाता है। पवित्र नदियों के जल को बड़ी धूमधाम से गृह प्रवेश कराया जाता है। गंगा प्रसादी के रूप में भोज का आयोजन होता है। पुरातनकाल में जल संसाधनों के रखरखाव पर बड़ा ध्यान था। कुएँ, बावड़ी, झालरों का निर्माण कराना धार्मिक कृत्य माना जाता था। जल स्रोतों को गंदा करने पर दण्ड का विधान था। प्राचीनकाल में ऋषि आश्रमों में शिक्षा प्राप्ति के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के पेड़ लगाने तथा उन्हें सिंचित करने का पुनीत कर्म करना आवश्यक था। धर्मपरायण व्यक्ति जलाशय बनाकर, वृक्षारोपण कर धर्म में संवर्धन करते थे।

हमारे पुरातन साहित्य में पर्यावरण की महत्ता को विभिन्न प्रकरणों एवं तरीकों से समझाने का प्रयास हुआ है। पर्यावरण सुरक्षा व संवर्धन हेतु विभिन्न उपायों का उल्लेख हुआ है। तत्कालीन साहित्य में पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के अनेक सुझाव प्रस्तुत हुए हैं। ज्ञान और नीतिपरक पंचतंत्र की कहानियों तथा जातक कथाओं में वन्य जीवन से संबंधित अनेकानेक प्रसंगों को उद्घाटित किया गया है। सभी ग्रहों, नक्षत्रों के साथ पंचतत्वों पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि एवं आकाश तथा प्रकृति, पर्वत, नदी, वन को देवता मानकर उनकी पूजा अर्चना का प्रावधान है।

यजुर्वेद में भूमि प्रदूषण पर नियंत्रण हेतु उल्लेख है कि 'पृथिवी मातर्मा मा हिंसीर्मो अहं त्वात' यजुर्वेद 10/23

अर्थात् हे माता तुम हमारा पालन पोषण उत्तम रीति से करती हो। हम कभी भी तुम्हारी हिंसा (दुरुपयोग) न करें। रासायनिकों व कीटनाशकों के अति प्रयोग से तुम्हारा कुपोषण न करें बल्कि हेर-फेरकर बोने तथा गोबर, जल आदि से तुम्हें पोषित करें। क्षरण की रोक हेतु वृक्ष लगाएँ क्योंकि तुम्हारे पोषण पर ही हमारा पोषण निर्भर है। भूमि की उपजाऊ क्षमता न्यून व क्षीण हो गई है तो इस भूमि पर कुछ समय खेती बाड़ी नहीं करें, जिससे प्रकृति, वायु, सूर्य, रश्मि वर्ष भर में उन्हें उर्वरा बना देंगे, ऐसे निर्देश वेदों में प्रकट हुए हैं।

पर्यावरण संरक्षण की दिशा में गुरु पूर्णिमा पर 'वृक्ष गंगा महोत्सव' का आयोजन हमारी पारम्परिक अवधारणा को पोषित करने वाला अभियान कहा जा सकता है, जिसमें तरु मित्र और तरु पुत्र यज्ञों का आयोजन प्रस्तावित है। इस संबंध में इन सराहनीय सुझावों की क्रियान्विति से पर्यावरण संरक्षण की व्यवस्था को बल मिलेगा।

- सूखी पहाड़ियों पर तरुपुत्र यज्ञों के माध्यम से वृक्षारोपण द्वारा स्मृति उपवन बनाना।
- मंदिरों और उद्यानों में वृक्ष वाटिकाओं का निर्माण करना।
- नदी किनारे खेतों की मेड़ों आदि पर भूमि कटाव को रोकने हेतु छायादार वृक्ष लगाना।
- मंदिर व धार्मिक स्थलों पर त्रिवेणी-(पीपल, बरगद, नीम), पंचवटी (नीम, पीपल, बरगद, जामुन, आँवला), हरिशंकरी (बरगद, पीपल, पाकड़) का वृक्षारोपण करना।
- प्रत्येक गाँव में देवालयों व गोचर भूमि तथा बंजर भूमि में वृक्षारोपण करना।
- शिक्षण संस्थानों में तरुमित्र योजनान्तर्गत विद्यार्थियों से वृक्षारोपण कराना।
- श्मशान घाटों पर धार्मिक महत्त्व के छायादार पेड़ लगाना।
- राजमार्गों के किनारों पर छायादार वृक्ष लगाना।

आज हमारी पुरातन परम्पराएँ और रीति-रिवाज समाप्त प्रायः हो गए हैं। वर्तमान सभ्यता और भौतिकता की विषबैल इतनी फलित हो गई है कि समग्र संस्कृति को पाला मार गया है। तुलनात्मक दृष्टि से यह देखा जाए तो आज के इस भौतिक युग में मनुष्य अपने व्यक्तिगत स्वार्थ में अंधा हो गया हैं और हमारी प्राचीन धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं की मान मर्यादाओं और भावनाओं को जीवन से तिरोहित करता जा रहा है।

पूर्व की हमारी प्रकृति-उपासना की आस्थाएँ समाप्त हो गई हैं। जिस श्रद्धा और आस्था के साथ हम प्रकृति की पूजा करते थे, आज वह भावना समाप्त हो गई है। प्रकृति के दोहन से अधिकाधिक अर्थलाभ की भावना में वृद्धि हो गई है। वृक्ष पूजा केवल प्रतीकात्मक रह गई है।

आज बरगद, पीपल, नीम, आँवला आदि का महत्त्व कम होता जा रहा है। गोचर भूमि पर अत्यधिक अतिक्रमण हो रहे हैं। वहाँ आवासीय भवन खड़े किए जा रहे हैं। पशु-पक्षियों की जातियाँ लुप्त होती जा रही हैं। हमारे जल स्रोत अब बस्ती के कचरादान बनते जा रहे हैं। जिन नदियों को हम मातृवत पूजते रहे हैं, अब उनमें कल-कारखानों का प्रदूषित जल प्रवाहित हो रहा है।

आज भी हमारी पुरातन पर्यावरण संरक्षण की प्रथाओं को सामाजिक स्तर पर प्रधानता देते हुए, इन परम्पराओं का अनुगमन दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ किया जाए तो पर्यावरण संतुलन तथा संरक्षण को प्रगाढ़ता मिलेगी।

राउमावि. तसवारिया,
भीलवाड़ा (राज.)-311022
मो: 9829925909

पर्यावरण संरक्षण

वैश्विक आदर्श : भूटान

❒ दीपक जोशी

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का सर्वाधिक सुन्दर एवं एकमात्र स्थान जहाँ जीवन संभव है, वो है 'पृथ्वी'। पृथ्वी तथा इसका आलौकिक पर्यावरण पूरी सृष्टि में अतुलनीय है। इस नव्य ग्रह के नेतृत्व की जिम्मेदारी हम मनुष्यों की हैं। परन्तु यह पृथ्वी मात्र मनुष्यों की ही सम्पत्ति नहीं, इस पर निवास करने वाले समस्त जीवों का इस पर समान अधिकार है। क्या हमने इस आलौकिक ग्रह के मुखिया की जिम्मेदारी का निर्वहन भलीभांति किया है? यह विचारणीय है। मनुष्य ने अपने व्यक्तिगत स्वार्थ और भोग विलास के लिए पृथ्वी और इसके पर्यावरण का निरन्तर अविवेकपूर्ण दोहन किया, जिसके परिणामस्वरूप आज यह ग्रह पर्यावरण प्रदूषण, विश्व उष्णन, ओजोन क्षय, जैव विविधता क्षरण, जलवायु परिवर्तन, हिम गलन आदि गंभीर समस्याओं से ग्रसित होकर संकट के द्वार पर खड़ा है। आज मनुष्य अपने जीवन को सरल, सहज एवं आरामदायक बनाने के लिए विज्ञान के माध्यम से नए-नए आविष्कार किए जा रहा है और फिर इन्ही आविष्कारों के दुष्प्रभावों को दूर करने के लिए जुट जाता है, यह बड़ी ही हास्यास्पद स्थिति है। पेड़-पौधों को इस धरा के देवों की संज्ञा दी जाए तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं। पर्यावरण शुद्धीकरण की जो तकनीक इनके पास हैं वो हजारों वर्षों के शोध उपरान्त भी मनुष्य ईजाद नहीं कर पाया। परन्तु हमने धरा के इन जीवन्त देवों का तिरस्कार किया और अपने स्वार्थ के लिए इनका अंधाधूंध दोहन कर प्रकृति के संतुलन को ही बिगाड़ कर रख दिया। परिणामस्वरूप आज पृथ्वी अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही है और पूरा विश्व भयवश प्रकृति एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति चिंतित है। ऐसे में एक छोटे से राष्ट्र जिससे प्रकृति एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपने दृष्टिकोण तथा नीतियों से पूरे विश्व को आकर्षित किया है, वह है-'भूटान'।

भारत एवं चीन जैसी दो बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के मध्य स्थित छोटा सा राष्ट्र

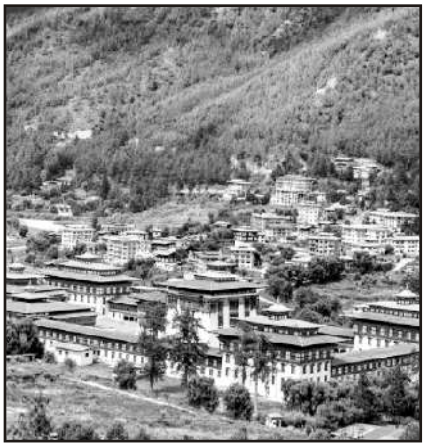

'भूटान' का स्थानीय नाम 'डुग भुल' है, जिसका अर्थ है-अझदहा का देश। इसका क्षेत्रफल 47,000 वर्ग किमी, आबादी लगभग 8 लाख एवं 707, भू-भाग वन आच्छादित है। यहाँ का मुख्य व्यवसाय कृषि है। 90 प्रतिशत से ज्यादा लोग कृषि पर निर्भर है। भूटान राष्ट्र की अधिकांश जनसंख्या शहरीकरण से दूर छोटे-छोटे गाँवों में निवास करती है।

हिमाचल की शृंखला में बसे इस नन्हे से देश को विश्व भर में पर्यावरण संरक्षण की मिसाल माना जाता है। यहाँ के लोग प्रकृति को भगवान मानते हैं। भूटान की पहाड़ियों पर अक्सर रंगबिरंगे तिकोने झंडों की भरमार देखने को मिलती है। इनके पाँच रंग प्राकृतिक शक्तियों के प्रतीक है। सफेद बादल, नीला आसमान, लाल अग्नि, हरा जल और पीली धरती। हवा में फरफराते इन झंडों पर कभी-कभी अंकित बौद्ध मंत्र इन शक्तियों से शाँति और खुशहाली का आह्वान करते हैं। कठिन पहाड़ी जीवन जीते हुए बहुत कम संसाधनों के साथ भी अत्यंत संपन्न और सुखी कैसे रहा जा सकता है, यह यहाँ के नागरिकों से सीखने को मिलता है।

ऐसा माना गया है कि दुनिया के सबसे खुशहाल लोग भूटान के होते हैं। यहाँ आने वाले पर्यटकों ने इसे 'लैड ऑफ हैप्पीनेस' की उपाधि प्रदान की है।

भूटान राष्ट्र की वास्तविक शक्ति इनकी प्रकृति एवं संस्कृति है, भूटानी अपनी संस्कृति एवं पर्यावरण के प्रति इतने संवेदनशील है कि किसी भी कीमत पर इसे खोना नहीं चाहते। भूटानी अपने प्राकृतिक सौंदर्य व संपदा को बचाने के लिए आर्थिक लाभों को महत्त्व नहीं देते। भूटान विश्व का सर्वाधिक हरा-भरा, वन आच्छादित देश है। विश्व भर में भूटान को सर्वाधिक ऑक्सीजन उत्पादक राष्ट्र माना जाता है। साथ ही यह सर्वाधिक प्रदूषण रहित राष्ट्र भी है। भूटान विश्व का पहला एवं एकमात्र कार्बन नेगेटिव देश है। यानि यह प्रतिवर्ष जितना कार्बन उत्सर्जित करता है उससे अधिक अवशोषित कर लेता है। हिमालय की सुंदर पहाड़ियाँ, बर्फीले पहाड़, हरे-भरे मैदान, पवित्र बौद्ध मठ, शांत सहान वन एवं सुंदर प्राकृतिक घटा में स्वच्छ और शुद्ध हवा यहाँ की विशेषताएँ हैं।

इस देश में महज करीब 8 लाख लोग निवास करते हैं। किन्तु ये लोग दुनिया भर में मिसाल हैं। जिस दौर में सारी दुनिया अपनी 'जीडीपी' को आगे ले जाने में व्यस्त हैं उस दौर में भूटान 'जीएनएच' यानि ग्रोस नेशनल हैप्पीनेस के रास्ते पर अग्रसर है। भूटान की 'सकल राष्ट्रीय खुशहाली' के नौ तत्व- मनोवैज्ञानिक, प्रसन्नता, स्वास्थ्य, शिक्षा, समय का उपयोग, सांस्कृतिक विविधता और इसका लचीलापन, सुशासन, समाज की जीवन्तता, पर्यावरण की विविधता, सक्षमता और जीवनस्तर के रूप में परिभाषित है एवं कार्ययोजना तैयार की जाती है।

नतीजा यह है कि वह एक साफ सुथरा, सुंदर, स्वस्थ, खुशहाल और प्रदूषणरहित राष्ट्र बन चुका है।

भूटान में राष्ट्रवाद की बात करें तो भूटानी छात्र भारत, ब्रिटेन, अमेरिका व ऑस्ट्रेलिया पहुँचकर शिक्षा एवं तकनीकी ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं। दिलचस्प बात यह है कि विदेशों में शिक्षा पाने वाले 90 प्रतिशत छात्र भूटान में लौटकर देश के निर्माण में योगदान दे रहे हैं।

भूटान ने दुनिया की विकास संबंधी सोच

को एक नया नेतृत्व देने के लिए एक छोटा सा कदम तब भी उठाया था जब वहाँ के चौथे राजा 'जिग्मे सिग्मे ठांगचुक' ने वर्ष 1972 में 'ग्रोस नेशनल हैप्पीनेस' की बात कही। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि विकास का मेरा यह इंडेक्स पश्चिम के भौतिक विकास पर आधारित 'कुल राष्ट्रीय उत्पाद' (जीडीपी) के विरोध में तथा गौतम बुद्ध के आध्यात्मिक मूल्यों के समानान्तर है। उल्लेखनीय है कि भूटान एक बुद्धिष्ट राष्ट्र है। उस समय विश्व ने उन्हें अनसुना किया लेकिन वे अधिक समय तक ऐसा नहीं कर पाए। अंततः वर्ष 2011 में संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा ने प्रस्ताव पारित कर इसे दुनिया भर के एजेंडे में शामिल किया।

वर्ष 2016 में भूटान के राजा जिग्मे खेसर नामग्येल वांगचुक के यहाँ जब भविष्य के राजा ने जन्म लिया जो राजा वांगचुक और जेटसन पेया की पहली संतान है। तो पूरे भूटान ने अपने प्यारे राजकुमार के स्वागत में 1,08,000 से भी अधिक पौधों का रोपण किया। वह भी तब जब इस इकोफ्रेंडली देश के कुल भू-भाग का 70 प्रतिशत हिस्सा पहले से ही पेड़ों से ढका है।

वर्ष 2015 में 'सोशल फोरेस्ट्री डे' के मौके पर भूटान कुछ अलग करना चाहता था। वह चाहता था कि पूरी दुनिया पर्यावरण की अहमियत को समझे। इसके लिए उन्होंने अपने ही एक पुराने रिकॉर्ड को तोड़ने की ठानी। उनका रिकॉर्ड था एक घंटे में सबसे ज्यादा पेड़ लगाने का। उस दिन भूटान के 100 नौजवानों की एक टीम ने मिलकर 49,672 पेड़ लगाए, वह भी महज एक घंटे में। इसके साथ ही वर्ल्ड रिकॉर्ड बना दिया और पिछले रिकॉर्ड के मुकाबले 10,000 पेड़ ज्यादा लगाए और 'गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड' में नाम दर्ज करवाया।

भूटान पर्यावरण के लिए ऐसे ही दुनिया भर में नहीं जाना जाता इसके पीछे इस देश के लोगों का कठोर परिश्रम, समर्पण और कड़े नियम भी है।

भूटान विश्व का पहला राष्ट्र है जिसने वर्ष 1999 में ही प्लास्टिक एवं पॉलिथीन आइटम पर पूर्णतः प्रतिबंध लगा दिया। वर्ष 1729 में तम्बाकू के खिलाफ कानून बनाया एवं 2004 में धूम्रपान को पूरे देश में प्रतिबंधित कर भूटान विश्व का पहला देश है जो पूर्णतः स्मोक फ्री बना।

भूटान की सुंदर तस्वीर के लिए वहाँ की सरकारों को भी श्रेय जाता है। बाजारीकरण के माहौल में भी इस देश की सरकारों ने हमेशा पर्यावरण को वरीयता दी। उनकी नीतियों में इसकी झलक स्पष्ट दिखाई देती है जैसे-भूटान में वन क्षेत्र, किसी भी हाल में 60 प्रतिशत से कम नहीं होगा, जीवाश्म ईंधन के स्थान पर वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों को बढावा, एल.ई.डी. लाईट और इलेक्ट्रिकल पब्लिक ट्रांसपोर्टेशन की दरों में सब्सिडी, पेपरलेस व्यवस्था, ग्रामीण परिवारों को मुफ्त बिजली आदि।

कई लोग भूटान की पर्यावरण की दृष्टि से समृद्धि का कारण वहाँ की कम जनसंख्या को भी मानते हैं, लेकिन ऐसा बिल्कुल भी नहीं है। ऐसे बहुत से देश है जिनकी जनसंख्या भूटान से भी कम है, लेकिन फिर भी पर्यावरण संरक्षण एवं प्रदूषण रहित होने के मामले में वह भूटान से काफी पीछे हैं।

शिक्षा की दीक्षा

❐ बद्री प्रसाद शर्मा

शिक्षा की लेकर दीक्षा तुम
जीवन पथ साकार कर लो
पहले आकर पहले पाकर
ज्ञान की झोली अपनी भर लो

शिक्षा जन्म से मृत्युपर्यन्त
अनवरत अविरल चलती है
जैसा देश वैसा वेश बनाकर
विचार एक सा रखती है।

शिक्षा सीख देकर हम सभी को
पद प्रतिष्ठा नव रोजगार दिलाती है
सत्य-असत्य, अर्थ-अनर्थ का भेद कर
जीवन की राह दिखलाती है।

जिसने शिक्षा ज्ञान को अपनाया
कभी नहीं वह पिछड़ पाया
लीडर प्रोफेसर और कलेक्टर
है सब शिक्षा की ही माया

हे मानव के राजहंस तुम भी
शिक्षा भारती को अपना लो
अपने अज्ञान रूपी अन्धेरे में
ज्ञान के दीपक तुम चमका लो।

रा.बा.उ.मा.वि.
डिग्गी मोहल्ला, ब्यावर, जिला-अजमेर
मो. 8104535392

हाल ही अमेरिका ने कहा कि भूटान जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण संरक्षण जैसे मुद्दों पर एक वैश्विक आदर्श है क्योंकि यह देश जितनी CO_2 का उत्सर्जन करता है, उससे तीन गुना ज्यादा यह अवशोषित कर लेता है। भूटान स्वच्छ ऊर्जा में निवेश कर रहा है और उसका संविधान कहता है कि देश में कम से कम 10 प्रतिशत हिस्से पर जंगल होने चाहिए। भूटान के नागरिकों एवं सरकार ने आर्थिक विकास के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण को भी अपनी प्राथमिकता बनाया।

भूटान राष्ट्र की प्रकृति एवं पर्यावरण संरक्षण हेतु, दृष्टिकोण एवं नीतियाँ भारत ही नहीं वरन् पूरे विश्व के लिए अनुकरणीय है। लेकिन इसके लिए मात्र कठोर नियम नहीं बल्कि नागरिकों का पूर्ण समर्पण एवं परिश्रम भी आवश्यक है।

हाल ही राजस्थान के शिक्षा मंत्री माननीय श्रीमान् गोविंद सिंह जी डोटासरा द्वारा एक अभियान का शुभारंभ किया गया है जिसमें शिक्षा जगत से जुड़े सभी बुद्धिजीवियों एवं विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण से जोड़ने का प्रशंसनीय प्रयास हुआ है। इसके अन्तर्गत राजकीय विद्यालयों में प्रत्येक नव प्रवेश पर एक पौधा लगाने की परंपरा की शुरूआत की गई। हमें ऐसे ही ओर सकारात्मक प्रयासों की आवश्यकता है।

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में पृथ्वी एकमात्र स्थल है, जहाँ जीवन संभव है। पृथ्वी पर जीवन एवं पर्यावरण की उत्पत्ति करोड़ो वर्षों की प्रक्रिया है। वर्तमान में इस सुन्दर ग्रह का अस्तित्व ही संकट में है वो भी मानव की आत्मघाती महत्त्वाकांक्षा एवं नीतियों की वजह से। हमें कोई अधिकार नहीं पृथ्वी के समस्त जीवों से उनके घर को छिनने का।

अतः हमें चाहिए कि पृथ्वी घर के मुखिया की जिम्मेदारी को हम समझें अपने दृष्टिकोण एवं नीतियों में बदलाव लाएँ तथा भूटान एवं इसके नागरिकों को आदर्श के रूप में स्वीकार कर प्रकृति एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए पूर्ण समर्पण एवं परिश्रम के साथ जुट जाएँ। ताकि पृथ्वी अपनी पूर्व संपदा तथा समृद्धि को पुनः प्राप्त कर सके।

व.अ. (विज्ञान), रा.उ.मा.वि., डांडूसर,
बीकानेर (राज.) **मो. 9660727221**

पर्यावरण संरक्षण

जल, थल और स्वास्थ्य के लिए घातक प्लास्टिक

❒ अंकुश्री

शायद ही कोई नदी या तालाब हो, जिसके किनारे प्लास्टिक का कचरा नहीं दिखता हो, शहर से लेकर गाँव तक की छोटी-बड़ी सभी नालियों में प्लास्टिक का कचरा भरा हुआ दिखता है, इसका कारण है प्लास्टिक का हमारे जीवन में रच-बस जाना, ग्रोसरी की दुकान हो या सब्जी की, दवाखाना हो या शराबखाना, दूध का पैकेट हो या दवा की बोतलें, पानी पीने का गिलास हो या चाय की प्याली, सजाने का फूलदान या खाने की थाली-प्लास्टिक का प्रयोग हर जगह दिखाई दे रहा है। हर प्रकार के डिब्बाकरण में प्लास्टिक का उपयोग धड़ल्ले से हो रहा है, यह कहना ज्यादा अच्छा होगा कि प्लास्टिक हर जगह व्याप्त है, हम इसे सर्वव्यापी कह सकते हैं, प्लास्टिक के उपयोग-क्षेत्र की सूची बहुत लम्बी है, इसके आश्चर्यजनक ढंग से सर्वव्यापी होने का प्रमुख कारण इसकी सुलभ उपलब्धता, सुविधाजनक उपयोगिता और कम खर्चीला होना है। लेकिन सारे उपयोग के बावजूद इसमें दो बहुत बड़े ऐब है, पहला पर्यावरण से संबंधित है, जो इसके उच्छीष्ट के विघटन के अभाव से उत्पन्न है, इसका दूसरा ऐब है इसमें पाए जाने वाला रासायनिक तत्व।

विघटित नहीं हो पाने और रसायन से शरीर को नुकसान पहुँचने से इतने उपयोगी प्लास्टिक से स्थिति इतनी दुखद बनी हुई है, प्लास्टिक की उपयोगिता से प्रकृति में उत्पन्न इसके नुकसान के कारण इसे बुरी नजर से देखा जाता है। इसके संसर्ग में आने पर भोजन अथवा पेय पदार्थों में रासायनिक बदलाव आ जाता है। जो स्वास्थ्य के लिए नुकसानदायक है और जिसका काफी दूरगामी कुप्रभाव पड़ता है। इसके रासायनिक ऐब से बहुत सारे पढ़े-लिखे लोग भी अवगत हैं, फिर भी वे इसका धड़ल्ले से उपयोग करते हैं, जो उनकी मजबूरी नहीं, लापरवाही है।

बहूपयोगी मगर नुकसानदेह प्लास्टिक पोलीमर की खोज सन् 1835 ई. में हो गई थी किन्तु सन् 1909 ई. में बेल्जियम मूल के अमेरिकी वैज्ञानिक हेनड्रिक बेकलैंड द्वारा बेकेलाइट की खोज के बाद इसकी उपयोगिता बढ़ गई और प्लास्टिक युग की शुरूआत हो गई, हल्का, टिकाऊ और इच्छित आकार में ढाले जाने के गुण के कारण प्लास्टिक का बहुआयामी उपयोग बहुत ही तेजी से बढ़ा। लकड़ी, पत्ता, मिट्टी, कागज, कपड़ा, जूट, धातु, काँच, रूई आदि से तैयार की जाने वाली उपयोगी सामग्रियों का निर्माण प्लास्टिक से होने लगा, कागज, कपड़ा और जूट की थैलियों की जगह प्लास्टिक की थैलियों ने ले ली, काँच और मिट्टी की जगह प्लास्टिक की शीशी, बोतल, मर्तवान आदि बन गए, विभिन्न प्रकार के फर्नीचर, खिड़की-दरवाजे आदि लकड़ी के बदले प्लास्टिक के बनने लगे, यहाँ तक कि कपड़ा उद्योग में रूई और रेशम की जगह प्लास्टिक जाति के नायलॉन, टेरीलीन आदि का उपयोग होने लगा। सूती कपड़ों की अपेक्षा सिंथेटिक कपड़ों का रखरखाव आसान होने से कपड़ा उद्योग में इसका धड़ल्ले से प्रयोग होने लगा। इन कपड़ों के आ जाने से सूती कपड़ों का प्रयोग कम होने लगा और कपड़ा बाजार में प्लास्टिक से बने कपड़ों का प्रचलन तेजी से बढ़ गया। अब धीरे-धीरे लोगों को यह पता चल चुका है कि प्लास्टिक के पात्रों में रखे भोज्य और पेय पदार्थ हो या सिंथेटिक कपड़े-इनका उपयोग मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक है, जानते हुए भी लोगों द्वारा प्लास्टिक का विभिन्न रूपों में प्रयोग किया जा रहा है।

प्राचीनकाल से भोजन परोसने के लिए पलाश, महुआ, साल, कटहल, केला आदि की पत्तियों से बने पत्तल का उपयोग होते रहा था, प्रकृति से जुड़े इन पदार्थों का उपयोग प्लास्टिक की तरह स्वास्थ्य के लिए हानिकारक नहीं था। कुछ लोग आज भी पत्तल का ही उपयोग करना पसंद करते हैं, दक्षिण भारत और अन्य कई जगह आज भी केला के पत्ते पर भोजन परोसा जाता है। बड़े-बड़े होटलों में स्टील के प्लेट तो दिए जाते हैं, मगर भोजन परोसा जाता है केले के पत्ते पर ही, इससे भोजन की शुद्धता बनी रहती है। पत्तल पर भोजन करना सामाजिक अर्थ व्यवस्था का एक हिस्सा है। पत्तल उद्योग में लगे हजारों लोगों को इससे संबल प्राप्त हो जाता है। ग्रामीणों को रोजगार मिल जाना बहुत बड़ी उपलब्धि है। पत्तल-निर्माण के कार्य में ग्रामीण और आदिवासी परिवारों में पुरुषों के साथ-साथ महिलाएँ भी लगी रहती हैं उन्हें पत्तियाँ तोड़ कर लाने, उनसे पत्तल बनाने और बने पत्तल को बाजार में जाकर बेचने का काम मिल जाता है। झारखंड और छत्तीसगढ़ जैसे आदिवासी बहुल क्षेत्रों में पत्तल का निर्माण एक बहुत बड़ी उपलब्धि और आदिवासियों की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने का प्रमुख साधन है। पत्तल के उपयोग का सबसे बड़ा लाभ प्लास्टिक की तुलना में स्वास्थ्य पर इसका सकारात्मक प्रभाव है। अपनी सोच को थोड़ा मजबूत और संकल्पित कर लिया जाए तो प्लास्टिक के पत्तल आदि का उपयोग बंद करना कोई बड़ी बात नहीं है। आरंभ के कुछ दिनों तक भले अटपटा लगे, लेकिन जल्द ही प्राकृतिक रूप से उत्पन्न पत्तों से बने पत्तलों का उपयोग पूर्ववत लोकोपयोगी हो जाएगा।

छोटे होटलों और ढाबों की संख्या हजारों नहीं, लाखों में है, जहाँ प्लास्टिक के कप और गिलास का उपयोग बेरोक-टोक हो रहा है, कप, गिलास, थाली, थेला आदि के रूप में प्लास्टिक का नित्य जो उपयोग बढ़ रहा है, उससे हम सभी वाकिफ हैं, शादी-प्रीतिभोज, पूजा-पाठ, जन्म-मरण जैसे आयोजनों में प्लास्टिक के कप, गिलास और थाली का धड़ल्ले से उपयोग हो रहा है। उपयोग से पूर्व इन्हें धोया नहीं जाता। इससे इनमें सटा रसायन सीधे पेट में चला जाता है। प्लास्टिक के इन पात्रों में भोजनादि, खासकर गरम पदार्थ रख देने से उसमें रासायनिक गंध और स्वाद का असर स्पष्ट रूप से आ जाता है। प्लास्टिक की रंगीन थैलिया तो स्वास्थ्य के लिए और भी अधिक खतरनाक हैं, प्लास्टिक को रंगीन बनाने के लिए घातक रसायनों का उपयोग किया जाता है। इसलिए उन

थैलियों में रखी खाद्य वस्तुएँ रसायनों के संसर्ग में आकर विषैली हो जाती है। इसलिए प्लास्टिक के इन पात्रों के उपयोग का स्वास्थ्य पर बहुत ही बुरा असर पड़ता है। गिलास, कप, प्लेट आदि के रूप में प्रयोग करने के बाद इसे फैंक दिया जाता है, जो हवा के साथ उड़ कर चारों तरफ फैल जाता है। हल्का होने के कारण यह ऐसी जगह भी पहुँच जाता है, जहाँ इसका प्रयोग नहीं किया गया हो, इसके साथ यह सबसे बड़ी विसंगति है।

पर्यावरण के लिए खतरनाक और स्वास्थ्य के लिए नुकसानदायक प्लास्टिक के उपयोग पर रोक लगाने के नीतिगत निर्णय से सभी सहमत हैं, मगर व्यवहार में इसकी रोकथाम नहीं हो पाई है। एक अन्तरराष्ट्रीय समझौता 'मैटिटाइम पॉल्यूशन ट्रीटी' के अनुसार सन् 1994 से ही समुद्रों तथा महासागरों में प्लास्टिक का कचरा फेंकने पर प्रतिबंध है, किन्तु कानून बना देने मात्र से किसी समस्या का समाधान नहीं हो पाता, प्लास्टिक के निर्माण, इसके उपयोग और कचरा फेंकने सम्बन्धी कानून का हश्र भी यही हो रहा है, इसके लिए हर व्यक्ति को स्वेच्छा से आगे आना होगा लेकिन आगे लाने का कार्य पढ़े-लिखे और बुद्धिजीवियों द्वारा ही संभव है।

सार्वजनिक उपयोग की तरह प्लास्टिक के पुनुर्पयोग की व्यवस्था भी एक गंभीर समस्या है, विघटन और पुनुर्पयोग नहीं हो पाने के कारण कचरा के रूप में यह जिस तरह हमारी धरती और पर्यावरण को प्रभावित कर रहा है, वह आने वाले दिनों के लिए बहुत ही खतरनाक साबित होगा, आज भी यह एक विकराल समस्या का रूप ले चुका है। हालांकि पुनुर्पयोग इसका विकल्प नहीं है, क्योंकि जहाँ इसके पुनुर्पयोग की सुविधा है, वहाँ की स्थिति और भी खराब है। इसकी रिसाइक्लिंग के दौरान जो गैसें निकलती हैं, वे स्वास्थ्य के लिए अति घातक है। इसलिए इसके पुनुर्पयोग की बात सोचना सर्वथा अनुपयुक्त और अव्यावहारिक है।

अनेक गाँवों और कई शहरों में भी नदियों और तालाबों का जल पीने और स्नान के लिए प्रयुक्त होता है, नदी और तालाब हमारी अर्थ-व्यवस्था और दैनिक जीवन का प्रमुख पहलू है। पटना, कोलकाता, वाराणसी, कानपुर, लखनऊ, इलाहाबाद जैसे अनेक बड़े-बड़े शहर नदी के किनारे बसे हुए हैं। इन शहरों की आबादी अधिक होने से नदी का प्रदूषण भी अधिक होता है और प्लास्टिक के कचरे से नदी नाले भरे होते हैं। प्लास्टिक के कचरे के कारण नदियों और तालाबों का जल अशुद्ध हो गया है, प्लास्टिक स्वयं तो गल नहीं पाता, अपने आसपास यह दूसरे कचरों को भी जमा कर लेता है। इससे प्लास्टिक बहुल क्षेत्र में प्रदूषण की विकरालता सहज अनुमान्य है। नदियों की सतह पर तैरते प्लास्टिक तक ही खतरा नहीं है, मुख्य खतरा तो प्लास्टिक का पानी में भीग कर जल-स्रोतों की तलहटी तक ही खतरा नहीं है, मुख्य खतरा तो प्लास्टिक का पानी में भीग कर जल स्रोतों की तलहटी में जाकर बैठ जाना है, नदियों या तालाबों की सतह अथवा तलहटी में प्लास्टिक के कचरा के साथ-साथ दूसरे विजातीय पदार्थ भी जमा हो जाते हैं और इस कारण वहाँ बजबजाती हुई गंदगी का साम्राज्य हो जाता है। नालियों में गिरे-पड़े प्लास्टिक के कारण फैली गंदगी को देखकर हम सहज ही नदियों और तालाबों की तलहटी में प्लास्टिक के कारण फैली गंदगी का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है।

धरती पर प्रतिवर्ष लाखों टन प्लास्टिक कचरा उत्पन्न होने का अनुमान है। अकेले चीन में 160 लाख टन से अधिक प्लास्टिक कचरा निकलता है। भारत में इसकी मात्रा 45 लाख टन प्रति वर्ष है। प्लास्टिक को पूर्ण रूप से विघटित होने में सैंकड़ों वर्ष लग जाते हैं। जैव विघटनीय नहीं होने के कारण प्लास्टिक के कचरा का हर तरफ अंबार लगता जा रहा है। जो पर्यावरण के लिए एक गंभीर समस्या बन चुका है और साथ ही स्वास्थ्य के लिए भी यह हानिकारक होते जा रहा है। प्लास्टिक का कचरा नदियों और तालाबों में जाम हो जाने के कारण मछलियों और अन्य जलीय जीवों का जीवन प्रभावित हो गया है। यही स्थिति समुद्र के किनारे और अंदर रहने वाले जलीय जीवों की भी है। जल में तैरते प्लास्टिक को जलीय जीव निगल जाते हैं। इसका असर उनके स्वास्थ्य पर पड़ता ही है। ऐसे जीव को खाने वाले मनुष्य का स्वास्थ्य भी प्रभावित होता है। मछलियाँ और जलीय जीव ही नहीं, गायें और बकरियाँ भी प्लास्टिक की थैलियाँ बड़े चाव से खाने लगी है। प्लास्टिक की ये थैलियाँ ऐसे मवेशियों के पेट में जमा हो जाती है और पाचनतंत्र रसायनों का इस पर प्रभाव शुरू होता है। जिससे जानवरों में कई प्रकार की बीमारियाँ होती ही है, ऐसे बीमार जानवरों के दूध या माँस का प्रयोग करने वालों पर भी इसका सीधा नुकसानदायक प्रभाव पड़ता है।

पानी या मिट्टी में वर्षों तक रहने के बावजूद गल नहीं पाने के कारण खेतों में प्लास्टिक का कचरा बढ़ गया है। इससे खेत की उर्वरता प्रभावित हो ही रही है, चारों तरफ इसका कचरा भी बढ़ता जा रहा है। इस कारण चारों तरफ गंदगी का साम्राज्य-सा हो गया है, जो पर्यावरण के लिए अति घातक और स्वास्थ्य के लिए अति हानिकारक है।

प्लास्टिक के खतरों से अवगत होने के बावजूद कुछ लोग इसके पक्ष में अपना तर्क प्रस्तुत करते हैं, ऐसे लोगों द्वारा कहा जाता है कि प्लास्टिक के उपयोग से वृक्षों की कटाई कम होती है, जो पर्यावरण के लिए हितकर है। लेकिन ऐसी बातें क्षणिक आवेशित है। दूरगामी प्रभावों के बारे में सोचने वाले प्लास्टिक के पक्ष में अपनी राय नहीं दे सकते। पेड़ लगा कर उसकी कटाई से उत्पन्न स्थिति से निपटा जा सकता है, मगर प्लास्टिक के उपयोग से उत्पन्न समस्या का समाधान बिल्कुल कठिन है। प्लास्टिक के बहु-उपयोग का दुष्परिणाम ही है कि धरती बंजर बनती जा रही है और नदियां प्रदूषित होती जा रही हैं नदियों और नालों में जल प्रवाह बाधित हो गया है इससे वहाँ गंदगी बढ़ती जा रही है और उस गंदगी का रूप भी विकराल होता जा रहा है। इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि सिलसिला यदि इसी तरह जारी रहा तो बंजर धरती का क्षेत्रफल बढ़ता जाएगा और जल निकासी भी एक वृहत् समस्या का रूप ले लेगी, तब क्या वृक्ष और क्या वन? बिना वृक्ष या वन के प्लास्टिक से भरी इस धरती पर रहने वालों के स्वास्थ्य की स्थिति की परिकल्पना सहज ही की जा सकती है।

संकल्प हमें लेना होगा
प्लास्टिक को दूर भगाने का।
सही सपना तभी होगा
पूरा पर्यावरण को बचाने का

8, प्रेस कॉलोनी, सिदरौल, नामकुम,
राँची (झारखण्ड)-834010
मो: 8809972549

श्रेष्ठ जीवन

कर्त्तव्य कर्म

❒ सतीश चन्द्र श्रीमाली

प्रकृति में परिवर्तन होता रहता है, यह परिवर्तन एक निश्चित काल खण्ड पर होना हमें दृष्टिगोचर होता है। तब ऐसा प्रतीत होता है, मानों प्रकृति भी अपने नियमों से जुड़ी हुई है जिसकी पालना वह अनवरत रूप से कर रही है। इसी से सृष्टि का संचालन निर्बाध गति से हो रहा है। अतः इसमें हमें एक व्यवस्था दृष्टिगोचर होती है। शायद इसी से प्रेरित होकर मनुष्य ने अपने जीवन के प्रत्येक पक्ष को सुव्यवस्थित बनाए रखने के लिए कुछ सिद्धांतों का प्रतिपादन किया। जिन्हें 'संस्कार' कहा गया जो मानव को मानवीय मूल्यों से परिपूर्ण करते हैं, चरित्रवान बनाते हैं। इनकी पूर्णरूपेण पालना से ही व्यक्ति अपने जीवन के प्रत्येक पक्ष में सुव्यवस्थित प्रगति की प्राप्ति निष्कलंक रहकर करता है।

चरित्रवान व्यक्ति प्रत्येक कार्य को उचित व्यवहार से करना ही उत्तम मानता है। उचित व्यवहार 'नियमों' से ही नियंत्रित होते हैं। अतः प्रत्येक कार्य का सुव्यवस्थित सम्पादन करने हेतु नियमों का निर्धारण हुआ। ये सम्पूर्ण राष्ट्र के संचालन हेतु कार्यालयों के कार्यों को करने अथवा व्यक्तिगत जीवन में होने वाले व्यवहार के हों, बगैर नियमों की पालना के सुव्यवस्थित होने सम्भव नहीं होते हैं। कार्यों को विधि अनुसार करने के विधानों का उल्लेख संविधान में तथा प्रत्येक विभाग द्वारा बनाई गई नियमों की पुस्तकों में उल्लेखित किया गया है ताकि व्यक्ति उनका स्वाध्याय करके अपने प्रत्येक कर्त्तव्य कर्म को करें अर्थात् ये ग्रन्थ अथवा शास्त्र सदैव उनके लिए मार्गदर्शक की भूमिका में तत्पर रहते हैं।

नियम स्वतःस्फूर्त नहीं हैं अतः नियमों की पालना करने वाले व्यक्ति का चरित्र श्रेष्ठ हो आसक्ति से रहित हो तभी सुव्यवस्था सम्भव होती है। चूँकि वे दूसरों के लिए आदर्श बनते हैं। इस प्रसंग में श्रीमद्भागवत गीता में कहा गया है–

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।।

(3/21)

अर्थात् श्रेष्ठ पुरुष जो जो आचरण करता है, अन्य पुरुष भी वैसा-वैसा ही आचरण करते हैं। वह जो कुछ प्रमाण कर देता है, समस्त मनुष्य समुदाय उसी के अनुसार बरतने लग जाता है।

इसके विपरीत विकारों से युक्त व्यवहार करने वालों के सन्दर्भ में कहा गया है कि–

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्।।

(96/23)

अर्थात् जो व्यक्ति शास्त्र विधि को त्याग कर अपनी इच्छा से मनमाना आचरण करता है, वह न सिद्धि को प्राप्त होता है, न परम गति को और न सुख को ही।

अतः हमें बार-बार चेताया जाता है कि हमें शास्त्र विहित कर्त्तव्य कर्म ही करने चाहिए- 'नियतं कुरु कर्म त्वं' (3/8)। हमारे लिए नियमों की पुस्तकों की जानकारी सदैव रखनी ही कल्याणकारी है, व्यवस्था को देने वाली है। ये ही हमें कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य का बोध करवाती है। इस प्रसंग में कहा गया है-

तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ।
ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्मकर्तुमिहार्हसि।।

(16/24)

अर्थात् इससे तेरे लिए इस कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण है। ऐसा जानकर शास्त्र विधि से नियत कर्म ही करने योग्य है।

अतः नियमों की पालना से ही सुव्यवस्था संभव है, इसलिए हमें प्रत्येक कार्य को करने से पूर्व उन्हें सम्पादित करने हेतु बनाए गए नियमों का अध्ययन अवश्य करना चाहिए एवं तदनुसार ही कार्य करना चाहिए। यह भी सत्य है कि व्यक्ति कर्त्तव्य कर्म तभी कर पाता है जब वह आसक्ति से रहित हो अर्थात् उसके कर्म में लेशमात्र भी स्वयं के लिए स्वार्थ भावना न हो। तभी उसका जीवन श्रेष्ठ व अनुकरणीय होता है। इस प्रसंग में कहा गया है-

तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर।
असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पुरुष।।

(3/19)

अर्थात् तू निरन्तर आसक्ति से रहित होकर सदा कर्त्तव्य कर्म को भली भाँति करता रह। क्योंकि आसक्ति से रहित होकर कर्म करता हुआ मनुष्य परमात्मा को प्राप्त हो जाता है।

जस्सुसर गेट रोड,
धर्म काँटे के पास बीकानेर (राज.)
मो: 9414144456

सूचना

● 'शिविरा' मासिक पत्रिका में रचना भेजने वाले अपनी रचना के साथ व्यक्तिगत परिचय यथा– नाम, पता, मोबाइल नंबर, बैंक का नाम, शाखा, खाता संख्या, आईएफएससी. नंबर एवं बैंक डायरी के प्रथम पृष्ठ की स्पष्ट छायाप्रति अवश्य संलग्न करके भिजवाएँ। ● कुछ रचनाकार एकाधिक रचनाएँ एक साथ भेजने पर एक रचना के साथ ही उक्त सूचनाएँ संलग्न कर दायित्वपूर्ति समझ लेते हैं। अतः अपनी प्रत्येक रचना के साथ अलग से पृष्ठ लगाकर प्रपत्रानुसार अपना विवरण अवश्य भेजें। इसके अभाव में रचना के छपने एवं उसके मानदेय भुगतान में असुविधा होती है। ● कतिपय रचनाकार अपने एकाधिक बैंक खाता लिखकर भिजवा देते हैं और उक्त खाते का उपयोग समय-समय पर नहीं करने के कारण वह बंद भी हो चुका होता है। परिणामस्वरूप उक्त मानदेय खाते में जमा नहीं हो पाता। जिसकी शिकायत प्राप्त होती है। किसी रचनाकार के एकाधिक खाते हैं तो रचनाकार अपने SBI बैंक खाते को प्राथमिकता देकर अद्यतन व्यक्तिगत जानकारी उपर्युक्तानुसार प्रत्येक रचना के साथ अलग-अलग संलग्न करें।

–वरिष्ठ संपादक

बाल दिवस विशेष

बाल-साहित्य में नवाचार

❒ डॉ. ऋषि मोहन श्रीवास्तव

नवाचार से तात्पर्य है- नए प्रयोग, नए कार्य-व्यवहार, नवीन गतिविधियाँ जो आसानी से बच्चों को समझ आ सके। आज पाठ्यक्रम में जो सामग्री है उसे बच्चे सरलता से ग्रहण कर सकें। इसके लिए शिक्षक-शिक्षिकाओं द्वारा नवाचार का प्रयोग किया जा रहा है। नवाचार के लिए नए-नए तरीके, नई गतिविधियाँ, नई पद्धति प्रयोग में लाई जाती है।

निजी प्रकाशकों ने काफी कुछ बाल-साहित्य प्रकाशित किया है वहीं नेशनल बुक ट्रस्ट और चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट ने बच्चों के उपयोगी काफी महत्त्वपूर्ण, सारगर्भित बाल-साहित्य प्रकाशित किया है। नेशनल बुक ट्रस्ट की आकर्षक कवर वाली सचित्र पुस्तकें बच्चों को बहुत लुभाती है। बच्चे इन्हें बड़े चाव से पढ़ते हैं।

पुराने समय में बच्चों के मन में कहानियाँ सुनने का जो चाव था, वह आज के इलेक्ट्रोनिक संचार युग में बदल चुका है। बच्चों के पास एक तरफ पढ़ाई के अतिरिक्त बहुत कम समय है और समय है भी वह उसे लेपटॉप या मोबाइल के साथ गुजारते हैं। दादी, नानी भी अब अपने पोते-पोतियों को कहानियाँ नहीं सुनाते। पोते-पोतियाँ कितनी देर उनसे बतियाते हैं? शायद पाँच-दस मिनट भी उनके पास बैठना उन्हें नहीं भाता। ऐसे में कहानी कहना और सुनना दोनों ही बेमानी हो गया है।

ऐसे बाल-साहित्य की बहुत सारी पत्रिकाएँ चंदामामा, पराग, बाल-सखा जैसी पत्रिकाएँ बंद हो गई हैं। ऐसा भी नहीं है कि सारी पत्रिकाएँ बंद हो चुकी हैं। नंदन, चंपक, हँसती दुनिया, बालवाटिका, बालवाणी, चिरैया जैसी स्तरीय बाल पत्रिकाएँ आज भी प्रकाशित हो रही हैं।

डॉ. श्रीप्रसाद, डॉ. हरिमोहन लाल, शकुन्तला कालरा, डॉ राष्ट्रबन्धु, डॉ. विद्या, बानो सरताज, जाकिर अली, अखिलेश चमन, राजकुमार जैन, राकेश चक्र, चित्रेश, डॉ. सुरेन्द्र विक्रम, निरंकार देव सेवक, डॉ. हरिकृष्ण देवसरे, सूर्य कुमार पाण्डेय, लक्ष्मीनारायण पयोधि, मालती शर्मा, शकुन्तला सिरोठिया, बद्री प्रसाद वर्मा, कीर्ति श्रीवास्तव, राधेलाल नवचक्र, डॉ. चक्रधर नलिन आदि अनेक लेखकों ने बाल-साहित्य पर काफी कुछ रचनाएँ लिखी हैं। यहाँ सभी रचनाकारों के नाम लिए जाना संभव नहीं है। यह एक लम्बी सूची है।

प्रारंभिक-दौर में प्रेमचंद जैसे प्रतिष्ठित कहानी सम्राट ने बच्चों के लिए कई कहानियाँ लिखी हैं - 'ईदगाह' ऐसी ही कहानी है, जिसमें हामिद दोस्तों के साथ मेला देखने जाता है। जहाँ वह दादी के द्वारा दिए हुए पैसों से अपने लिए कुछ नहीं लेता उसे दादी का रोटी सेंकते हुए बार-बार हाथ जल जाने का दृश्य याद आता है। हामिद दादी के लिए रोटी सेकने वाला चिमटा खरीदता है। यह एक प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक कहानी है। इसी तरह, सुमित्रानन्दन पंत, प्रभाकर माचवे जैसे प्रतिष्ठित रचनाकारों ने भी बच्चों के लिए कहानियाँ और कविताएँ लिखी हैं।

बात फिर वहीं आती है आज बाल साहित्य के रूप में बच्चों को ऐसी कौन-सी सामग्री चाहिए जिसे वे खेल-खेल में ग्रहण कर सकें और उन्हें वह तरीका, नवाचार के रूप में पसंद आए।

बच्चों को हम देश के महान क्रांतिकारियों, भगतसिंह, चन्द्रशेखर, राजगुरु, सुभाषचन्द्र बोस आदि की जानकारी देना चाहते हैं तो हमारे शिक्षकों को चाहिए कि वे पूरी तैयारी करें। कार्ड-बोर्ड पर इन क्रांतिकारियों के सम्बन्ध में एक-एक वाक्य लिखें। उनसे सम्बन्धित जानकारी उस वाक्य में होनी चाहिए। यह तरीका भले बहुत सामान्य है किन्तु जब अलग-अलग क्रांतिकारियों के विषय में कार्डस् पर वाक्य होंगे, उन्हें तैयार करने के बाद शिक्षक बच्चों से प्रत्येक क्रांतिकारी के विषय में तैयार कार्डस् को अलग-अलग छाँटने को कहें यह एक परीक्षण होगा, मूल्यांकन होगा, बच्चा अपने ज्ञान के आधार पर अलग-अलग क्रांतिकारियों के जीवन से जुड़े प्रसंगों के कार्ड अलग कर पाता है या नहीं? बच्चा कार्ड अलग कर ले तो अलग-अलग बच्चे से भिन्न-भिन्न क्रांतिकारियों के जीवन प्रसंग पढ़वाएँ, इस तरह बच्चों को क्रांतिकारियों की जानकारी मिलेगी उनका ज्ञान संवर्धन होगा। जिस तरह महापुरुषों के बारे में जानकारी कार्ड्स पर दी जा सकती है। वैसे ही लेखक-कवियों, महापुरुषों नेताओं के चित्र भी कार्ड पर पेस्ट किए जा सकते हैं। इस प्रकार बच्चों को जिस प्रकार की जानकारी देनी हो, उस तरह के प्रोजेक्ट, मॉडल बनाकर भी छात्रों को समझाया जा सकता है। इस विषय में शिक्षक और शिक्षिकाओं को पढ़ाते समय कक्षा में छात्रों के साथ रोजाना ही नित नए नवाचार के प्रयोग करना चाहिए।

इसी तरह भिन्न-भिन्न विषयों की जानकारी से सम्बन्धित कार्ड बच्चों से भी बनवाए जा सकते हैं। बाद में उन्हें बच्चों से अलग-अलग छाँटने के लिए कहा जा सकता है। मान लीजिए बच्चों को साधारण गणित समझाना है तो घटाने व जोड़ने के लिए उनसे ही कुछ चीजें, उनके साथियों को वितरित करवाएँ, वितरित करने के बाद छात्र से पूछें उसके पास क्या शेष रहा? या किस छात्र को उसने कितनी चीजें दीं? इसी तरह विभिन्न गतिविधियों से गणित के ओर भी प्रश्न उन्हें समझाए जा सकते हैं।

कुछ कार्ड्स ऐसे भी बनाए जा सकते हैं जिन पर हमारे प्रतिष्ठित कवियों महादेवी वर्मा, पंत जी, निराला, दिनकर, सुभद्राकुमारी चौहान, बच्चन जी आदि की कविताएँ लिखी जा सकती हैं। कार्डस् पर चार-चार लाइने कविताओं की लिखी जाएँ फिर बच्चों से कहा जाए कि वे सामने रखे कार्डस् से भिन्न-भिन्न कवि की पूरी कविता के कार्ड्स अलग करें। बच्चे पहचान करना शुरू करेंगे किस कवि ने किस प्रकार की रचना लिखी है। बाद में शिक्षक छात्रों को विस्तार से भी संबंधित के विषय में जानकारी दे सकते हैं।

शिक्षक भी बच्चों की जो कोर्स की किताबें हैं उनकी कविताएँ स्वयं गा कर लय में सुनाएँ। ऐसा ही वे बच्चों से करने को कहें। आप देखेंगे कि बच्चों के अंदर कलात्मक-तौर पर एक नई

दृष्टि पैदा होगी। कहानियों को भी शिक्षक बड़े आराम से अभिनयात्मक तौर-तरीके से सुनाएँ तो ऐसा कोई कारण नहीं कि बच्चे शिक्षक द्वारा सुनाई जाने वाली कहानी पर गौर न करें। आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षक-शिक्षिकाएँ भी नवाचार के द्वारा बच्चों को बाल-साहित्य से परिचित करा सकते हैं।

खो-खो का खेल सामान्यतः सब जगह गाँव-शहर में खेला जाता है। जिस बालक-बालिका पर दाव (बारी) आए और उसे उसके बगल वाला व्यक्ति कहें कि कोई कविता की दो लाइनें सुनाए। इसी तरह खो-खो के अन्य खिलाड़ी भी इस प्रक्रिया का पालन करें।

आप देखेंगे कि बच्चों के अन्दर जो झिझक है या कुछ बोलने का संकोच है वह भी दूर होगा। साथ ही उनका ज्ञान-संवर्धन होगा।

आज बच्चों की रुचि कम्प्यूटर और लेपटॉप, मोबाइल के बारे में ज्यादा है। शिक्षक इस दिशा में भी पर्याप्त प्रयास कर सकते हैं। बच्चों को मॉडल और प्रोजेक्ट बनाकर समझा सकते हैं। बाद में बच्चों से भी कहें कि वे उस सम्बन्धित मॉडल या प्रोजेक्ट के बारे में समझाएँ।

बच्चों को बाल साहित्य से परिचित कराना है तो प्रयास होना चाहिए कि खेल-खेल में ओर कम समय में ज्यादा से ज्यादा ज्ञान उन्हें प्राप्त हो। बच्चे आज इन्टरनेट के माध्यम से भी काफी कुछ ज्ञान अर्जित करना चाहते हैं। लेकिन आज अभी पूर्णरूप से बाल-साहित्य के विषय में इतनी जानकारी इन्टरनेट पर उपलब्ध नहीं है।

'नवाचार' का अर्थ है कि तरीके नए हों भले ही ज्ञान पुरानी सभ्यता, संस्कृति और इतिहास से जुड़ा हो। राजनीतिक-हस्तियों, महापुरुषों और इतिहास, भूगोल आदि से सम्बन्धित जानकारी को भी बच्चों के साथ बैठकर शिक्षक-शिक्षिकाओं को शेयर करना होगा। ऐसा न हो कि सिर्फ पाठ्यक्रम के पाठों का वाचन कक्षा में हो। सम्बन्धित पाठ के बारे में पूरी विस्तार से बच्चों के साथ सामूहिक चर्चा आवश्यक है।

आज यह जरूरी नहीं कि आपने बोर्ड पर चार प्रश्न हल करके बच्चों को बतला दिए। आप उसी तरीके के दूसरे सवाल बच्चों से ही बोर्ड पर हल करवाएँ। बच्चों की प्रतिभा पहचानें उसके अनुसार उनके अभिभावकों से चर्चा करें कि आपका बच्चा कुछ अच्छा गाता है या अच्छा अभिनय कर लेता है या उसे नृत्य का शौक है तो उसकी रुचि को भी आप अपनी क्षमता-अनुसार पूर्ण करने की दिशा में प्रयास करें। आज पाँच वर्ष का बच्चा भी अपनी प्रतिभा से बड़े-बड़े लोगों को पीछे छोड़ रहा है। कुछ बच्चों को गणित विषय से डर लगता है कि वे उसे पढ़ने से जी चुराते हैं। ऐसे में किसी घटना के माध्यम से बच्चों को रुपये-पैसों का हिसाब, ब्याज, लाभ-हानि की जानकारी प्रदत्त की जा सकती है।

शिक्षक रोचक तरीके से सिक्कों एवं करेंसी द्वारा भी काफी कुछ गणित के विषय में जानकारी छात्रों को दे सकता है। उसे अपनी कल्पना शक्ति का प्रयोग नवाचार के अन्तर्गत करने का प्रयास निरंतर करना चाहिए।

आज एक बात की बहुत बड़ी आवश्यकता है जितनी भी साहित्यिक एवं गैर-साहित्यिक पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं उनमें कम से कम दो पृष्ठ बाल-साहित्य के लिए अवश्य ही सुरक्षित होना चाहिए ताकि बच्चों को सुगमता से बाल-साहित्य उपलब्ध हो सके।

एस-1,नित्यानंद विला, कमलेश्वर कॉलोनी,
जीवाजीगंज लश्कर, ग्वालियर-474001
मो. 8964963542

बच्चों में आत्म शक्ति का विकास

❐ **सम्पतमल प्रजापति**

यह वह शक्ति है जिसका कोई विकल्प नहीं है। आधुनिक परिवेश में धन को सबसे बड़ी शक्ति माना जा रहा है। बच्चों के माता-पिता सिर्फ धनबल के सहारे इनका भविष्य सुरक्षित मानने की भूल कर रहे हैं। धन कोई स्थिर वस्तु नहीं है यह परिस्थितियों के अनुसार घटता एवं बढ़ता रहता है। जो माता-पिता अपने बच्चों में संघर्षशीलता का गुण पैदा नहीं कर रहे हैं वे उनके संरक्षक नहीं बल्कि शत्रु का कार्य कर रहे हैं। आत्मशक्ति के सामने धनबल कोई महत्त्वपूर्ण नहीं है। यही वास्तविकता है। आत्मशक्ति वह चुंबक है जिसके पीछे धन स्वतः ही खींचा चला आता है। बिखरी हुई बारूद में कोइ शक्ति नहीं होती है उसमें आग लगाने पर थोड़ी सी चमक के साथ समाप्त हो जाती है। इसी बारूद को बन्दूक की नली में भरकर गोली के साथ दागा जाता है तो दुश्मन के प्राणान्त कर देती है।

इस शक्ति के उपयोग के अभाव में बच्चे मानसिक रूप से कमजोर, ऊर्जा शक्ति में कमी, मुरझायें हुए चेहरे के कारण रुग्ण नज़र आता है। शक्ति ही जीवन है। इसके अभाव में जीवन की कल्पना निरर्थक है आज के बचपन की सुरक्षा के लिए माता-पिता रात-दिन चिन्तित है। वे केवल बाहरी खतरों से अपने बच्चों की रक्षा करना चाहते है, जबकि मुख्य दुश्मन तो उन्हे आभास ही नहीं हो रहे है जो कि आन्तरिक है। इनके कारण है मनोविकार एवं मानसिक कमजोरी। ये दोनों ही कारण सिर्फ बच्चों में ही नहीं है बल्कि सम्पूर्ण जीवन की मुख्य समस्या है। इन रोगों को दूर करके ही मनुष्य मात्र सुखी जीवन जी सकता है एवं इन बाहरी खतरों से मुकाबला करके उन्हें परास्त कर सकता है। इस अमोघ हथियार का नाम है मनोयोग। मन को साधना उसकी कमजोरियों को पहचानना एवं दूर करना। यह कार्य कठिन अवश्य है मगर असम्भव नहीं है।

शवासन, वज्रासन, पद्मासन एवं ध्यान को अपनाकर जीवन की सभी समस्याओं का हल कर सकते हैं। इन सबमें एक घण्टे से अधिक का समय नहीं लगेगा। मगर इस घण्टे के कारण बाकी बचे 23 घण्टे आनन्दपूर्वक जी सकते हो। जीवन परिवर्तन के लिए सिर्फ इतना परिवर्तन कोई मायने नहीं रखता है। आपके अन्दर श्रद्धा एवं संकल्पशक्ति का विकास होना चाहिए। इन दोनों के सहारे तुम वज्र बनकर इस जीवन की सभी समस्याओं को परास्त कर सकते हो। मुझे ही देखो मेरी उम्र भी इसमें बाधक नहीं है। मेरा आर्थिक पक्ष की कोई समस्या नहीं है। मैं अकेला नहीं हूँ और भी बहुत सारे व्यक्ति आपके स्वागत के लिए इस नई जिन्दगी में तैयार खड़े हैं। देरी सिर्फ आपके खड़े होने की है और कुछ भी नहीं है। यही मेरा जाग्रति अभियान है।

हा.नं., 62, रतनगढ़ रोड, वार्ड नं. 11,
पो. छापर, तह. सुजानगढ़, जिला चूरू
मो. 8302842981

शिक्षक एवं समाज

शिक्षक की भूमिका

❒ कुमार जितेन्द्र

शिक्षक एक गौरवमयी शब्द है जिसमें पूरी धरा पर समाहित सब शिक्षक किसी न किसी रूप में भूमिका निभाते हैं। इंसान अगर कहीं भी सीखना चाहे तो इस धरा पर जो भी दिखाई दे रहा है, आसपास के वातावरण में जो घटित हो रहा है वह कुछ न कुछ सीख सकता है। बस जरूरत है सीखने वाले में जुनून, उत्साह, जिज्ञासा हो परन्तु वर्तमान में सब कुछ बदल गया है। वर्तमान में जरूरत है सच्चे शिक्षक की जो आधुनिकता के वातावरण से भविष्य की राह को आसान बना सके–

आइए मित्रों जानते हैं शिक्षक के विभिन्न रूपों के बारे में–

1. परिवार के रूप में शिक्षक की भूमिका– एक बच्चा जब गर्भ में पल रहा होता है तब से ही उसे एक अच्छे शिक्षक की आवश्यकता होती है और वह मुख्य भूमिका सबसे सच्चे शिक्षक के रूप में एक माँ निभाती है। माँ उस समय सही खानपान एवं देखभाल से अपने शिशु को स्वच्छ व सुरक्षित जन्म देती है। अगर माँ उस समय सही ध्यान नहीं देती तो शिशु मानसिक व शारीरिक रूप से कमजोर जन्म लेता है जिससे भविष्य में शिशु को विभिन्न परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है तथा माँ के बाद परिवार में शिक्षक के रूप में एक पिता की भूमिका होती है जो अपने बच्चों को सही समय पर अच्छे संस्कार देते रहें जिससे बच्चों का शारीरिक व मानसिक विकास तेजी से हो सके। एक बालक के सुंदर, उज्ज्वल भविष्य के लिए अच्छे संस्कारों का समावेश होना अत्यावश्यक है। परिवार द्वारा समय-समय पर दिए गए संस्कारों का प्रभाव बालक के जीवन पर बहुत गहरी छाप छोड़ देता है। वर्तमान में बढ़ती संस्कारों की कमी की वजह से बालक अपनी राह से भटक रहे हैं। गलत राह की ओर तेजी से कदम उठाए जा रहे हैं जो भविष्य के लिए चिंता का विषय है। सभी माता-पिता को समय रहते अच्छे कदम उठाने होंगे तथा अपने बच्चों को

अच्छे संस्कारो से प्रेरित करना होगा।

2. विद्यालय के रूप में शिक्षक की भूमिका–बालक अपने परिवार से अच्छे संस्कार लेकर एक दूसरे परिवार, विद्यालय परिवार में प्रवेश करता है। विद्यालय में बालक को शिक्षा-दीक्षा देने का महत्त्वपूर्ण कार्य शिक्षक करता है। विद्यालय में शिक्षक बालकों को एक पक्के घड़े की तरह मजबूत करके उसको भविष्य के लिए सही राह दिखाते हैं। विद्यालय में शिक्षक समय-समय पर शारीरिक व मानसिक और सामाजिक रूप से बालकों में जागरूकता की सीख देते हैं। भविष्य में बालक की कौनसी राह आसान होगी और कौनसी राह कठिन इन सबकी जानकारी शिक्षक उपलब्ध करवाता है। बालक के उज्ज्वल भविष्य के लिए शिक्षक एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए हम सभी मिलकर एक अच्छे शिक्षक के रूप में विद्यालय में भूमिका निभाएँ। सरकार को भी ऐसी शिक्षा प्रणाली बनानी चाहिए जिससे शिक्षक बालकों को एक अच्छी सीख दे सकें।

3. समाज के रूप में शिक्षक की भूमिका–बालक जब विद्यालय से शिक्षा पूरी कर समाज में प्रवेश करता है। तब समाज उस बालक का बेसब्री से इंतजार कर रहा होता है। बालक के लिए उसके सामने कई प्रकार के प्रश्न खड़े हो जाते हैं अगर बालक ने विद्यालय में सही शिक्षा हासिल की है तो वह समाज को नई ऊँचाइयों तक पहुँचा सकता है। समाज को एक नई दिशा प्रदान कर सकता है। समाज में फैली विभिन्न प्रकार की बुराइयों को समाप्त करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकता है। दूसरी तरफ देखें तो बालक ने सही शिक्षा हासिल नहीं की है तो बालक समाज में फैली कुरीतियों में डूब जाता है। वह आगे नहीं बढ़ पाता। अगर समाज विकसित व कुरीतियों से मुक्त है तो वह बालकों को एक अच्छी सीख देने में सहयोग कर सकता है। इसलिए आओ हम सब मिलकर एक अच्छे समाज का निर्माण करें जो आने वाले भविष्य को उज्ज्वल बनाएँ।

4. प्रकृति के रूप में शिक्षक की भूमिका–बालक के मानसिक व शारीरिक विकास में गति प्रदान करने के लिए प्रकृति भी एक शिक्षक के रूप में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बालक के आसपास का वातावरण एक महत्त्वपूर्ण प्रभाव डालता है। बालक को आसपास जैसा वातावरण देखने को मिलेगा या बालक जिस वातावरण में रह रहा है उसका प्रभाव उस पर निश्चित रूप से पड़ता है। वैज्ञानिक अध्ययन के मुताबिक वातावरण का प्रभाव बालक के जीवन में गहरी छाप छोड़ देता है। वर्तमान समय में वातावरण इतना दूषित हो गया है जिस पर नियंत्रण पाना मुश्किल हो गया है। जिससे बालक का शारीरिक और मानसिक विकास कमजोर होता जा रहा है। बढ़ते आधुनिकीकरण के वातावरण में विपरीत परिणाम देखने को मिल रहे हैं। जो बालको को अपनी चपेट में ले रहे हैं। आओ हम सभी मिलकर अपने आसपास एक अच्छा वातावरण विकसित करें जो बालक के सुन्दर भविष्य के लिए हो।

साईं निवास मोकलसर,
तहसील-सिवाना,
जिला-बाड़मेर (राज.)-344043
मो. 9784853785

आदेश-परिपत्र : नवम्बर, 2019

● 1. पिछले वर्षों से सम्बन्धित अधिक अदायगियों की वसूली को नए राजस्व लेखामद 911 में जमा करवाने बाबत। ● 2. माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित विभागीय पत्रिका शिविरा मासिक की वार्षिक चन्दा दरों में संशोधन करने हेतु। ● 3. पीईईओ के अधीन विद्यालयों में शाला दर्पण पोर्टल पर दर्ज पदों के कारण वेतन आहरण में आ रही दिक्कतों के निराकरण हेतु निर्देश। ● 4. शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित 33वीं राज्यस्तरीय शिक्षक क्रीड़ा एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता 2019-20 विभिन्न स्तरों पर प्रतियोगिता आयोजन के संबंध में।

1. पिछले वर्षों से सम्बन्धित अधिक अदायगियों की वसूली को नए राजस्व लेखामद 911 में जमा करवाने बाबत।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा-माध्य/बजट/बी-4/25587/2019-18 दिनांकः 01.10.2019 ● विषयः पिछले वर्षों से सम्बन्धित अधिक अदायगियों की वसूली को नए राजस्व लेखामद 911 में जमा करवाने बाबत। ● परिपत्र।

वित्त विभाग के परिपत्र क्रमांक प.8(22) वित्त-1(1)/आय व्यय/2000 पार्ट-III जयपुर दिनांक 03.07.2018 के अनुसरण में माध्यमिक शिक्षा विभाग के लिए वित्त विभाग द्वारा अपने पत्रांक प.6(4) वित्त-1(1) आ.व्यय/2018 दिनांक 12.06.2019 के द्वारा नीचे लिखे अनुसार लेखामद खोल दिया गया है-

माँग संख्या- 24
2202-सामान्य शिक्षा
02- माध्यमिक शिक्षा
911-घटाइए अधिक अदायगियों की वसूलियाँ
(01)-माध्यमिक शिक्षा विभाग के माध्यम से
(01)-माध्यमिक शिक्षा
98-घटाइए (राज्य निधि) (दत्तमत)

अतः सभी अधीनस्थ आहरण वितरण अधिकारियों को उपर्युक्त के क्रम में निर्देशित किया जाता है कि भविष्य में अधिक भुगतानों की प्राप्त वसूलियों को जिन्हें पूर्व में राजस्व मद 0202-01-102-(03)-(02) में जमा कराया जाता था, के स्थान पर लेखामद 2202-02-911-(01)-(01)-98 में जमा करवाया जाना सुनिश्चित करावें।

गत वर्षों की अधिक भुगतानों की वसूलियाँ अब निम्नानुसार जमा कराई जानी हैः-

पूर्व में जमा कराया जाने वाला राजस्व मद	नवीन राजस्व मद जिसमें जमा करवाया जाना है
0202-शिक्षा, खेल, कला तथा संस्कृति	माँग संख्या-24
01- सामान्य शिक्षा	0202- सामान्य शिक्षा
102- माध्यमिक शिक्षा	02-माध्यमिक शिक्षा
(03)- अन्य प्राप्तियाँ	911- घटाइए अधिक अदायगियों की वसूलियाँ
(02)- अधिक भुगतानों की वसूलियाँ	(01)-माध्यमिक शिक्षा विभाग के माध्यम से (01)- माध्यमिक शिक्षा 98- घटाइए (राज्य निधि) (दत्तमत)

राजस्व मदों में राशि जमा कराने के लिए सम्बन्धित कार्यालय/विद्यालय की **IFMS ID** उसकी **Login ID** होगी तथा पासवर्ड **Sun@123** रहेगा। अतः तदनुसार ई-ग्रास का चालान जनरेट करते हुए राशि राजस्व मदों में जमा कराया जाना सुनिश्चित करावें।

● **(ब्रह्मदत्त शर्मा),** वित्तीय सलाहकार, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

2. माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित विभागीय पत्रिका शिविरा मासिक की वार्षिक चन्दा दरों में संशोधन करने हेतु।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-माध्य/प्रकाशन/5680/2019-20/शिविरा सदस्यता शुल्क/2 दिनांक 07-10-2019 ● आदेश

माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित विभागीय पत्रिका शिविरा मासिक की वार्षिक चन्दा दरों में संशोधन करते हुए, वार्षिक चन्दा दरें निम्नानुसार निर्धारित की जाती है।

क्र.सं.	विवरण	संशोधित दरें (वार्षिक आधार प्रति कार्यालय/संस्था/व्यक्ति) रुपये
1.	समस्त राजकीय विद्यालय	200/- वार्षिक
2.	समस्त गैर सरकारी, निजी संस्थान	300/- वार्षिक
3.	समस्त अध्यापक एवं शिक्षा विभाग के मन्त्रालयिक कर्मचारी (व्यक्तिगत)	100/- वार्षिक

उपर्युक्त दरें 16 अक्टूबर 2019 से प्रभावी होंगी। विभागीय पत्रिका शिविरा पर तदनुरूप एक प्रति मूल्य रुपये 20/- मुद्रित करने की स्वीकृति एतद्द्वारा प्रदान की जाती है।

● **(नथमल डिडेल) आईएएस.,** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

3. पीईईओ के अधीन विद्यालयों में शाला दर्पण पोर्टल पर दर्ज पदों के कारण वेतन आहरण में आ रही दिक्कतों के निराकरण हेतु निर्देश।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-माध्य/बजट/बी-4/25577/2019-20 दिनांक : 11-10-2019 ● समस्त प्रधानाचार्य/प्रधानाध्यापक एवं पदेन पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी, राउमावि/राबाउमावि/रामावि/राबामावि,..... ● विषय : पीईईओ के अधीन विद्यालयों में शाला दर्पण पोर्टल पर दर्ज पदों के कारण वेतन आहरण में आ रही दिक्कतों के

निराकरण हेतु निर्देश।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत विभाग के ध्यान में आया है कि समस्त पीईईओ. क्षेत्र के आहरण एवं वितरण अधिकारियों को विभागीय शाला दर्पण पोर्टल पर पदों के मद परिवर्तन के कारण वेतन आहरण में परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

इस सम्बन्ध में यह स्पष्ट किया जाता है कि विभागीय शाला दर्पण पोर्टल पर प्रारम्भिक शिक्षा से सम्बन्धित पदों का मदवार वितरण में त्रुटि रह जाने से सुधार की कार्यवाही प्रक्रियाधीन है, अतः आगामी आदेशों/पदों के मदवार वितरण कार्य पूर्ण होने तक समस्त पी.ई.ई.ओ. अपने क्षेत्राधीन प्रारम्भिक शिक्षा के विद्यालयों के शिक्षकों/कार्मिकों का वेतन आहरण माह जून, 2019 तक, जिस मद से जैसे वेतन आहरण किया जाता रहा है, उसी प्रकार आगामी आदेशों तक वेतन आहरित करते रहेंगे। माह मई-जून 2019 के अनुसार ही समस्त पी.ई.ई.ओ. को आईएफएमएस. पर बजट जारी किया हुआ है। जिन मदों में सी.ए. या एस.एफ. किसी में भी बजट प्रावधान उपलब्ध है वेतन का आहरण कर लिया जावे। केवल सी.ए. में बजट आवंटन हेतु बार-बार मांग शाला दर्पण पर नहीं की जावे। भले ही पदों का आवंटन सी.ए. में हो एस.एफ. में वेतन का आहरण किया जा सकता है।

● **मुख्य लेखाधिकारी,** प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर। ● **वित्तीय सलाहकार,** माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

4. शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित 33वीं राज्यस्तरीय शिक्षक क्रीड़ा एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता 2019-20 विभिन्न स्तरों पर प्रतियोगिता आयोजन के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/प्रारं/खेकू/स्वाशि/8013/शिक्षक प्रति/2019-20/76 ● आदेश परिपत्र।

विभाग द्वारा आयोजित 33वीं राज्य स्तरीय शिक्षक क्रीड़ा एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता 2019-20 विभिन्न स्तरों पर निम्नलिखित तिथियों में आयोजित की जावेगी।

1.	समस्त जिलों में तहसील स्तर पर चयन	11.11.2019 से 12.11.2019 तक
2.	जिलास्तर पर प्रतियोगिता एवं दल गठन	18.11.2019 से 19.11.2019 तक
3.	राज्यस्तरीय प्रतियोगिता हेतु पूर्व प्रशिक्षण	26.12.2019 से 28.12.2019 तक
4.	राज्यस्तरीय प्रतियोगिता	29.12.2019 से 31.12.2019 तक

राज्यस्तरीय प्रतियोगिता के सफलतापूर्वक आयोजनार्थ विभिन्न व्यवस्थाओं/आवासीय सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए राज्यस्तरीय प्रतियोगिताएँ तीन वर्गों में रखी गई है:-

क्र. सं.	वर्ग	आवंटित खेल	आयोज्य स्थल	परिक्षेत्र
1.	पुरुष वर्ग	बास्केटबॉल, बैडमिंटन, टेबल टेनिस, शतरंज, एथलेटिक्स-100 मी., 200 मी., 400 मी., 4×100 रिले दौड़, लम्बी कूद, ऊँची कूद, गोला फेंक, 16 पौंड	राबामावि. कानोता, बस्सी, जयपुर	जयपुर मण्डल
2.	पुरुष वर्ग	फुटबॉल, वॉलीबाल, कबड्डी, सांस्कृतिक कार्यक्रम सुगम संगीत, सामूहिक गान, एकाभिनय, विचित्र वेशभूषा आदि।	राबाउप्रावि., रूण्डेडा भीण्डर, उदयपुर	उदयपुर मण्डल
3.	महिला वर्ग	वॉलीबाल, बैडमिंटन, टेबल टेनिस सांस्कृतिक कार्यक्रम, सुगम संगीत, सामूहिक गान, समूह नृत्य, एकल नृत्य, एथलेटिक्स-100 मी., 200 मी., 400मी., 4×100 रिले दौड़, लम्बी कूद, ऊँची कूद, गोला फेंक, 12 पौंड	राउप्रावि. लालबाग झालरापाटन पं.स. झालरापाटन जिला झालावाड	कोटा मण्डल

प्रतियोगिता हेतु सामान्य निर्देश:-

1. विभाग द्वारा आयोजित इस प्रतियोगिता में समस्त राजकीय शिक्षण संस्थाओं में कार्यरत शिक्षा सेवा और राजस्थान शिक्षा सेवा व राजस्थान अधीनस्थ सेवा में वर्णित पदों पर कार्यरत शिक्षक सम्मिलित होंगे। 31 दिसम्बर तक एक वर्ष में सेवा अनिवार्य है।
2. निर्देशानुसार वर्ष 1993-94 में पंचायतीराज विभाग के अधीन विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को भी इस प्रतियोगिता में सभी स्तरों पर शामिल होने के लिए आदेश क्रमांकः शिविरा/शाशि/ब/शि/प्रति/33740/93-94/24 दिनांक 25.08.1996 द्वारा पात्र माना गया है। अतः पंचायत समितियों के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक भी इस प्रतियोगिता में भाग ले सकेंगे।
3. पुरुष/महिला वर्ग के तहसील एवं जिला स्तरीय चयन व दल गठन का दायित्व संबंधित जिले के जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय, प्रारम्भिक शिक्षा का होगा।
4. महिला वर्ग के लिए निम्नानुसार तहसील स्तर पर चयन न होकर जिला स्तर पर ही चयन एवं दलों का गठन किया जाकर राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में टीमें भेजने का दायित्व भी संबंधित जिले के जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय, प्रारम्भिक शिक्षा का ही होगा।
5. इस प्रतियोगिता में एनआईएस. प्रशिक्षण (खेल विशेष) में एक वर्षीय पाठ्यक्रम उत्तीर्ण शिक्षक उस खेल में भाग नहीं ले सकेंगे/सकेंगी। जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय प्रारम्भिक/माध्यमिक शिक्षा के अधीनस्थ सेवारत शिक्षक गत वर्षों की भाँति उक्त प्रतियोगिता में भाग ले सकेंगे।
6. राज्यस्तरीय शिक्षक प्रतियोगिता के सफलतापूर्वक संचालन का दायित्व पुरुष वर्ग का संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, जयपुर एवं उदयपुर तथा महिला वर्ग का दायित्व संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा, कोटा मण्डल, कोटा सौंपा गया है। शिक्षक प्रतियोगिता के लिए निर्मित नियमावली व मार्गदर्शिका के अनुसार सम्पूर्ण व्यवस्थाएँ करते हुए सूचना समस्त संभागी दलों एवं अधिकारियों को भेजेंगे।
7. प्रतियोगिता के संचालन का दायित्व संबंधित आयोजक संस्था प्रधानों का है। अतः खेल मैदानों, उपकरणों, संभागी कार्मिकों व निर्णायकों के आवास आदि की समुचित व्यवस्था करेंगे तथा सम्भागी दलों जिला शिक्षा अधिकारियों एवं संबंधित कार्यालयाध्यक्षों को सूचित करेंगे। खिलाड़ियों के चयनार्थ आयोजित की जाने वाली प्रथम स्तर की प्रतियोगिता के लिए यात्रा व्यय नहीं दिया जाएगा।
8. इस संबंध में तत्काल आवश्यक कार्यवाही करते हुए की गई कार्यवाही से इस कार्यालय को अवगत करवाएँगे।

● **अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन),** प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

माह : नवम्बर, 2019	**विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम**	प्रसारण समय : दोपहर 12.40 से 1.00 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम
01.11.2019	शुक्रवार	मध्यावधि अवकाश				
02.11.2019	शनिवार	मध्यावधि अवकाश				
04.11.2019	सोमवार	बीकानेर	7	विज्ञान	15	ताप एवं ऊष्मा
05.11.2019	मंगलवार	जयपुर	10	सामाजिक विज्ञान	4	विश्व का इतिहास
06.11.2019	बुधवार	उदयपुर	9	हिन्दी	10	मेरा जीवन
07.11.2019	गुरुवार	जोधपुर	9	हिन्दी	8	नदी, आस्था और कुम्भ
08.11.2019	शुक्रवार	बीकानेर	9	हिन्दी	16	हमारी भी सुनो
09.11.2019	शनिवार	जयपुर	गैरपाठ्यक्रम	गुरुनानक जयंती (12 नवम्बर को)		
11.11.2019	सोमवार	उदयपुर	गैरपाठ्यक्रम	राष्ट्रीय शिक्षा दिवस (उत्सव)		
12.11.2019	मंगलवार	गुरुनानक जयंती अवकाश (उत्सव)				
13.11.2019	बुधवार	जोधपुर	8	विज्ञान	9	कार्य और ऊर्जा
14.11.2019	गुरुवार	बीकानेर	गैरपाठ्यक्रम	बाल दिवस (उत्सव)		
15.11.2019	शुक्रवार	जयपुर	9	सामाजिक विज्ञान	4	भारत में सामाजिक सुधार और धार्मिक पुनर्जागरण
16.11.2019	शनिवार	उदयपुर	9	विज्ञान	11	ध्वनि
18.11.2019	सोमवार	जोधपुर	3	पर्यावरण अध्ययन	9	भोजन में विविधता
19.11.2019	मंगलवार	बीकानेर	गैरपाठ्यक्रम	राष्ट्रीय एकीकरण दिवस (श्रीमती इंदिरा गांधी जयन्ती) उत्सव		
20.11.2019	बुधवार	जयपुर	9	हिन्दी	5	भोलाराम का जीव
21.11.2019	गुरुवार	उदयपुर	5	पर्यावरण अध्ययन	12	गंदा पानी फैलाये रोग
22 व 23.11.2019 को राज्य स्तरीय शैक्षिक सम्मेलन (शिक्षकों के लिए अवकाश)						
25.11.2019	सोमवार	जोधपुर	8	हिन्दी	10	सुभाष चन्द्र बोस का पत्र
26.11.2019	मंगलवार	बीकानेर	गैरपाठ्यक्रम	संविधान दिवस (उत्सव)		
27.11.2019	बुधवार	जयपुर	9	संस्कृत	6	गीतामृतम्
28.11.2019	गुरुवार	उदयपुर	3	हिन्दी	12	साहसी बालिका (कहानी)
29.11.2019	शुक्रवार	जोधपुर	9	सामाजिक विज्ञान	11	वैदेशिक संबंध
30.11.2019	शनिवार	बीकानेर	गैरपाठ्यक्रम	विश्व एकता दिवस (उत्सव 1.12.19 को)		

● **निदेशक शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग राजस्थान, अजमेर**

शिविरा पञ्चाङ्ग

नवम्बर-2019

रवि		3	10	17	24
सोम		4	11	18	25
मंगल		5	12	19	26
बुध		6	13	20	27
गुरु		7	14	21	28
शुक्र	1	8	15	22	29
शनि	2	9	16	23	30

● **कार्य दिवस-21, रविवार-04, अवकाश-05, उत्सव-05** ● **7 से 8 नवम्बर-** राज्य स्तरीय रोल प्ले एवं लोक नृत्य प्रतियोगिता (RSCERT)। **9 नवम्बर-**कालिदास जयन्ती, सामुदायिक बाल सभा आयोजन (विद्यालय परिसर में), PTM-II माँ-शिक्षक बैठक-MTM) का आयोजन। **10 नवम्बर-**बारावफात (अवकाश-चन्द्र दर्शनानुसार)। **11 नवम्बर-**राष्ट्रीय शिक्षा दिवस (उत्सव)। **11 से 12 नवम्बर-**तहसील स्तरीय शिक्षक खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन। **12 नवम्बर-**गुरु नानक जयन्ती (अवकाश-उत्सव)। **14 नवम्बर-**बाल दिवस (पं. जवाहर लाल नेहरु जयन्ती)-(उत्सव), सामुदायिक बाल सभा का आयोजन-सार्वजनिक स्थल/चौपाल पर आयोज्य। **17 नवम्बर-**नेशनल मिन्स कम मेरिट परीक्षा (RSCERT)। **18 से 19 नवम्बर-**जिला स्तरीय शिक्षक खेलकूद प्रतियोगिता। 19 नवम्बर राष्ट्रीय एकीकरण दिवस (श्रीमती इन्दिरा गाँधी जयन्ती)-उत्सव। **19 से 25 नवम्बर-**कौमी एकता सप्ताह का आयोजन। **22 से 23 नवम्बर-**राज्य स्तरीय शैक्षिक सम्मेलन (शिक्षकों के लिए अवकाश)। **27 से 30 नवम्बर-**राज्य स्तरीय विज्ञान, गणित एवं पर्यावरण प्रदर्शनी (RSCERT)। **26 नवम्बर-**संविधान दिवस (उत्सव) ● **नोट-**माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं यथा-(अ) राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा,(ब) राज्य प्रतिभा खोज परीक्षा, (स) राज्य विज्ञान प्रतिभा खोज परीक्षा का आयोजन। ● प्रत्येक सोमवार-WIFS नीली गोली (कक्षा 6-12), WIFS पिंक गोली (कक्षा 1-5)।

विद्यालय योजना

संस्थागत नियोजन की आवश्यकता

❒ मदन लाल मीणा

संस्थागत नियोजन किसी संस्था द्वारा निर्मित कार्यक्रमों का विवरण है। यह उन कार्यक्रमों व कार्यकलापों का ब्यौरा है जो विद्यालय आगामी शैक्षणिक सत्र में करना चाहती है। सर्वप्रथम मुदालियर शिक्षा आयोग में विद्यालयों के गुणात्मक विकास हेतु विद्यालय समुन्नयन योजना की सिफारिश की। इसमें प्रत्येक विद्यालय को उपलब्ध साधनों, मानवीय, भौतिक एवं शैक्षिक का परस्पर समन्वय करते हुए उनका पूर्ण नियोजित रूप से उपयोग करने की सलाह दी।

शैक्षिक संस्था या विद्यालय अपने उद्देश्यों की पूर्ण उन्नति व सफल संचालन के लिए योजना बनाती है, तो वह संस्थागत (विद्यालय) योजना कहलाती है। प्रत्येक विद्यालय में निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने तथा विद्यालय कार्यक्रमों को सुचारू रूप से चलाने के लिए प्रधानाध्यापक/प्रधानाचार्य एवं शिक्षकगण आपस में विचार विमर्श करके आगामी सत्र में करणीय कार्यों की योजना बनाते हैं। जैसे समय विभाग चक्र, पाठ्य पुस्तक विश्लेषण एवं पाठ्यक्रम विभाजन शैक्षणिक सत्र में आगामी सत्र के प्रमुख लक्ष्यों का निर्धारण सह शैक्षिक गतिविधियों के आयोजन की रूप रेखा, भौतिक विकास की योजना आदि।

प्रो. एम.बी. बुच (M.B. Bush) के अनुसार संस्थागत नियोजन उन कार्यक्रमों का समुच्चय है जिनको संसार द्वारा अपनी अनुभूत आवश्यकताओं तथा स्वयं के उपलब्ध एवं भविष्य में उपलब्ध होने वाले संसाधनों के आधार पर तैयार किया जाता है। संस्था इन कार्यक्रमों का निर्धारण विद्यालय के स्तरों तथा व्यवहारों को उन्नत बनाने तथा संस्था के भावी विकास के सन्दर्भ में करती है।

शिक्षा आयोग के शब्दों में-''प्रत्येक शिक्षा संस्था अपने साधनों से ही वे कितने ही सीमित क्यों न हो, अधिक अच्छी बनाकर और अधिक परिश्रम करके अपने शिक्षा स्तर को सुधारने की दिशा में और बहुत कुछ कर सकती है।''

विद्यालय योजना की मुख्य विशेषताएँ :-

उद्देश्यों व लक्ष्यों का पूर्व निर्धारण : विद्यालय योजना में उद्देश्यों एवं लक्ष्यों को सुस्पष्ट रूप से पूर्व निर्धारित किया जाता है। इन लक्ष्यों, उद्देश्यों के निर्धारण से पूर्व विद्यालय की आवश्यकताओं, इच्छाओं, महत्त्वाकांक्षाओं का निर्धारण तथा इनकी पूर्ति के मार्ग में आने वाली समस्याओं व उनके नियन्त्रण व समाधान की युक्तियों पर गहन मंथन करना होता है।

साधन सुविधाओं के बारे में पूर्व चिन्तन : विद्यालय योजना में निम्न लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु मानवीय भौतिक व आर्थिक संसाधनों की उपलब्धता व भविष्य में प्राप्ति का पूर्वानुमान लगाया जाता है।

विशिष्टता : प्रत्येक संस्था स्वयं एक पृथक इकाई होती है और उस इकाई की अपनी विशिष्टता होती है। साथ ही उसकी अपनी विशिष्ट समस्याएँ होती हैं। उसके विकास की अपनी एक गति होती है तथा उसके अपने उपलब्ध विशिष्ट संसाधन होते हैं।

अधिकतम उपयोगिता का सिद्धान्त : संस्थागत नियोजन में योजना बनाते समय यह अनुमान लगाया जाता है कि कितने और कैसे संसाधन संस्था में उपलब्ध हैं, समुदाय से व सरकार से किस सीमा तक अतिरिक्त संसाधनों को प्राप्त किया जा सकता है तथा इनका अधिकतम उपयोग किस प्रकार किया जा सकता है।

मानवीय प्रयासों को बढ़ावा : संस्थागत नियोजन एक ओर तो मानवीय तथा भौतिक संसाधनों के अधिकाधिक मात्रा में उपयोग करने पर बल देता है तो दूसरी ओर वह मानवीय प्रयासों को बढ़ाने पर भी बल देता है, साथ ही उनकी कार्यक्षमता, अनुभव, सूझबूझ को बढ़ाने पर भी बल देता है।

विद्यालयों में संस्थागत नियोजन के उद्देश्य : विद्यालयों में संस्थागत नियोजन (विद्यालय योजना) का प्रमुख उद्देश्य शाला का चहुँमुखी विकास करना होता है।

संस्थागत योजना का कार्यक्रम विद्यालय के विकास से सम्बन्धित है। इसका उद्देश्य है सभी संसाधनों का उपयोग विद्यालय के विकासात्मक एवं गुणात्मक कार्यों में करना।

संस्थागत नियोजन निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति करता है :-

- संस्था का शैक्षिक क्षेत्र में गुणात्मक सुधार करना।
- विद्यालय को पर्याप्त भौतिक एवं मानवीय सुविधाएँ उपलब्ध कराना।
- शिक्षण की नवीन विधियों को उपयोग कर शिक्षण को प्रभावी बनाना।
- सह शैक्षिक गतिविधियों का प्रभावी आयोजन करना।
- अध्यापकों की रचनात्मक योग्यता का विकास करने हेतु कार्य करना।
- शिक्षा योजना को वास्तविकता तथा दृढ़ता प्रदान करना।
- विद्यालय की शैक्षिक व अन्य समस्याओं का समाधान खोजना।
- उपलब्ध साधनों का अधिकतम उपयोग करना उनके साथ सृजनात्मक समन्वय स्थापित करना एवं नवीन साधनों की खोज करना।

प्रशासनिक एवं वित्तीय दायित्वों के साथ-साथ संस्थाप्रधान समस्त शैक्षिक, सह

–शैक्षिक, भौतिक एवं सामुदायिक समुन्नयन एवं योजनाबद्ध विकास के लिए उत्तरदायी होता है। अतः इस उत्तरदायित्व को निभाने के लिए विद्यालय में वार्षिक योजना का निर्माण करना आवश्यक है।

विद्यालय योजना के क्षेत्र एवं कार्यक्रम– किसी भी विद्यालय नियोजन के चार प्रमुख पक्ष होते हैं–1. शैक्षिक क्षेत्र, 2. सह–शैक्षिक क्षेत्र 3. भौतिक क्षेत्र 4. विविध क्षेत्र–

1. शैक्षिक क्षेत्र : शैक्षिक सुधार कार्यक्रम हेतु बनाई योजना शैक्षिक क्षेत्र से सम्बन्धित कहलाती है। इसके अन्तर्गत विद्यालय में शैक्षिक क्रियाकलापों में संख्यात्मक एवं गुणात्मक सुधार पर ध्यान दिया जाता है। शैक्षिक क्षेत्र में नियोजन के मुख्य विषय निम्न हैं: 1. अध्यापक दैनन्दिनी संधारण, 2. विषय समिति, 3. पाठयक्रम विभाजन, 4. आदर्श पाठ आयोजन, 5. प्रभावी परिवीक्षण, 6. कक्षा कार्य सुधार, 7. गृहकार्य सुधार, 8. भित्ति पत्रिका, 9. वर्तनी सुधार, 10. सामान्य ज्ञान वृद्धि, 11. श्रुति लेख, 12. निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण, 13. शिक्षण सहायक सामग्री का प्रभावी उपयोग।

2. सह–शैक्षिक क्षेत्र : पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों में सुधार हेतु बनाई गई योजना सह–शैक्षिक क्षेत्र के अन्तर्गत आती है। सह–शैक्षिक क्षेत्र में योजना निर्माण के मुख्य विषय निम्नलिखित हैं : 1. प्रार्थना सभा का प्रभावी आयोजन, 2. पुस्तकालय एवं वाचनालय का प्रभावी उपयोग, 3. सांस्कृतिक एवं साहित्यिक प्रशस्तियाँ, 4. समाजोपयोगी उत्पादक कार्य एवं समाज सेवा, 5. शिक्षण उपकरणों का निर्माण, 6. एन.एस.एस., एन.सी.सी., एन.पी.सी. स्काउटिंग गाइडिंग व पर्वतारोहण, 7. सम्पूर्ण साक्षरता, 8. शारीरिक एवं योग शिक्षा, 9. बुक बैंक, 10. खेलकूद की नियमित व्यवस्था 11. बालसभा का आयोजन, 12. अध्यापक–अभिभावक संघ, 13. शाला गणवेश का सुधार, 14. मध्याह्न भोजन एवं दुग्ध वितरण की व्यवस्था 15. उत्सव व जयंतियों का प्रभावी आयोजन।

3. भौतिक क्षेत्र : विद्यालय भवन का विकास, खेल–मैदानों का सुधार, विद्यालय वाटिका आदि कार्यक्रम भौतिक क्षेत्र में आते हैं। भौतिक क्षेत्र में योजना निर्माण के मुख्य विषय निम्नलिखित हैं : 1. विद्यालय भवन का निर्माण, 2. चार दीवारी निर्माण, 3. प्रसाधन सुविधा, 4. वृक्षारोपण, 5. खेल मैदान का विकास, 6. शुद्ध पेयजल व्यवस्था, 7. विद्यालय भवन की रंगाई–पुताई, 8. फर्नीचर निर्माण, 9. विद्यालय साज–सज्जा, 10. अन्तर्कक्षा स्वच्छता प्रतियोगिता आदि।

4. विविध क्षेत्र : राष्ट्रीय महत्त्व के कार्यक्रम भी योजना में सम्मिलित किए जाए। अतः प्रभावपूर्ण ढंग से विद्यालय योजना बनाने के लिए विद्यालय के सभी पहलुओं, पाठशाला भवन, शिक्षण सुविधाओं, पुस्तकालयों, प्रयोगशालाओं, शैक्षिक कार्यक्रमों, खेलकूद का मैदान आदि को ध्यान में रखते हुए तैयार की जानी चाहिए। विद्यालय योजना का विस्तार वित्तीय साधनों तथा स्रोतों के अनुकूल हो।

जॉन डिवी के अनुसार–''पाठशाला समाज का लघुरूप माना जाता है। अतः इस दृष्टि से विद्यालय की योजनाओं में समाज की आवश्यकताओं, रीति–रिवाजों, मूल्यों, विचारधाराओं तथा मान्यता आदि को भी महत्त्व दिया जाना चाहिए।''

योजना का मूल्यांकन : विद्यालय योजना का अर्द्ध वार्षिक व वार्षिक मूल्यांकन निर्धारित प्रपत्र में भरकर जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय को प्रस्तुत करना होता है। मूल्यांकन से योजना की क्रियान्विति की दशा व दिशा का ज्ञान होने के साथ ही क्रियान्वयन में आने वाली समस्याओं का भी पता लगता है। योजना बनाने के पश्चात् इसके अनुरूप क्रियान्वयन के प्रयास सत्र पर्यन्त किए जाने चाहिए तथा मूल्यांकन भी समय–समय पर किया जाना चाहिए। अतः सभी विद्यालय अपने विद्यालय के चहुँमुखी विकास एवं प्रभावी शिक्षण तथा आदर्श विद्यालय के लिए विद्यालय योजना जरूर बनाए। एक विस्तृत प्रभावी विद्यालय योजना विद्यालय की सफलता की गारन्टी होती है और इसी में संस्थाप्रधान एवं शेष कार्मिकों का यश निहित होता है।

शुभकामनाओं सहित!

वरिष्ठ अध्यापक (अंग्रेजी)
रा.उ.मा. विद्यालय,
चिड़िया (गिड़ा), बाड़मेर
मो. 9928173922

शिष्ट विद्यार्थी के लक्षण

❐ **अजय कुमार ओझा**

विद्यार्थी जीवन में शिष्टाचार का बहुत महत्त्व है। विद्यालय में एक शिष्ट विद्यार्थी की अलग पहचान होती है। वे गुण जिन्हें अपनाकर एक विद्यार्थी सबका चहेता बन सकता है इस प्रकार है–

1. शिष्ट छात्र वे हैं जो गुरुजनों के कक्षा में आने पर खड़े होकर अभिवादन करते हैं।
2. छात्र को अपने अध्यापक के सामने सावधान की स्थिति में खड़े रहना चाहिए।
3. अध्यापकों की कुर्सी पर या उनके बराबर बैठना अनुशासन के विरुद्ध है।
4. जब कक्षा में कोई अध्यापक न हो, तो उधम मचाना या श्यामपट्ट पर कुछ लिखना असभ्यता है। इससे बचो।
5. पेंसिल या पेन की नोंक मुंह में डालना या चबाना तथा रबड़ को दाँत से काटना गलत और गंदी आदत हैं
6. अपने मित्रों से यदि कोई पुस्तक या नोट बुक अथवा कोई अन्य वस्तु लें, तो उसे यथा समय वापस लौटा दें। लौटाते समय धन्यवाद दें।
7. अपने शिक्षकों से मजाक करना या उनकी हंसी उडाना असभ्यता है।
8. अपनी पुस्तकों, कॉपियों और बस्तों को साफ–सुथरा और सलीके से रखो।
9. पानी की बोतल या लंच बॉक्स को ऐसे स्थान पर रखो कि उससे दूसरे को ठोकर न लगे। खाना खाते समय स्कूल प्रांगण में गंदगी न फैलाएँ।
10. विद्यालय परिसर में लगे हुए पेड़–पौधों या फूलों को ना तोड़े।
11. अपने कक्षा–कक्ष को छोड़कर किसी अन्य कक्ष में बिना अनुमति नहीं जाएँ।
12. विद्यालय के नियमों का पालन करना अच्छे विद्यार्थियों के गुण है।
13. विद्यार्थी जीवन में मीठी वाणी, मधुर व्यवहार तथा शालीन स्वभाव का बड़ा महत्त्व है।

वरिष्ठ अध्यापक, रा.उ.मा.वि. छाजोली, नागौर
मो: 9929487524

पुस्तक महत्व

पुस्तकों की बातें

❒ डॉ. रमेश 'मयंक'

ब्रह्मगवी पच्यमाना यावत सामि विजङ्गहे।
तेजो राष्ट्रस्य निर्हन्ति न वीरो जायते वृषा।।

अथर्ववेद 5/19/4

जहाँ ब्रह्मवेत्ताओं का वेद-विद्या का निरादर होता है, वह राज्य नष्ट हो जाता है। वहाँ कोई तेजस्वी तथा वीर उत्पन्न नहीं होते। यहाँ पर विद्वानों का सर्वत्र सम्मान होने का भाव है। विद्वानों की विद्या के कारण पूजा होने का भाव सर्वमान्य है। सबको संस्कारवान-शिक्षित शिक्षा बनाती है। शिक्षा के साथ शिक्षक पुस्तक व छात्र के लिए हितकारी बने, सच्ची शिक्षा ग्रहण करे, सच्चे गुरु का मार्गदर्शन प्राप्त करे एवं प्राप्त शिक्षा से ज्ञानवान, सदाचारी, कर्त्तव्यपरायण नागरिक के रूप में अपनी भूमिका का निर्वहन करे।

शिक्षा-विद्यालय-शिक्षक तक ही नहीं चलती, आगे भी बढ़ती है। आगे की शिक्षा स्वाध्याय पर बढ़ती है जिसके लिए आवश्यक होती है पुस्तकें। सच्ची व अच्छी पुस्तक लेखक का जीवन सत्व होती है क्योंकि उसमें अनुभव, सीख व निर्माण की महत्त्वाकांक्षाएँ होती है।

सद्विचारों की उत्पत्ति, विकास, परिष्कार अच्छी पुस्तक पढ़ते या सत्संग-प्रवचन सुनने-मनन करते होता है। कौन नहीं चाहता, अच्छे मार्ग पर चलना, उत्कृष्ट जीवन बिताना, आदर्श, सम्मानित चरित्र का नायक बनना, लेकिन समस्या-उत्कृष्ट विचारों को ग्रहण करने की होती है।

उत्कृष्ट विचारों से जुड़ना-आत्मसात् करना, अंगीकार करते हुए जीवन का अभिन्न अंग बनाना असंभव तो नहीं है। मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार को बदलना पड़ेगा। उच्च विचारों की मनोभूमि को स्थान देना होगा। इस कार्य में सहायक होते हैं। अच्छे गुरु, अच्छी पुस्तकें, अच्छे मित्रों व स्वजनों की संगत। निकृष्ट विचारों में तात्कालिक लाभ का आकर्षण कम नहीं होता, उन्हें उखाड़कर नए विचारों की स्थापना करने का सबसे आसान व कारगर उपाय है। श्रेष्ठ लेखकों की पुस्तकें पढ़ना। यह अध्ययन से संभव होता है।

अच्छी पुस्तकों का पात्र व पाठक बनने के लिए घने जंगल में कंटीली झाड़ियों वाली जमीन को कृषि योग्य बनाने जैसा ही प्रयास होता है। हमें करना होगा, झाड़-झंखाड़ों को, उखाड़नी होगी जड़ें, जोतकर जमीन बनानी होगी समतल जमीन जो उबड़-खाबड़ होती है।

भाव मनोभूमियों, सत्कर्मों, सद्भावनाओं, सद्वृत्तियों से जुड़ता चला जाता है। परिष्कृत मनोभूमि में सद्विचारों व सद्कर्मों का सतत् प्रवाह, सद्विचारित-नियमित प्रयत्न, श्रेष्ठता की स्थापना आवश्यक है। पुस्तकें सभी प्रकार की होती है-गहन अध्ययन व द्रुत अध्ययन वाली, सतही जानकारी प्राप्त करने योग्य, जल्दी-जल्दी पढ़ने योग्य और बार-बार चिन्तन-मनन करने योग्य जैसे भोजन को बार-बार चबाकर करने की हिदायत होती है। व्यक्ति जो कुछ पढ़ता है उससे विद्वान नहीं बनता, जो कुछ याद रखता व समय आने पर उपयोग करता है उससे विद्वान बनता है, समझदार कहलाता है। विद्वज्जनों के जीवन की सफलता का श्रेय प्रेरणास्पद, उत्कृष्ट कोटि से विचारों को मिलता है जिसका स्रोत/खजाना मात्र पुस्तकें ही होती है।

अच्छाई की अपनी शक्ति, दृष्टि व विशेषता होती है जिसका मन, वचन, कर्म पर प्रभाव पड़ता है। विचारों का विकास, परिपक्वता, प्रौढ़ता के लिए श्रेष्ठ व्यक्ति का आचरण, आदर्श, अनुभव पथ प्रदर्शक सहायक बनता है। हमारे समक्ष गाँधीजी का प्रभाव है। उनकी प्रेरणा, सद्साहित्य ने अगणित व्यक्तियों की भावनाएँ ही नहीं जीवन की दिशा बदली, निर्माण की राह पर चलाकर मंजिल तक पहुँचाया।

प्राचीनकाल में आश्रममयी शिक्षा के उज्ज्वल चरित्र परिपक्व ज्ञान, दुष्प्रवृत्तियों के शमन-दमन का मार्ग व अनुभूत कठिनाइयों का व्यावहारिक समाधान सुझाया था, जो श्रुत से पठन योग्य से संभव हो सका।

सद्साहित्य जीवन निर्माण के लिए उपयोगी ही नहीं आवश्यक भी है। हमें खोज करनी होगी उस खजाने की जो अक्षरों के रूप में हमें प्रकाश-प्रेरणा प्रदान कर सके। हम स्वाध्याय करें, आदर्श की तरफ बढ़ें, सुधारवादी चिंतन दृष्टि विकसित करें, श्रेष्ठ लोगों के चरित्र-अनुभवों से गौरवान्वित अनुभव करें तथा उच्च विचारों के प्रवाह में रम जाएँ। खूब पकाएँ-पचाएँ और सभी को प्रकाशवान ऊर्जावान बनाकर वृहत्त शृंखला के हेतु कहलाएँ।

उत्तम पुस्तकें-आदर्श ग्रन्थ-बहुत बड़ी सम्पत्ति है। भावी पीढ़ी के लिए धरोहर है। मूल्यवान अनुपम भेंट है। ज्ञानार्जन को पीढ़ियों तक चलाने का माध्यम है पुस्तकें। जहाँ अच्छी पुस्तकें होती हैं वहाँ पर देवता-सज्जन निवास करते हैं। पुस्तकालय ज्ञान के श्रेष्ठ मन्दिर है। वे संतानें धन्य-धनी होती है जिनके लिए माता-पिता अच्छी उपयोगी पुस्तकें छोड़ जाते हैं। उत्तम पुस्तकों का सहारा सम्बल पाकर मनुष्य भवसागर की लहरों को सुगमता से पार कर सकता है, समस्याओं का समाधान खोज सकता है, सभी प्रकार के अवरोधों को हटाकर मंजिल के शिखर तक पहुँचकर उत्कर्ष को प्राप्त कर सकता है।

पुस्तकों पर व्यय की गई राशि कभी भी व्यर्थ नहीं जाएगी अपितु अज्ञान के गहन अंधकार में प्रकाश की तरह साथी बनकर काम आएगी। कई लोग पुस्तकें सजाते हैं, बैठकों की

शोभा बढ़ाते हैं लेकिन पढ़ने व उपयोग करने में चूक कर जाते हैं। पुस्तकों को खरीदना पर्याप्त नहीं है। उनका अध्ययन करना, उपयोग में लाना ही पुस्तकों को सम्मान देना है।

जीवन में किताबें महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। सफदर हाशमी के शब्दों में 'किताबें ही वह माध्यम है जिससे हम प्रत्येक समय तथा विषय से जुड़ी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।' किताबें ज्ञान का भंडार होती है। यह ज्ञान एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक किताबों के द्वारा ही हस्तांतरित होता है।

किताबें करती हैं बातें
बीते जमानों की, दुनिया की, इंसानों की,
आज की, कल की और हस्तियों की

जो किताबें बातें करने की क्षमता रखती है वे ज्ञान कोष है। बीते समय की बातें बताती है। आज के मानव के कार्यों से सावधान करती है। मनुष्य की एक-एक उपलब्धियाँ, खुशियाँ, गम, फूलों की खूबसूरती, बमों की भयानकता बताती है। जीत-हार, प्रेम-मृत्यु के पक्षों की बारीकियाँ समझाती है। जिन्हें संस्कृति नष्ट करनी थी उन्होंने पुस्तकालय जलाए। क्या तुम नहीं सुनोगे।

इन किताबों की बातें ?
किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं।

किताबें पढ़ने वाले महसूस कर सकते हैं चिड़ियों की चहचहाट को, खेतों में लहराती हरियाली को, झरनों की गुनगुनाहट और रंग-बिरंगी परियों की कहानियों-किस्सों को आज का युग विज्ञान का युग है। इसमें रॉकेट का राज है, विज्ञान की आवाज है-

किताबों का कितना बड़ा संसार है
किताबों में ज्ञान की भरमार है

पुस्तकों के कारण ही चन्द्रमा पर जाना, अंतरिक्ष की सैर करना संभव हो सका। चन्द्रयान-2 के अभियान में वैज्ञानिकों की सफलता की पृष्ठभूमि में किताबें ही है। किताबें हमारे पास और हमें किताबों के साथ रहना चाहिए, यदि किताबें नहीं होगी तो हमारे जीवन की प्रगति का पहिया ही रुक जाएगा। पुस्तकें हमसे बातें करती है, समझाती है, समस्याओं का समाधान बताती है-

पुस्तकें कहती
हम ज्ञान का प्रकाश बाँटती है
अज्ञान का अन्धकार छाँटती है
आओ-हमें पढ़ो, ज्ञान पाकर
उन्नति के शिखर पर चढ़ो।

पुस्तकें अपने पाठकों को समझाती है-हमें जानों, धीरे-धीरे पूरा पहचानो उसके बाद चिन्तन-मनन-हृदयंगम करना क्योंकि पुस्तकें ज्ञान का खजाना है।

जो हमसे जुड़ेगा,
सभी विषयों के गहन ज्ञान
की तरफ मुड़ेगा।
जीवन में अपने
खूब-खूब उन्नति करेगा।

पुस्तकों ने जमाने के खूब उतार-चढ़ाव देखे हैं- हमने भी खूब देखा जमाना। एक समय था जब नवीनतम प्रकाशनों से बाजार सज जाते थे, अब 'विश्व पुस्तक मेला' लगाते हैं। (23 अप्रैल को) अब तो पुस्तकों के पाठकों की संख्या का घटना और सिर्फ दर्शकों की संख्या का बढ़ना भी चिन्ता का विषय है-

धर्म-दर्शन, सभ्यता-फैशन के लिए
पात्रों की तलाश करते
सीख संस्कार छोड़कर
सिर्फ मनोरंजन की तरफ बढ़ते
पाठक से दर्शक बन जाते हैं
नए-नए अत्याधुनिक तरीके अपनाते हैं।

ई-मित्र, ई-पुस्तकें, संचार जगत का क्रान्तिकारी योगदान हवाएँ बदलने लगा है फिर भी-

शांति और स्थायित्व तो सिर्फ
पुस्तकों से ही मिल पाता है
पुस्तक पढ़ने-लिखने का माध्यम बनाने वाला
नहीं करता समयाभाव की बातें
और पुस्तकों का सच्चा मित्र कहलाता है।

(डॉ. रमेश 'मयंक')

वे पुस्तकें अधिक पसंद की जाती है जिनमें बहुरंगी चित्रों को समुचित स्थान दिया जाता है। ए.डब्ल्यू.आई.सी. नई दिल्ली में 1982 में एक स्लोगन लेखन प्रतियोगिता में श्री शिव 'मृदुल' का यह स्लोगन प्रथम रहा-

पुस्तक है चित्रों की दुनिया
पुस्तक है मित्रों की दुनिया

बाजार सटे पड़े है-प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु गाइडों की पुस्तकों से जिनका आधार होता है विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्नों व सही उत्तर की उपलब्धता युवा पीढ़ी का हाल 'शार्टकट' ढूँढ़ने की मानसिकता का रहता है। परीक्षाएँ पास करने के लिए-कुंजियाँ, पास बुक्स, 'वन वीक सीरीज' जैसी पुस्तकें सर्वत्र उपलब्ध है। अर्थशास्त्र की भाषा में बुरी मुद्रा ने अच्छी मुद्रा को चलन से बाहर कर दिया है। संदर्भ साहित्य, मूल पुस्तकें पढ़ने का रिवाज धीरे-धीरे खत्म होता जा रहा है। ऑनलाइन नेट पर सर्च का तरीका भी चल निकला है। कागज, छपाई, प्रबंधन ने पुस्तकों की कीमतों में मूल्य वृद्धि कर दी है। अंग्रेजी में ई.एल.बी.एस. कम मूल्य अंग्रेजी की पुस्तकें, हिन्दी में पेपर बैंक संक्षिप्त संस्करण अब भी पुस्तक बिक्री की दौड़ से बाहर नहीं हुए है। महाविद्यालयों, विद्यालयों, सार्वजनिक पुस्तकालयों में पुस्तकों की खरीद अवश्य की जाती रही है। मेरे एक प्रधानाध्यापक जी ने पुस्तकालय की लिए पुस्तकें क्रय के मापदण्ड बनाए। ज्ञानपीठ द्वारा पुरस्कृत-प्रकाशित केन्द्रीय व राज्य साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत लेखकों की पुस्तकें, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी तथा राष्ट्रीय स्तर के प्रतिष्ठित प्रकाशक (राजपाल, राजकमल का बड़ा नाम था) को प्राथमिकता दी जाए। राजस्थान में शिक्षा विभाग बीकानेर ने शिक्षक दिवस के अवसर पर प्रतिवर्ष सृजनशील शिक्षकों की साहित्यिक रचनाओं को पुस्तकाकार रूप में 'शिक्षक दिवस विशेषांक' प्रकाशित किया है। यह कार्य स्तुत्य है।

आज पुस्तक समीक्षा के मानदण्डों में बाह्य पक्ष व आन्तरिक पक्ष सभी महत्त्वपूर्ण हो गए है। बाह्य पक्ष में आकर्षक कवर पृष्ठ, लेखक, संपादक, प्रकाशक, स्तरों, प्रयोग, विषय की जानकारी, संस्करण व मूल्य इत्यादि होते हैं तो आन्तरिक पक्ष में विषयवस्तु की पूर्णता, प्रासंगिकता, प्रस्तुति में ईमानदारी, मौलिकता व उपयोगिता परक दृष्टिकोण रहता है। कई समाचार पत्रों के प्रतिष्ठान प्रति वर्ष 'ईयर बुक्स' निकालकर पुस्तकों के बाजार में साख बनाए हुए है।

लेखक की जीवन लीला तो समाप्त हो जाती है लेकिन मृत्यु के पश्चात् भी उसकी कृति उसे कालजयी बनाती है। रामायण-महाभारत,

वेद, पुराण से लगाकर प्रेमचंद, दिनकर, टैगोर, रेणु, बच्चन, गुलेरी जैसे कई लोग ख्यातनाम हुए है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर रूबेट मॉर्डन से लेकर शेक्सपीयर, मिल्टन, बर्डसवर्थ से लेकर एजारा पोण्ड तक कई कलम के धनी चर्चित थे, है और रहेंगे।

कतिपय विश्वविद्यालयों ने मौलिक स्तरीय शोध प्रबंधों को प्रकाशित किया है तो पॉकेट बुक्स ने भी अपना स्थान बनाया है। मेरी प्रिय कहानियाँ सीरिज लोकप्रिय हुई है। पुस्तकों तथा फिल्मों को समीक्षक चर्चित व स्थापित करते हैं। अच्छी पुस्तक अच्छी कैसे क्यों? इसका निर्धारण कौन करे? समीक्षा के साथ सम्बन्ध जुड़ गया है। 'द एलीफेन्ट इज इन द रूम' हर जगह है। राजनीतिक दृष्टि बदलने पर पुस्तकों की सृष्टि बदल जाती है जो चिन्ता जनक है। शाश्वत मूल्य नहीं बदलते। पुस्तक सूची में वर्गीकरण विषय परक चिकित्सा, स्वास्थ्य, शिक्षा, व्यवसायोन्मुखी, धार्मिक, मनोवैज्ञानिक, पर्यटन, उपन्यास, कविता, निबन्ध, आलोचना, आत्मकथा, बाल साहित्य, शोध केन्द्रित जानकारी उपलब्ध कराती हैं। कालजयी कृतियाँ सदैव सभी से ऊपर रहती है। अतः पुस्तकें जीवन निर्माण, आदर्श चरित्र, उच्च मानवीय मूल्यों की स्थापना में सकारात्मक भूमिका का निर्वहन करें। पुस्तकों की आवश्यकता व सार्थकता काल क्रम में थी और बनी रहेगी।

जब तक किताबें पास है जीवन में आस,
विश्वास और प्रकाश है।

बी-8, मीरा नगर,
चित्तौड़गढ़ (राज.)-312001
मो: 09461189254

हम कौन थे
क्या हो गए
और क्या होंगे अभी।
आओ सब मिलकर
विचारें समस्याएं सभी।

-राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त

प्रेरक प्रसंग

अनूठे व्यक्तित्व की धनी : ग्रेटा थनबर्ग

❒ टेकचन्द्र शर्मा

उम्र की गणना ना करें सर चढ़ जाय जुनून।
सब कुछ कर सके मनुज जट उबल जाय खून।।

स्वीडन देश के स्टाकहोम में जन्मी प्यारी बिटिया, जिसकी उम्र मात्र 16 साल की है। (1903 में जन्म) ने क्लाइमेट वार्मिंग वायु प्रदूषण से इस धरा को बचाने के लिए कमर कस ली है। यह उम्र खेलकूद व पढ़ने-लिखने की है। किन्तु थनबर्ग ने दृढ़ निश्चय कर लिया है कि वह संसार को वायु-प्रदूषण से बचाएगी। सबसे कम उम्र की बिटिया नोबल पुरस्कार के लिए नामित हो चुकी है और उसे नोबेल पुरस्कार अवश्य मिलेगा। एमनेस्टी इंटरनेशनल ने वायु प्रदूषण को रोकने हेतु जाग्रति पैदा करने में लगी ग्रेटा बिटिया को एम्बेसडर ऑफ कॉशेष पुरस्कार से पुरस्कृत कर दिया है। यह उसकी सफलता का प्रतीक है। यह पुरस्कार बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। कक्षा 3 से ही ग्रेटा ने यह कार्य शुरू कर दिया था।

हालांकि उसके माता-पिता ने भी इस सुकृत्य में उसको सहयोग नहीं दिया बल्कि विरोध ही किया। किन्तु इस साहसी बहादुर बिटिया ने अकेले ही यह अभियान प्रारम्भ कर दिया और स्वीडन की संसद के द्वार पर अकेली ही धरना देकर बैठ गई और फिर तो कारवां जुड़ता गया जब अकेले चल पड़े। हजारों-लाखों की संख्या में बालक-बालिकाएँ वायु प्रदूषण रोक के नारों से युक्त तख्तियाँ लेकर कारवां से जुड़ गया।

ग्रेटा थनबर्ग का कहना है कि सत्तर लाख व्यक्ति हर वर्ष वायु प्रदूषण के कारण मौत के ग्रास हो जाते हैं।

उसकी मान्यता है कि हालांकि वायु प्रदूषण पूर्णरूपेण तो समाप्त नहीं किया जा सकता किन्तु कम से कम (न्यूनतम) किया जा सकता है। यदि हम सब मिलकर प्रयत्न करें तो। इसलिए संसार को इस प्रदूषण से बचाने के लिए वे जी जान से जुट गई।

संयुक्त राष्ट्र संघ में भी इस संबंध में उनका सम्बोधन होगा। भारत के प्रधानमंत्री

आदरणीय श्री नरेन्द्र मोदी को भी इस संबंध में उन्होंने पत्र व्यवहार द्वारा बातचीत की है कि आपका देश भी इस अभियान में पूर्ण सहयोग दे ताकि यह जनहित, संसार हित का कार्य हो सके। श्री नरेन्द्र मोदी ने इस अभियान को सराहा है और पूर्ण सहयोग का आश्वासन बिटिया ग्रेटा को दिया है। भारत ही नहीं विश्व स्तर पर प्रत्येक देश में उनका यह सन्देश जाएगा। बिटिया ग्रेटा थनबर्ग संसार के हर देश में अपना यह संदेश भिजवा देगी।

बिटिया ने हवाई जहाज से यात्रा करना बन्द कर दिया क्योंकि किसी प्रकार से भी की गई वायुयान यात्रा से भी वायु प्रदूषण फैले। उन पर जुनून सवार हो गया है कि संसार को वायु प्रदूषण से बचाना है। मुझे यह कार्य ही करना है अब।

इस तरह के प्रेरक प्रसंग यदि हर स्कूल के शिक्षक व छात्रों के पास पहुँचे तो उन्हें प्रेरणा मिले और वे संसारहित में कार्य करें अपने पढ़ने-लिखने के काम के साथ-साथ है। अतः यह प्रेरक प्रसंग लिखकर भेजने का मानस बनाया है मैंने। कम से कम संसार हित के काम करने वालों का यशोगान एवं उनके अच्छे कार्यों की चर्चा कर उन्हें अन्य लोगों तक सकारात्मक एवं सार्थक ही है।

पूर्व जिलाशिक्षाधिकारी
शर्मा सदन, मुनि का आश्रम, झुंझुनूं
मो: 9667212236

शैक्षिक उन्नयन

कमजोर बालक : निदानात्मक उपाय

❒ महेश कुमार चतुर्वेदी

हर माता-पिता का सपना होता है कि उसकी संतान पढ़ाई में अव्वल हो। वह अच्छे अंकों से पास हो। प्रतिभावान हो। होनहार हो। हर क्षेत्र में आगे बढ़ता हुआ बाजी मारे और अपने पैरों पर खड़ा हो। अंततः माता-पिता के बुढ़ापे की लाठी बने।

कुछ प्रतिशत बच्चों को छोड़ शेष बच्चे पढ़ाई के अलावा इतर गतिविधियों में संलिप्त हो माता-पिता के सपनों पर पानी फेर देते हैं। तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। जब बच्चा होश संभालता है और अपने नकारेपन पर पछताते हुए कहता है ''काश हम भी पढ़ लेते तो छोटी-मोटी नौकरी मिल जाती।'' लेकिन अब पछताय होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।

माता-पिता के सुनहरे सपनों को रौंदने में, उन्हें छिन्न-भिन्न करने में, उन पर पानी फेरने में, उनको मटियामेट करने में बालक अकेला दोषी नहीं है। कई सारे ऐसे कारण है जिनकी वजह से बालक पढ़ाई में निरन्तर पिछड़ता जाता है। जिन्हें हम कमजोर बालक कहते हैं। ऐसे कारणों में बालक का जन्मजात मंदबुद्धि का होना, परिवार का अनपढ़ होना, बालक को अत्यधिक लाड़ प्यार देना, बचपन में बालक की पढ़ाई पर ध्यान न देना, आर्थिक तंगी, पिता-भाई का शराबी होना, बालक का रोजगार से जुड़ना, छोटे भाई बहनों को रखना, आसपास का वातावरण ठीक न होना, स्कूल में बुरी संगत में पड़ना, अध्यापकों द्वारा उपेक्षित होकर उनके गुस्से का शिकार होना।

उपर्युक्त सभी कारणों के चलते स्कूल से पलायन करना आदि। बहुत से माता-पिता प्रारंभ में उत्साहित हो, बच्चों को स्कूल में प्रवेश दिलाते हैं। छोटी कक्षा में उसकी पढ़ाई पर थोड़ा बहुत ध्यान देते हैं। जब बच्चा पढ़ने-लिखने लग जाता है, तब माता-पिता उसकी पढ़ाई के प्रति उदासीन हो जाते हैं और अपने हाल पर छोड़ देते हैं या ज्यादा हुआ तो किसी ट्यूटर के पास रख अपने कर्त्तव्य की इतिश्री कर लेते हैं। परिणाम आप सब जानते ही हैं। बालक चौथी-पाँचवीं

जमात में जाते-जाते वह न तो किताब पढ़ना जानता है और न ही गणित की मूलभूत क्रियाओं को (जोड़-बाकी-गुणा-भाग) भी नहीं कर सकता है। ऐसे बालकों को कक्षा में शैक्षिक दृष्टि से कमजोर बालक के नाम से जाना जाता है।

आइए हम जरा गंभीरता से गौर करें। मनन चिंतन करें प्रकृति परिवेश ने ऐसे कमजोर बालकों के साथ न्याय नहीं किया तो क्या हम उन्हें ऐसे ही हाल में छोड़ दें। नाकामियों की ठोकरे खाता-खाता वह अच्छा इंसान न बन सकें। सामान्य सी कमजोरी उसकी राह का रोड़ा बन जाए। हमारी थोड़ी सी लापरवाही उसके जीवन का अभिशाप बन जाएँ। नहीं.... नहीं ऐसा करना उसके साथ सरासर अन्याय करने के समान होगा।

ईश्वर ने हर इंसान को दिमाग दिया है। बुद्धि दी है। यदि उसे उचित परिवेश और वातावरण मिले तो वह भी मुरझाये पौधे की तरह हरा-भरा हो सकता है यानि होशियार बन सकता है। इसीलिए तो कहा है-

करत-करत अभ्यास के,
जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते,
सिल पर पड़त निशान।।

यदि यह सच है तो आइए पढ़ाई में कमजोर बालकों को निम्न निदानात्मक उपायों को अपना कर उसे आगे बढ़ाने में मदद कर उसकी कमजोरी को दूर सकते है।

1. **जगाए आत्मविश्वास :-**
आत्म विश्वास वह सीढ़ी है जिसके सहारे सफलता की मंजिल पर पहुँचा जा सकता है। कमजोर बालक में आत्मविश्वास जगाएँ। उसे एहसास कराएँ कि वह कमजोर नहीं है। थोड़ी सी मेहनत और लगन से आगे बढ़ सकता है।

2. **उपलब्ध हो साधन सुविधाएँ :-**
पर्याप्त संसाधन विकास की कुंजी है। कमजोर बालक के पास पढ़ाई के सभी साधन सुविधाएँ उपलब्ध हो। मसलन पाठयपुस्तकें, कापियाँ, पेन, ड्रेस, फीस आदि से बालक में स्वतः ही आत्म विश्वास पैदा होगा और वह पढ़ने में रुचि लेगा।

3. **जाने शैक्षिक कमजोरी, दूर करें :-**
सबसे पहले बालक की पढ़ाई का स्तर जाँच ले। यदि प्रारंभिक कमजोरी है तो उसे दूर करें। इसलिए परिवार में माँ का अहम रोल होता है। अन्य सदस्य भी कमजोरी दूर कर सकते हैं। आवश्यकता है नियमित घंटे दो घंटे अभ्यास की।

4. **सतत् अभ्यास :-**
पढ़ाई में सतत् अभ्यास नींव को मजबूत करने का काम करती है। इससे लक्ष्यों, अवधारणाओं, क्रियाओं-प्रतिक्रियाओं, संश्लेषण-विश्लेषण, सूत्रों आदि को समझने में स्थायित्व आता है। उसमें सोचने समझने की बुद्धि का विकास होता है। जिससे प्रोत्साहित हो बालक के आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त होता है।

5. **दूर करें हीन भावना :-**
नकारात्मक बातें बालकों में हीन भावना पैदा करती हैं। वह कमजोर है यह बात उसके मन में घर कर जाती है। ऐसे में बालकों को प्रोत्साहित करें। प्रेरणादायक प्रसंगों, संस्मरणों, उद्धरणों और महापुरुषों की जीवनियों को जोड़ते हुए उसे उत्साहित करें।

6. हो डांट फटकार से दूर :–

पढ़ाई में डांट फटकार बालकों में हीन भावना पैदा करती है। तू बुद्धू है। गधा है। पाजी है। नालायक है। तू नहीं पढ़ सकता। ऐसे जुमलों का कदापि प्रयोग न करें। डांट–फटकार, प्रताड़ना एवं मारपीट के बजाय कमजोर बालकों को आपकी सहानुभूति, प्यार, विश्वास और सहारे की आवश्यकता है। आपके प्यार के दो मीठे बोल और पीठ पर प्यार की थपकी उसकी जिंदगी बदल सकती है।

7. हो सतत् मूल्यांकन :–

नियमित मूल्यांकन पढ़ाई की प्रगति का मापन होता है। इससे कमजोर बालक के सीखने के स्तर का पता चलता है। अगर स्तर कमजोर है तो पुनः ध्यान देकर अभ्यास के द्वारा पुख्ता उपलब्धी प्राप्त की जा सकती है।

8. करें हौसला अफजाई :–

तारीफ के दो शब्द जादू का काम करते हैं। समय समय पर कमजोर बालकों की प्रशंसा–तारीफ उसके लिए संजीवनी का काम करती है।

9. उपहारों की दें सौगात :–

सफलता मिलने पर मिलने वाला तोहफा बालक को ऊर्जावान बनाएँ रखता है। कमजोर बालक के शैक्षिक उन्नयन पर यदि वह आशातीत प्रगति करता है तो प्रोत्साहन स्वरूप उसे उपहारों की सौगात दी जा सकती है।

10. मिले भरपूर सहयोग :–

कमजोर बालकों को स्कूल एवं घर पर पढ़ाई के प्रति भरपूर सहयोग मिले। दोनों ओर से निष्ठा, समर्पण की भावना के साथ सतत् जी तोड़ मेहनत करनी होगी। संत्रारभ जुलाई से लेकर सत्रांत तक अतिरिक्त कक्षाएँ लगा कर कमजोर स्तर को दूर किया जा सकता है।

बालक स्कूल में प्रवेश करता है। अपने गुरुजनों के सानिध्य में पढ़ता–लिखता वह मासूम आपको देवता समझता है। समर्पित भाव से आपके समक्ष नतमस्तक हो हर तरह से वह आपका हो जाता है। जैसा आप उसे ढालना चाहते है वह उस साँचे में ढलता जाता है।

आप बालक के जीवन के रचनाकार है, निर्माता है। उसके भाग्य विधाता है। आप में वह कुव्वत है उससे हर तरह बालक को पुष्ट, सशक्त और योग्य बना सकते हैं तो आइए पढ़ाई में कमजोर बालक कातर नजरों से आपको निहार रहा है। वह कह रहा है कि उसके जीवन में उजाले कि कुछ किरणे बिखरा दो ताकि वह अपने पैरों पर खड़ा हो समाज, देश और राष्ट्र की सेवा कर सकें।

उसे इतना योग्य और सशक्त बना दो कि उसके कदम लड़खड़ाने न लगे। बस यह आशीर्वाद आपका उस मासूम बालक को मिल जाए तो समझो वह धन्य हो गया।

से.नि.प्र. (राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत)
देवेन्द्र टॉकीज के पीछे, छोटीसादड़ी,
जिला प्रतापगढ़ (राज.)–312604
मो. 9460607990

बाल दिवस विशेष

चाचा नेहरु

❒ जगदीश चन्द्र शर्मा

भारत माँ के लाडले, मोती के दुलारे नेहरु।
स्वतंत्रता की बलिवेदी पर, हो जाते न्यौछावर नेहरु।।

बच्चों के इकलौते चाचा, राष्ट्र के जवाहर नेहरु।
गाँधीजी की बाँह थाम कर, घर–घर अलख जगाते नेहरु।।

भारत माँ के लाडले.....

बच्चा–बच्चा धुन यह गाता, प्यारे चाचा, प्यारे चाचा।
स्वतंत्रता के दीवानों की टोली, खूब बढ़ाता जाता।।

भारत माँ के लाडले.....

स्वदेशी की खादी टोपी, अचकन फूल गुलाब सुहाता।
गाँव–गाँव, ढाणी–ढाणी में, आजादी की अलख जगाता।।

भारत माँ के लाडले.....

बनकर प्रथम प्रधानमंत्री, भारत माँ का मान बढ़ाता।
पंचशील सिद्धांत बताकर, विश्व शाँति भान जगाता।।

भारत माँ के लाडले.....

निरपेक्षता का प्रतिपादन कर, सर्वधर्म समभाव जगाया।
ऊँच–नीच का भेद भुलाकर, प्रगति पथ पर बढ़ना सिखाया।।

भारत माँ के लाडले.....

आओ बच्चों, आओ बच्चों, प्यारे चाचा तुम्हें बुलाते।
जात–पात का भेद भुलाकर, एकता का मंत्र सिखाते।।

भारत माँ के लाडले.....

व्याख्याता (हिन्दी)
रा.उ.मा.वि., बारानी, भीलवाड़ा
मो: 9413863435

शैक्षिक चिन्तन

शिक्षा एवं समाज

❒ सत्यपाल अवस्थी

शिक्षा के महत्त्व को दर्शाती ये संस्कृत की पंक्ति हमें बहुत कुछ बयान कर देती है–

माता शत्रु पिता वैरी येन बालो न पाठितः।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा।।

प्रसिद्ध समाजशास्त्री श्री मेन्जर के अनुसार समाज व्यक्तियों का एक ऐसा समूह होता है जिसमें सभी व्यक्ति किसी सामान्य कार्य में सचेत रूप से भाग लेते हैं।

समाज एवं शिक्षा में अटूट सम्बन्ध है। भले ही हम शिक्षा एवं समाज के वर्तमान स्वरूप से परिचित हैं फिर भी हम पहले शिक्षा व समाज के सम्बन्धों पर विचार कर लेते हैं। समाजशास्त्रीय भाषा में समाज एक संप्रत्यय एवं सामाजिक सम्बन्धों का जाल है। सामान्य तौर पर दो या दो से अधिक व्यक्तियों से मिलकर बने सामाजिक सम्बन्धों को समाज कहते हैं। वर्तमान में संसार में प्रायः सभी राष्ट्रों में शिक्षा की व्यवस्था का दायित्व राज्य का माना जाता है और इस दृष्टि से राज्य विशेष की संपूर्ण जनता उस राज्य का समाज होती है।

अतः जब हम शिक्षा के संदर्भ में समाज की बात करते हैं तो हमारा तात्पर्य राज्य अथवा राष्ट्र विशेष की संपूर्ण जनता से ही होता है। जब हम इस प्रकार के किसी समाज का अध्ययन करते हैं तो उसके अन्तर्गत उसके घटक व्यक्ति व समूह के सामाजिक संबंधों अथवा सामाजिक अन्तःक्रियाओं का ही अध्ययन करते हैं। तथ्य यह है कि जैसा समाज होता है वैसी ही उसकी शिक्षा होती है। वैसा ही वह समाज बन जाता है।

समाज का शिक्षा पर प्रभाव– प्रत्येक समाज अपनी मान्यताओं एवं आवश्यकताओं के अनुकूल ही अपनी शिक्षा की व्यवस्था करता है और समाज की मान्यता एवं आवश्यकता उसकी भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक और आर्थिक स्थिति पर निर्भर करती है। समाज में होने वाले परिवर्तन भी उसके स्वरूप एवं आवश्यकताओं को बदलते है और उसके अनुसार उसकी शिक्षा का स्वरूप बदलता रहता है। यहाँ इनका वर्णन संक्षेप में है–

1. समाज की भौगोलिक स्थिति और शिक्षा– भौगोलिक स्थिति किसी भी समाज के जीवन को प्रभावित करती है तब उसकी शिक्षा का प्रभावित होना भी स्वाभाविक है। जिन समाजों की भौगोलिक स्थिति ऐसी होती है जहाँ मनुष्य को जीवन रक्षा के लिए कड़ा संघर्ष करना पड़ता है। वहाँ समाज के व्यक्तियों के पास शिक्षा के लिए ना समय होता है और ना धन। परिणामतः यहाँ जन शिक्षा की व्यवस्था नहीं होती। इसके विपरीत जिन समाजों की भौगोलिक स्थिति मानव के अनुकूल होती है और प्राकृतिक संसाधन भरपूर होते हैं। वहाँ व्यक्तियों के पास शिक्षा के लिए समय व धन दोनों होते हैं। परिणामतः वहाँ शिक्षा की उचित व्यवस्था होती है।

यह तथ्य भी सर्व विदित है कि जिस देश में जैसे प्राकृतिक संसाधन उपलब्ध होते हैं उनमें वैसे ही उद्योग–धन्धे पनपते हैं और इन्हीं के अनुकूल वहाँ की शिक्षा व्यवस्था की जाती है।

2. समाज की संरचना और शिक्षा– भिन्न–भिन्न समाजों के स्वरूप भी भिन्न–भिन्न होते हैं। कुछ समाजों में जातियाँ होती हैं और जाति भेद भी। कुछ समाजों में जातियाँ होती हैं परन्तु जाति भेद नहीं होता। कुछ समाजों में उच्च वर्ग व निम्न वर्ग होता है, कुछ में नहीं होता। समाज विशेष के इस स्वरूप का उनकी शिक्षा पर प्रभाव पड़ता है। भारतीय समाज को ही लीजिए जब यहाँ कठोर वर्ण व्यवस्था थी तब शूद्रों को उच्च शिक्षा से वंचित रखा जाता था और जब वर्ण भेद में विश्वास नहीं किया जाता तो समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए शिक्षा की समान सुविधाएँ उपलब्ध कराने का नारा बुलन्द है।

3. समाज की संस्कृति और शिक्षाः– किसी समाज की संस्कृति से तात्पर्य उनके रहन–सहन एवं खान–पान की विधियों व्यवहार प्रतिमानों, आचार–विचार, रीति–रिवाज, कला–कौशल, संगीत–नृत्य, भाषा–साहित्य, धर्म–दर्शन आदर्श विश्वास और मूल्यों के विशिष्ट रूप से होता है जिसमें उनकी आस्था होती है और जो उसकी पहिचान होते हैं। किसी समाज की शिक्षा पर सर्वाधिक प्रभाव उसकी संस्कृति का ही होता है।

4. समाज की आर्थिक, स्थिति और शिक्षाः– समाज की आर्थिक स्थिति भी उसकी शिक्षा को प्रभावित करती है। आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न समाजों की शिक्षा व्यवस्था बहुद्देशीय होती है। वह अपने प्रत्येक सदस्य के लिए अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था करते है। अमेरिका जैसा देश प्रगतिशील शिक्षा जन शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा पर अधिक बल देता है। आर्थिक दृष्टि से पिछड़े देश अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा के बारे में सोच भी नहीं पाते। कृषिप्रधान अर्थतंत्र में शिक्षा की संभावनाएँ कम होती हैं। वाणिज्यप्रधान में अपेक्षाकृत उससे अधिक और उद्योगप्रधान में सबसे अधिक होती है।

5. सामाजिक परिवर्तन और शिक्षाः– समाज में परिवर्तन के साथ शिक्षा का स्वरूप भी बदलता है। हम भारतीय समाज को ही ले तो प्राचीनकाल में इसकी भौतिक आवश्यकताएँ कम थी और आध्यात्मिक पक्ष प्रबल था। इसलिए शिक्षा के क्षेत्र में धर्म और नीतिशास्त्र की शिक्षा पर अधिक बल दिया जाता था परन्तु आधुनिक युग में आध्यात्मिक पक्ष निर्बल पड़ गया। आज शिक्षा में विज्ञान व तकनीक को महत्त्व दिया जाने लगा है। विशेषतः बालिका शिक्षा में आधुनिक काल में बहुत प्रगति हुई है तथा आज महिलाएँ भी पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर हर सेवा क्षेत्र में आगे बढ़ रही है और देश की प्रगति व विकासार्थ अपना योगदान दे रही है।

व्याख्याता (संस्कृत)
ग्रा.पो.–खोहरा मलावली, तह. लक्ष्मणगढ़,
अलवर–321633
मो: 9950385063

बाल-सुरक्षा

विद्यार्थी सुरक्षा विद्यालय प्रबन्धन का एक पहलू

❒ रवीन्द्र दाधीच

सूरत (गुजरात) में 24 मई, 2019 को हुए अग्निकाण्ड ने पूरे देश को झकझोर दिया। एक कॉम्प्लेक्स की चौथी मंजिल पर चल रही कोचिंग क्लास के 20 विद्यार्थी, जिनमें अधिकतर छात्राएँ थी व एक शिक्षिका कुछ ही क्षण में काल के ग्रास बन गए। घटना के वीडियों में देखा तो लगा जैसे कि फंसे हुऐ विद्यार्थी बचने की कौशिश करने के स्थान पर अपनी जान दाँव पर लगा रहे थे। बाहर फायर ब्रिगेड की गाड़ियाँ खड़ी थी और विद्यार्थी बिना कुछ देखे नीचे कूद रहे थे। यहाँ लगता है कि कुछ अच्छा किया जा सकता था बाहर से भी और भीतर से भी।

यह घटना हमारे विद्यालयों के लिए भी प्रासंगिक है। विद्यालयों में ऐसी दुर्घटनाएँ न हो इसके लिए पूर्व तैयारी करना आवश्यक है। और यदि दुर्घटना होती है तो उसके प्रभाव को कम से कम किया जा सके। ऐसा प्रयास हो।

"A Stitch in time saves nine."

विद्यालय में कुछ क्षैत्रों में, जो सामान्यत : सभी विद्यालयों से सम्बन्धित है, विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए। इनमें भी मध्याह्न भोजन व अन्नपूर्णा दुग्ध योजना में सर्वाधिक सावधानी बरते जाने की आवश्यकता है, बनाने में भी व पकाने में भी। भोजन पकाने का कार्य प्रायः एल.पी.जी. गैस द्वारा किया जाता है। इसमें गैस की रबर की नली व गैस सिलेण्डर के वॉशर से गैस रिसाव से सिलेण्डर के आग पकड़ने की आशंका रहती है। सिलेण्डर के आग पकड़ने के बाद इसे बुझाना बहुत मुश्किल होता है। इससे बचने के लिए प्रतिदिन रसोईघर में गैस सिलेण्डर के रेग्युलेटर को बन्द करें। सुबह जब रेग्युलेटर चालू करें तब निश्चित हो जाएँ कि रेग्यूलेटर में गैस रिसाव तो नहीं हो रहा है। यदि रिसाव हो रहा है तो उस सिलेण्डर का उपयोग न करें तथा गैस वितरक को सूचना दे। गैस की रबर की नली को अधिकतम दो वर्षों में बदल देना चाहिए। सिलेण्डर के आग पकड़ लेने पर शुरूआत में जब आग की लपटें कम होती है, धैर्य व साहस के साथ रेग्यूलेटर बन्द करने पर आग बुझ जाती है। आग की लपटे तेज होने पर सर्वप्रथम विद्यार्थियों को सुरक्षित स्थान पर पहुँचाएँ तथा फायर ब्रिगेड को 101 पर फोन कर सूचित करना चाहिए। विद्यालयों में अग्निशामक यंत्र है तो इसका उपयोग आग को शुरुआती स्थिति में रोक सकता है।

पौषाहार हेतु सामग्री क्रय करने एवं बनाने में भी विशेष सावधानी की आवश्यकता है। बिहार राज्य के सारन जिले में 16 जुलाई, 2013 को, पौषाहार में पेस्टिसाइड मिला होने की वजह से, पौषाहार खाने से 23 विद्यार्थियों की मृत्यु से संज्ञान लेते हुए शिक्षा विभाग राजस्थान ने इस प्रकार की घटनाओं से बचाव हेतु एक गाइडलाइन जारी की थी। इसमें विद्यालयों में पौषाहार को विद्यार्थियों को परोसने से पूर्व विद्यालय के किसी अध्यापक द्वारा चखना भी आवश्यक है। इसके लिए एक रजिस्टर का संधारण भी किया जाता है जिसमें चखने वाले के हस्ताक्षर भी हों। अन्नपूर्णा दुग्ध योजना में भी दूध को विद्यार्थियों को वितरण से पूर्व विद्यालय स्टाफ में से किसी के द्वारा चखा जाकर रजिस्टर संधारित किया जाना चाहिए। इस प्रकार पौषाहार व दूध बनाने व पकाने में किसी अनहोनी से बचा जा सकता है।

विद्यालयों से जुड़े अन्य कई पहलू है जो दुर्घटना का कारण बन सकते हैं। समय रहते उपाय करने पर इनसे बचा जा सकता है। विद्यालय में बिजली फिटिंग सुरक्षित होनी चाहिए। दरवाजों के पास से तार नहीं निकालने चाहिए। दरवाजे खुलने व बन्द होने से ये कट सकते हैं तथा दरवाजों में करंट आ सकता है। कई बार किसी कारणवश कक्षा-कक्षों में बिजली के स्विच बोर्ड टूट जाते हैं तथा तार व स्विच खुल जाते हैं। इन्हें अविलम्ब ठीक करवाना चाहिए।

अधिकतर विद्यालय व्यस्त सड़क के किनारे स्थित होते हैं। यह सुविधा, असावधानी के कारण दुर्घटना का कारण बन सकती है। विद्यार्थियों के आने व जाने के समय तथा अर्द्ध विश्राम के समय विद्यालय द्वार पर विशेष सावधानी की आवश्यकता होती है। किसी रैली या बालसभा हेतु विद्यार्थियों को सार्वजनिक स्थानों पर ले जाने व वापस लाने के दौरान मार्ग पर विद्यार्थी कतार बद्ध होकर चले, नियमित अन्तराल पर अध्यापक, विद्यार्थियों के साथ-साथ चलें तथा मार्ग पर आने जाने वाले वाहनों या अन्य खतरों जैसे नदी, तालाब से विद्यार्थियों की सुरक्षा करें।

यदि विद्यालय भवन का कोई भाग जीर्ण शीर्ण है तो उसके आसपास विद्यार्थियों को नहीं जाने दें। ऐसे भवन के लिए यदि मरम्मत संभव है तो एसडीएमसी. में प्रस्ताव लेकर मरम्मत करवाएँ। यदि मरम्मत संभव नहीं है तो उच्चाधिकारियों को अवगत कराएँ तथा उनके आदेशानुसार जीर्ण-शीर्ण भवन को एसडीएमसी. के सहयोग से जमींदोज करने का कार्य प्रक्रिया का पालन करते हुए शीघ्रातिशीघ्र संपादित कराएँ।

विद्यालयों के सम्मुख कई और चुनौतियाँ भी है। जिनके बारे में कई बार घटना होने के बाद ही पता लगता है। ऐसे में सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि विद्यार्थियों एवं स्टाफ को समय-समय पर प्रार्थना स्थल या बालसभा में विभिन्न प्रकार की दुर्घटनाओं जैसे भूकंप, बाढ़, पानी में डूबने, किसी वाहन से टकराने, जहरीले कीडे के काटने या सर्प दंश, बिमारियों का प्रकोप इत्यादि के बारे में बताया जाए। इसके साथ ही यह भी बताया जाए कि उक्त घटनाएँ होने पर किस तरह से हम स्वयं को व दूसरों को सुरक्षित रख सकते हैं।

दुर्घटना कैसी भी हो पर व्यक्ति के तीन गुण ऐसे है जिनसे किसी दुर्घटना को टाला जा सकता है या उस दुर्घटना के प्रभाव को कम किया जा सकता है। ये गुण है-धैर्य, अनुशासन व सामूहिकता। अतः विद्यार्थियों में विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से इन गुणों का विकास किया जाना चाहिए।

प्रधानाध्यापक, रा.मा.वि., अल्फानगर,
पं.स. तालेड़ा, जिला बून्दी (राज.)
मो. 9413166447

बाल दिवस विशेष

बच्चे को डाँटिए नहीं, रुचि पहचानिए

❒ पवन चौहान

के. जी. कक्षा में पढ़ने वाली आकांक्षा जहाँ पढ़ाई में होशियार है वहीं वह घर के अन्य कार्यों में गहरी रुचि रखती है। जब उसकी मम्मी रोटियाँ बनाती है तो वह भी साथ में रोटियाँ बेलने लग पड़ती है। जब उसकी मम्मी कपड़े धोती है तो वह भी अपना, रुमाल, स्कूल की जुराबें और अपने व्हाइट सूज लेकर धोने लग जाती है। लेकिन उसे काम सिखाने के बजाय घर वालों की डाँट खानी पड़ती है और जबरदस्ती पढ़ने बैठा दिया जाता है।

छः वर्षीय आस्था किसी चीज के बारे में तब तक प्रश्न करती रहती है जब तक उसे उस चीज के बारे में पूरी जानकारी न मिल जाए। लेकिन छोटी सी इस आस्था के प्रश्नों को अनावश्यक समझकर या तो टाल दिया जाता है या फिर डांट कर चुप करा दिया जाता है।

आठ साल का अंतरिक्ष उन सिक्कों को इकट्ठा करने का शौक रखता है जिसमें कोई तस्वीर छपी हो। इनको इकट्ठा करते हुए वह उस तस्वीर से जुड़ी जानकारी को घरवालों, अध्यापकों या फिर अपने दोस्तों से जानने की कोशिश करता है। यह नई चीज को सीखने का एक बेहतरीन शौक है। परंतु उसके इस शौक की परवाह किए बगैर घर का कोई न कोई सदस्य चेंज के लिए कभी उसके पैसे ही निकाल लेता है। राहुल के पापा लेखक हैं तो उनके घर में रोजाना कोई न कोई डाक जरूर पहुँचती है। वह डाक के लिफाफों से डाक टिकट इकट्ठा करके अपनी एक कोरे कागज वाली कापी पर सलीके से उन्हें चिपकाता रहता है। उसने तरह-तरह के टिकट जमा कर रखे हैं। लेकिन उसके इस शौक को घरवाले 'कबाड़' कहकर उसकी इस रुचि पर हमेशा प्रहार करते हैं। ऐसे कई उदाहरण हैं जो बताते हैं कि घर वाले जाने-अनजाने में बच्चों की रुचियों को बेदर्दी से कुचलकर उनकी ऑल राउंड डवलपमेंट में बाधा उत्पन्न कर बैठते हैं। ऐसी स्थिति में बच्चा या तो इस तरह की अच्छी आदतों से किनारा कर लेता है या उसमें आत्मविश्वास की कमी, किसी चीज को जानने

की उत्सुकता या रुचि धीरे-धीरे दम तोड़ देती है। उसमें नकारात्मक सोच पनपने लग जाती है। बच्चों के साथ ऐसा कुछ न हो इसलिए कुछ बातों पर ध्यान देना जरूरी हो जाता है।

- **बच्चों की रुचियों पर विशेष ध्यान दें**

अक्सर देखा जाता है कि माँ-बाप बच्चे की परवरिश के दौरान उसके न चाहते हुए भी अपनी इच्छाओं, रुचियों को उस पर थोपने की भरपूर कोशिश करते हैं। ऐसा करने से बच्चे में आलसीपन और पढ़ाई के प्रति नकारात्मकता का भाव पनप जाता है। इसलिए बच्चे की रुचियों को गहनता से समझ करके ही उसे उसी प्रकार की शिक्षा देने का प्रयास करें।

- **बच्चों को अपने साथ रखें**

बच्चा देख-देख कर स्वयं भी बहुत-सी बातें सीख जाता है। लेकिन आपकी देख-रेख में वह उन बातों को सही और बेहतर ढंग से सीखता है। इसलिए हो सके तो खाली वक्त में कुछ समय उसे अपने साथ रखें। घर की हर चीज के साथ-साथ अन्य चीजों के रख-रखाव व उनके इस्तेमाल की जानकारी दें। इससे उसमें जिम्मेदारी का भाव पनपेगा और चीजों के प्रति लगाव बढ़ेगा। इससे यह लाभ होगा कि जब भी आप घर में अकेले होंगे बच्चा आपके लिए मददगार साबित होगा।

- **हर संभव जानकारी दें**

बच्चे का दिमाग बहुत तेज होता है। वह हर बात को आसानी से समझ जाता है। यदि बच्चा आपसे किसी चीज के बारे में पूछता है तो उसे हर संभव जानकारी देने का प्रयास करें। छोटी उम्र का होने के कारण उसकी बातों को अनावश्यक समझकर न टालें। यदि आपके बच्चे के पूछे प्रश्न की जानकारी आपको नहीं है तो आस-पड़ोस के लोगों, प्रदर्शिनियों या उसके रुचिकर स्थान पर ले जाकर उसकी जिज्ञासा को शांत कर सकते हैं।

- **बच्चों को प्यार से समझाएँ**

बच्चों के सवालों पर अभिभावक का खीझना एक आम बात है। माता-पिता के ड्यूटी से थके होने के कारण कई बार तो बच्चों को अच्छी खासी डाँट या फिर मार तक खानी पड़ती है। यह तो अपनी जिम्मेवारी से पीछा छुड़ाने जैसी बात हो जाती है। इसके परिणाम भी नकारात्मक मिलते हैं। बच्चे में झिझक या मार का डर उत्पन्न हो जाता है। कई उत्सुकताएँ जन्म लेने से पहले ही मर जाती हैं। उसमें धीरे-धीरे आत्मविश्वास का ह्रास होने लगता है। वह सवाल का जवाब जानते हुए भी डर के कारण चुप रहने लग पड़ता है। यह स्थिति बड़े होकर बच्चे के कॅरियर में परेशानी का सबब बन सकती है।

- **याद रखिये !**

अपनी रुचियों के लिए सही जानकारी, मार्गदर्शन और प्रोत्साहन मिलने पर आपका बच्चा उन ऊँचाइयों को भी छू सकता है जिसकी आपने कल्पना भी न की हो। इसलिए अपनी इच्छाएँ उस पर थोपने से पहले बच्चे की इच्छाओं का सम्मान करना सीखें। कच्चे घड़े को सही रूप देना आपके हाथ में है लेकिन इस बात का हमेशा ख्याल रखें कि वह रूप ऐसा न बन जाए कि आपका घड़ा, घड़ा न रहकर कोई और ही रूप अख्तियार कर ले। इसीलिए कहा जाता है कि माता-पिता भी गुरु समान हैं।

गुरु कुम्हार शिष कुंभ है गढ़ि-गढ़ि काढे खोट।
अन्तर हाथ संभारि दे बाहिर बाहे चोट।।

ग्राम पोस्ट-महादेव
तहसील-सुन्दरनगर, जिला-मण्डी
हिमाचल प्रदेश-175018
मो. 09805402242

शैक्षिक चिन्तन

नेतृत्व एक दृष्टि

❒ श्रवण सिंह राजपुरोहित

वर्तमान शिक्षा क्षेत्र जिस परिवर्तन के दौर से गुजर रहा हैं, उसके बारे में सभी चिन्तन तो कर रहे हैं किन्तु चिन्ता को खत्म कर परिवर्तन की दिशा को बदलने की क्षमता किसी में नहीं है। जब समाज अनुशासित था, संयमी था, लोगों में परस्पर मेल-जोल एवं आदर भाव था तब समाज का नेतृत्व हो या विद्यालय का नेतृत्व हो, नेतृत्व आसान भी था। थोड़ा विवेक और धैर्य व्यक्ति को सफल बना देता था। लेकिन आज विपरीत भाव हैं तो नेतृत्व भी आसान नहीं है।

किसी क्षेत्र में परिवर्तन जितना बड़ा लाना होता है, क्षमता उससे बड़ी होनी चाहिए। दूसरी बात यह भी है कि विपरीत परिवर्तन को हवा देने वाली शक्तियाँ मजबूत होती है, जो दस-दस हाथों वाली होती हैं। टेलीविजन, वाट्सअप, फेसबुक, ट्विटर आदि सोशियल मीडिया के साधन आज परिवर्तन के अग्रज है, जो कि प्रचार-प्रसार के माध्यम भी आज इस होड़ में पीछे नहीं रहना चाहते हैं। सकारात्मक परिवर्तन का अभियान अधिक शक्तिशाली होना चाहिए तभी सफल होगा अन्यथा नहीं।

विद्यालय/संस्था में कार्यरत साथी शिक्षित तथा ज्ञानवान हैं लेकिन सुविधा उनकी मानसिकता के मूल से भरी हुई है। जिससे शिक्षक की कार्यक्षमता एवं चारित्रिकता में निरन्तर गिरावट भी आती जा रही है। स्वयं का आकलन उसके बस की बात नहीं रही है वो सिर्फ दूसरों का आकलन करने में स्वयं की क्षमता को फिजूल खर्च कर रहा है, जिससे विद्यालय, घर या समाज सभी जगह अनुशासन घटता जा रहा है। जब व्यक्ति संकुचित मानसिकता में बड़ा होता है, ऐसे व्यक्ति को नेतृत्व मिलना ही व्यवस्था पर प्रहार करने जैसा होता है। नेतृत्व तभी सफल होगा जब नेतृत्व कर्त्ता संयम एवं त्याग का परिचय देगा, समय पर कठोर निर्णय भी करेगा।

नेतृत्व को पारदर्शी होना पड़ेगा साथ ही आवश्यक है कि नेतृत्व पारदर्शी दिखाई भी देवे। विद्यालय को नेतृत्व देना है तो उसका आदर नेतृत्व की पहली शर्त है। लेकिन वर्तमान में तो ठीक इसके विपरीत हो रहा है, किसी न किसी बहाने व्यवस्था को खंडित करने एवं चाटुकारों को सुविधा देने का तरीका निर्बाध चल रहा है। विद्यालय हो या समाज चाहे उसके नागरिकों की आर्थिक, सामाजिक और शैक्षणिक स्थिति कैसी भी हो, उसे एक ही डंडे से हाँकने का प्रयास होता है, इसलिए हमारे यहाँ गुटबाजी उभर के आती है जिससे हर साथी अपने को अलग मानकर चलता है तथा अलग पहचान बनाना चाहता है जिससे सामूहिक पहचान एवं नेतृत्व संकट में आ जाता है। नेतृत्व के लिए परम आवश्यक है कि सभी की पहचान को बनाए रखने में गर्व अनुभव करें। उसी से नेतृत्व की पहचान भावी पीढ़ी तक पहुँच सकती है। नेतृत्व ऊर्जावान होना चाहिए, नेतृत्व इंजन की तरह कार्य करता है, नेतृत्व में ऊर्जा मन और प्राण की होनी चाहिए। मन का आधार/धरातल साफ-सुथरा हो, सशक्त हो, समावेशी हो, समभावी हो तभी सशक्त और कुशल नेतृत्व सम्भव है। एक मुहावरा है जैसा खावे अन्न, वैसा होवे मन। आज जमाना तेजी से बदल रहा है वैसे ही अन्न भी बदल रहा है। सभी फास्ट फूड खाने में लगे हैं, कोई प्रतीक्षा करने को तैयार नहीं हैं। सभी तुरन्त निर्णय एवं सुविधा चाहते है। धैर्य एवं संयम सभी खोते जा रहे हैं। सभी को अधिकार चाहिए, कर्त्तव्य की कोई बात ही नहीं करता है। तब कुशल नेतृत्वकर्त्ता को चाहिए कि वो ऐसा आधार तैयार करें जिससे नकारात्मक परिवर्तन रुके तथा सकारात्मक बदलाव की पहल हो।

संस्था/विद्यालय में सकारात्मक वातावरण का निर्माण नेतृत्व का आवश्यक गुण है इसके बिना कुशल नेतृत्व दूर की कौड़ी है। सभी के विचारों पर सकारात्मक वातावरण का प्रभाव पड़ता है तथा इसी से नेतृत्व के लक्ष्य बनते-बिगड़ते हैं। विद्यालय में शिक्षकों में कुछ आदतें ऐसी होती हैं जो व्यवस्था को बदत्तर बनाने वाली होती है। यथा देरी से आना, जल्दी जाना, बंक मारना, निर्धारित समय तक सौंपे गए दायित्व को पूरा नहीं करना, विद्यालय समय के अतिरिक्त कार्य करना स्वयं की शान के विरुद्ध समझना, कक्षा-कक्ष में बैठे-बैठे पढ़ाना, छात्रों से पाठ्यपुस्तक की रीडिंग करवाकर पाठ्यक्रम को पूरा कर देना आदि। उपर्युक्त परिस्थितियों में नेतृत्वकर्त्ता के समक्ष चुनौतियाँ बढ़ जाती है। लेकिन नेतृत्व को निराश नहीं होना चाहिए। नेतृत्व को स्वयं सुधार की शुरूआत करनी चाहिए। जैसा विद्यालय का वातावरण है नेतृत्व की दिशा उस वातावरण से तय करनी होगी जैसे सलाहकार होंगे वैसी ही नीतियाँ बनेगी तथा उधर ही विद्यालय जाएगा। अतः सलाह का चयन सोच समझकर करना चाहिए क्योंकि नेतृत्व यदि किसी एक के साथ (एक पक्ष के साथ) लिप्त होता है तो छोटा हो जाता है। जिसका प्रभाव विद्यालय विकास एवं विद्यालय प्रबंधन पर पड़ेगा।

विद्यालय विकास एवं शिक्षा के उन्नयन हेतु अनेक योजनाएँ बनती है, प्रयास/अभियानों की शुरूआत होती है, नवाचारों का प्रयोग होता है किन्तु परिणाम कुछ नहीं निकल पाते। इसका एक ही मूल कारण है नेतृत्व की कमजोरी। कुछ संस्थाप्रधान अभियानों की सफलता हेतु धन को प्रथम शर्त मानते है लेकिन धन प्रथम शर्त नहीं है कुशल नेतृत्व प्रथम शर्त है। नेतृत्व सक्षम होगा तो धन भी एकत्र हो सकता है। अन्यथा सम्पन्न विद्यालयों में भी विकास अवरुद्ध हो जाएगा तथा धन विवादों एवं भ्रष्टाचार की जननी बन जाएगा।

> ***"उत्तम साध्य के लिए उत्तम साधनों की आवश्यकता होती है, मिट्टी का तेल जला कर हवन की सुगन्ध प्राप्त नहीं कर सकते।"***
>
> **-स्वामी रामकृष्ण परमहंस**

प्रधानाचार्य
रा.उ.मा.वि. कोटा बालियान (पाली)

पुस्तक समीक्षा

जुम्मै री नमाज

लेखक: राजेन्द्र जोशी, **प्रकाशक**: ऋचा (इंडिया) पब्लिशर्स, बीकानेर, **संस्करण**: 2018, **पृष्ठ संख्या**: 96, **मूल्य** : ₹ 200/-

दुनिया में जितनी भी तरह की दृष्टियाँ हैं, सच के भी उतने ही रूप-स्वरूप हैं। मुझे तो कई बार ऐसा भी लगता है कि इस दुनिया में सत्य और असत्य जैसा कुछ है ही नहीं, जो है वह दृष्टि है। इस निर्णय पर आते हुए मैं एक बार उलझ जाता हूँ और कुछ सुलझाने की जुगत में लगा स्वयं को और अधिक उलझा देता हूँ। मेरा सच। तुम्हारा सच। उसकी दृष्टि। मेरी दृष्टि। दृष्टियाँ ही दृष्टियाँ। हर ओर एक सत्य। इसी समय में, जब मैं राजस्थानी कहानी संग्रह 'जुम्मै री नमाज़' से निकलता हूँ तो कह सकता हूँ कि इस संग्रह की कहानियाँ, दृष्टियों का एक कोलाज है। सत्य इसलिए नहीं कह सकता क्योंकि सत्य में किसी तरह का रोमांच नहीं होता। बात होती है। जस की तस। इसीलिए कहते हैं कि यथार्थ को कहना सरल है, लेकिन सहना बहुत मुश्किल होता है। दृष्टि में एक खास तरह की ग्राह्यता होती है। युगबोध होता है। सत्य जहाँ बेधड़क, बेबाक और बेशर्म होता है वहीं दृष्टि आवरण लिए हुए होती है। दृष्टि कारण के सवालों का जवाब होती है। परतें उतारते हुए गहराई में उतरने और कुछ नया लाने को दृष्टि कहते हैं, लेकिन यहाँ यह भी सही है कि आम व्यक्ति तक सिर्फ दृष्टि भारी पड़ सकती है। उपदेश साबित हो सकती है। कहानी को जन-रंजन की विधा कहा गया है। बातपोश रात-रातभर कहानियाँ कहते थे। सुबह हो जाती, लेकिन कहानियाँ खत्म नहीं होती। रात भले ही बाकी नहीं रहती हो, बात बाकी रहती। ऐसे में सिर्फ दीठ से काम नहीं चलता। जैसे बहती है नदी, एक कल-कल भी होनी चाहिए। दृष्टि में कहन का जादू होना चाहिए। अगर कहने की युक्ति नहीं हुई तो फिर कहाँ कहानी। वेदव्यासजी ने तो पाँच हजार साल पहले ही कह दिया था कि जो जय यानी महाभारत में है, वह सृष्टि में है। फिर कहाँ बाकी रह जाता है कहना-सुनना।

लेकिन वेदव्यासजी के बाद भी अगर लेखकों को सराहना मिली है तो वेदव्यास ने झूठ तो नहीं कहा। इस बात का प्रमाण यह है कि आज होने वाली हर घटना के सूत्र महाभारत में भी मिल सकते हैं। आने वाले समय में भी शायद संभव नहीं है कि महाभारत के बाहर कुछ घटित हो। शायद तो मेरे जैसा व्यक्ति कह सकता है। प्रबुद्धजन तो मान चुके हैं कि कविता को जो कहना था, वह कहा जा चुका है। अब तो कहने का सिर्फ सलीका बाकी है। देखने का तरीका ही महत्त्वपूर्ण है। महाभारत के बाद से लेकर आज तक यही तो हो रहा है। कवि हो चाहे कथाकार, वह अर्थ निकालने में लगा हुआ है। पढ़ने, सुनने और देखने की प्रक्रिया में सामने आने वाले सत्य के नए-नए अर्थ निकाले जा रहे हैं। एक्सपेरीमेंट और ट्रीटमेंट से रोमांच पैदा करने के प्रयास हो रहे हैं। शब्दों को कुछ इस तरह इस्तेमाल किए जाने की कवायद हो रही है कि नया अर्थ, गूंज और दृश्यात्मकता पैदा की जा सके। मैं कह सकता हूँ 'जुम्मै री नमाज़' भी यही है। कथाकार राजेन्द्र जोशी इससे पहले अगाड़ी नाम से एक कहानी संग्रह राजस्थानी में अपने पाठकों को कुछ नयापन देने में सफल रहे हैं। यह सही है कि उनकी कहानियों को पुराने से परहेज है। यही वजह है कि यह संग्रह भी बात को नए तरीके से कहने की दिशा में दो कदम आगे बढ़ता है। कहानी संग्रह 'जुम्मै री नमाज़' की एक कहानी इसी नाम से है, जिसमें भारत से पाकिस्तान और फिर पाकिस्तान से भारत आने वाले एक युवक की कहानी है। पिछले दिनों ऐसे दो मामले हमारे सामने आए, जिसमें दो लोगों के पाकिस्तान की जेल में होने की खबर थी। इस संग्रह में भी दो कहानियाँ लगभग ऐसी ही भाव-भूमि की हैं। 'जुम्मै री नमाज़' के किरदार दीनदयाल उर्फ रईस की तो भारत वापसी हो जाती है, लेकिन 'सायरौ कहानी का विजय वापस आ ही नहीं पाता। इन दोनों कहानियों से लगता है कि लेखक का अपने समय से गहरा सरोकार है। वैसे, देखा जाए तो 'जुम्मै री नमाज़' सिर्फ एक कहानी नहीं है। पिछले सत्तर साल में बँटे हुए मन में भरे जहर का चित्र है। इस कहानी में पाकिस्तानी सेना के अफसरों के मन में भारत के लिए भरी हुए नफरत, मक्कारी और बदले की भावना की कई परतें उघड़ती हैं। इन दृश्यों को जब एक संवेदनशील लेखक रच रहा है तो तय है कि इसमें किसी तरह की कूटनीति नहीं होकर सच-बयानी है। संवेदना है। बोर्डर के दृश्यों का वृत्तांत देखकर लगता है, जैसे लेखक ने बोर्डर के आसपास की ज़िंदगी को बहुत करीब से देखा है। सबसे अच्छी बात यह है कि जोशी के मन में बैठा कथाकार किसी तरह के चमत्कार में भरोसा नहीं करता। जो यथार्थ है, उसका अतिक्रमण भी नहीं है, लेकिन इसका अर्थ यह भी नहीं है कि कथाकार खुद को किसी हदबंदी में बाँधे हुए है। भारत-पाकिस्तान के बीच रिश्तों की गर्माहट के कारण सीमा को पार करना मुश्किल है तो किसी तरह से एक भारतीय का पाकिस्तान जाने के बाद वापस आने वाले के लिए भी कानून एक जैसा है। फिल्मों की तरह न तो उसे वहाँ कोई फरिश्ता मिलेगा और न अपने देश में आने के बाद किसी तरह की रियायत बरती जाएगी। संयोग और हीरोइज्म से मुक्त इस कहानी में दुख है, भूख है, भेड़िये हैं, जो दीनदयाल के बूढ़े बाप को भगा देते हैं। माँ ज्यादती का शिकार होती है और दीनदयाल साथ में आई भेड़-बकरियों की भूख-प्यास को मिटाने के लिए रईस बनकर भीख माँगता है। 'जुम्मै री नमाज' में आने वालों से जकात के रूप में भीख लेने के लिए दीनदयाल का रईस बनकर आना कहानी का टर्निंग-प्वाइंट है। मुझे लगता है इस कहानी में सिर्फ दीनदयाल उर्फ रईस के पात्र से ही काम चलाया जा सकता था। बाकी सब भारत से पाकिस्तान आने वाले भरती के पात्र हैं। माँ, बाप, भेड़-बकरियाँ आदि से कहानी उपन्यास की यात्रा पर निकल जाती है। संभव है कि इस कहानी को लिखते समय राजेन्द्र जोशी के अवचेतन मन में उपन्यास लिखने की परिकल्पना रही हो। यही वजह है कि इस कहानी का फैलाव 11 पन्नों में हुआ है। 11 पन्नों की एक दूसरी कहानी 'पैलां कुण' है। संग्रह की पहली कहानी 'हत्यारो' एक अलग रंग लिए हुए है। आस और निराशा के बीच चलती इस कहानी में बताया गया है कि जरूरी नहीं कि व्यक्ति की सारी चाहतें पूरी हों ही, लेकिन ऐसे में खुद को संभालकर नहीं रख पाने वाले लोगों के अंदर एक टूटन आ जाती है। इस कहानी के मनोवैज्ञानिक पक्षों को कुछ और टटोले जाने की संभावना थी। इसके अभाव में कहानी की हथेली पर कुछ रंग रचे ही जाने से रह गए। 'कूख' कहानी तो सीधे महाभारत के काल में ले जाती है। कुंती और द्रोपदी के ही दो पात्र ऐसे नहीं है बल्कि इस तरह की नियति को भोगने वाली कई महिलाएँ हैं जो जाने-अनजाने ही कुंती और द्रोपदी जैसी नियति को भोगने के लिए विवश हैं। छिपी हुई इसलिए रह गई, क्योंकि उन्हें एक अदद वेदव्यास नहीं मिले। इस वजह से ऐसी महिलाओं के दर्द को

शब्द नहीं मिलते। गौर से देखा जाए तो यह कहानी दो कदम आगे की कहानी है, जहाँ महिला की कोख का सौदा उसका पति अपने दोस्तों से कर लेता है। महिला पर तीनों दोस्तों के लिए एक-एक बच्चा पैदा करने का दबाव होता है। पहली बार जब इस कहानी को पढ़ते हैं तो लगता है कि ऐसा संभव नहीं है। लेकिन जैसे ही इस किताब को सिरहाने रखकर सोचने लगता हूँ मेरे सामने ऐसे अनगिनत उदाहरण होते हैं। यकीनन, जैसे-जैसे हम आधुनिक होते जा रहे हैं, सत ही तो खत्म हुआ है। 'कूख' एक रोमांचित करने वाली कहानी है। आज का यह समय जब आधी दुनिया अपनी अलग पहचान के लिए प्रयास कर रही है तो यह कहानी एक दूसरा पक्ष सामने रखती है।

'विदाई' कहानी में जोशी ने दादी का एक किरदार खड़ा किया है जो लाजवाब है। परंपरा और संस्कृति की विरासत सौंपकर विदा लेती दादी का यथार्थबोध देखते ही बनता है। खासतौर से तब, जब वह हिम्मत नहीं हारती है। अपना काम स्वयं करने वाली दादी की एक ही चाहना है कि मृत्यु से पूर्व भोगना नहीं पड़े। अपने अंतिम समय को सुधारने के प्रयास में लगी दादी की इस कहानी की बुनावट शानदार है। प्रेरक और संवेदना से भरी हुई इस कहानी में धींगा-गवर का एक आख्यान समूचे नारी-लोक का बयान है। धींगा-गवर की कहानी को आदमी नहीं सुन सकते, इस कायदे को लेखक ने खूबसूरती से पिरोया है। कहानी में कुछ नहीं कहने के बाद भी कुछ कहने की विशेषता दृष्टिगोचर होती है। हालांकि लेखक भी धींगा-गवर की कथा से पर्दा नहीं उठाते हैं, लेकिन इस बात का कहानी में गहरा इशारा है कि महिलाएँ परस्पर कितनी प्रतिबद्ध होती हैं। अगर इस कहानी में महिलाओं के बीच होने वाली रोजाना की खटपट के बीच से एक कथासूत्र आपसी लगाव और मर्दों से छिपाई हुई किसी बात की तरफ इशारा होता तो इस कहानी का आकाश कुछ अधिक बादलों से अटा हुआ नजर आता। अगर ऐसा होता तो धींगा गवर की कहानी मर्दों को नहीं सुनानी, की हिदायत एक सोची-समझी रणनीति की ओर इशारा करते हुए आधुनिक संदर्भ से जुड़ जाती। यही नहीं, यह कहानी सदियों से स्त्रियों की अक्ल पर लगाए जाने वाले कमतरी के आरोप का एक माकूल जवाब होती। पुरुषों के मुकाबले महिला चार कदम आगे साबित हो जाती। लेकिन ऐसा लगता है कि कहानी लिखते समय राजेन्द्र जोशी 'दादी रूपाय नमः' जैसी किसी प्रबल भावनात्मकता के शिकार हो गए। 'विदाई' कहानी की दादी आज भी मिल सकती है, लेकिन यह दुर्लभ प्रजाति हो चुकी है। इस कहानी के माध्यम से दादी की इस पीढ़ी को लेखक ने श्रद्धांजलि अर्पित की है। इस कहानी संग्रह में एक स्वर बार-बार मुखर हो उठता है और वह है नियति। लेखक बार-बार मानों यह कहना चाहता है कि नियति से बचना संभव नहीं है। दूसरा मुखर स्वर है, जैसा करोगे-वैसा पाओगे। फिर भी कहने का तरीका शानदार है। 'सजा' कहानी की नायिका का बचपन में तय रिश्ता टूट जाता है और जब उसकी किसी दूसरे व्यक्ति से शादी होती है तो पता चलता है कि जो उसका पति है, वह पहले से ही विवाहित है। लेखक यह सब रचते हुए कहीं भी नरेशन नहीं देता है, लेकिन कहन में इतनी सरलता है कि पाठक सब कुछ समझते हुए आगे बढ़ता है। श्याम की दो पत्नियाँ लीली और सरिता कहानी के अंत में साथ रहने की बात को स्वीकार करती हैं। हालांकि इस क्लाइमैक्स के अलावा भी किसी नई गुंजाइश के लिए यहाँ संभावना बनती नजर आ रही थी। 'भरोसो' कहानी एलोपैथ की विरोधी नजर आती है। कहानी में एक चिंतन है। परंपरा, प्रकृति और देशी जीवन-शैली अपनाने की सीख है। सबसे बड़ी बात यह है कि जोशी की कहानियों में किसी तरह का पक्षपात नजर नहीं आता बल्कि स्थितियाँ हैं। उनकी कहानियों में वाद या विमर्श नहीं खोजा जा सकता। कभी वे जबरदस्त प्रगतिशील हैं तो कभी हजार फीसदी परंपरावादी। न तो वे ईश्वर की सत्ता के सामने काल्पनिक लड़ाई का ऐलान करते नजर आते हैं और न श्रद्धा से पूरी तरह से झुक जाते हैं। कहानीकार की अपनी चिंताएँ हैं तो समाधान भी है। वे अपने द्वारा उठाए किसी भी मुद्दे को पाठक की मरसी या मर्जी पर नहीं छोड़ते हैं। वे एक समाधान अपनी तरफ से देते हैं। तेजी से बदलते हुए समाज में परिवार का बंटाधार हुआ है। सभी को अपनी-अपनी पड़ी है। किसी को किसी की परवाह नहीं है। कहीं सुख नहीं है। अगर घर-जंवाई की कद्र नहीं है तो सुलक्षिणी बहू के साथ भी अमानवीय व्यवहार हो रहा है। 'अेकलो नीं' और 'कैदी' कहानी एक जैसी भाव-भूमि पर लिखी हुई कहानियाँ हैं। एक में शादी के बाद बेटी के साथ होने वाला अन्याय पत्र में लिखा गया है तो दूसरे में घर-जंवाई बने हुए युवक की दास्तान है। दोनों की हकीकत कलेजे को चीरने वाली है। खासतौर से 'कैदी' कहानी में तो उस समय पाठक सन्नाटे में आ जाता है जब घर-जंवाई राहुल अपने घर वालों को जो पत्र लिखकर लिफाफे में डालने लगता है और उसकी पत्नी सीमा आकर लिफाफा ही छीन लेती है। ऑनर किलिंग और खांप पंचायत पर राजेन्द्र जोशी अपनी कहानी 'पैलां कुण' के माध्यम से समूची व्यवस्था को कठघरे में रखते हैं। यहाँ एक बुनियादी सवाल वे खड़ा करते हैं कि अगर इस तरह की आदिम अवस्था में ही रखा जाना था तो फिर आगे बढ़ने के लिए बच्चों को छूट क्यों दी गई। इस तरह के सवाल उठाते हुए बेटी अपने बाप को ही मारने के लिए आगे बढ़ती है, क्योंकि पहला गुनाहगार तो वही है, जिसने उसे पढ़ने के लिए दिल्ली भेजा। दृष्टि का यह एक अलहदा मुकाम है। इस कहानी में खांप पंचायत का मखौल भी खूब उड़ाया गया है। हालांकि इस कहानी को छोटा किया जा सकता था। 'सायरो' कहानी में भी पाकिस्तान है। अपहरण, जिम्मेदारी, प्रेम और सबसे बड़ी बात इंसानियत है। इस कहानी में लेखक यह बताने में सफल हुए हैं कि प्रेम कोई स्विच ऑन करते ही रोशनी देने वाला बल्ब नहीं है। यह धीरज है, प्रतीक्षा है, साधना है। इस कहानी की शुरुआत मनोरम वातावरण में होती है। इसी वातावरण में कहानी के एक किरदार का एक नाटकीय स्थिति में अपहरण हो जाता है। विजय की पत्नी सुशीला अकेली है और उस पर बेटी नताशा की परवरिश की जिम्मेदारी। इस दौरान विजय की खोज जारी रहती है। कहानी के अंत में जब यह तय हो जाता है कि विजय नहीं मिलेगा तो पुलिस का एक जवान विजय सुशीला के सामने शादी का प्रस्ताव रखता है। दोनों की शादी हो जाती है। यहाँ पाठक यह जानना चाहता है कि अगर यही अंत बताना था तो इतनी देर 'हाईस-पाइस' क्यों खेली। कहानी की बुनावट भी ऐसा इशारा करती है कि कुछ नया होगा, लेकिन क्लाइमैक्स पुराना ही होता है, लेकिन अगर लेखक की दृष्टि से सोचें तो हम पाएँगे कि लेखक यह कहना चाहता है कि समाज चाहे जो कहे, प्रेम का बीज ऐसे ही अंकुरित नहीं हो जाता। दो मन में एक तरह के भाव उमड़ने जरूरी हैं। सवाल फिर खड़ा होता है कि जब समाज में 'सिंगल-मदर' का विचार भी स्थान बना चुका है तो यहाँ बात उससे आगे की होनी चाहिए थी। यह एक पाठक के स्तर की बात हो सकती है, मेरे पास ऐसा कोई प्रमाण नहीं है कि लेखक इस तरह के आधुनिक संदर्भों से अनजान है। ऐसे में कहानी की वन-लाइन प्रेम की प्रक्रिया ही समझ आती है। विजय भले ही सुशीला को चाहता हो, लेकिन वह इंसानियत भी जानता है। स्वार्थी नहीं है, इसलिए अपनी भावना को, प्रेम को समय देता है। 'फूलां भटक्यौ मन' में मन की आकुलता की निशानियाँ हैं। कभी किसी को कही

हुई बात खुद के जी का जंजाल बन जाती है। इस वन लाइन का विकास कहानी में मिलता है। यह एक मनोवैज्ञानिक कहानी है। 'दल्लो' कहानी आँखें खोल देती है। आज के युग में भी गरीब का शोषण कम नहीं हुआ है। हो भी कैसे जब गरीब को रोजगार देने वाले भी कमीशन एजेंट बने हुए हों। यह सच है कि लेखक अपने किरदारों का प्रतिनिधित्व करता है, लेकिन किरदारों की छवियाँ तो समाज से ही लेता है। इसलिए यह जरूरी नहीं है कि कोई भी किरदार पूरी तरह से समाज से लेकर ही कहानी में रख दिया गया हो। लेखक प्रवृत्तियाँ उठाता है, इंसान नहीं। किरदार बनने की यही प्रक्रिया है। मुझे ऐसा लगता है कि इन कहानियों को पढ़ने के बाद समाज की ओर एक मासूम सवाल लेखक को पूछा जाएगा कि ये किरदार और कथ्य आपके जेहन में कैसे आते हैं?

आने वाले समय में ये कहानियाँ किरदारों की अलहदा छवि, प्रयोग और रोचकता की वजह से सराही जाएगी। राजेन्द्र जोशी के विषय किसी भी तरह की सीमा में नहीं बंधे हैं। यह वह चीज है जिसकी राजस्थानी कथा-साहित्य को जरूरत है। इस तरह की कहानियों से ही राजस्थानी कथा साहित्य धोरे, पनघट और रीत-रिवाज से निकलकर दुनिया के सामने आएगा। आज एक तरफ जहाँ राजस्थानी को जहाँ दूसरी भारतीय भाषाओं के सामने खड़े होने की चुनौती है तो अंतरराष्ट्रीय मंच पर भी राजस्थानी कहानी को अपनी मजबूत और बेहतर पहचान बनानी है। इसके लिए ऐसी ही कहानियों की जरूरत है। ऐसी कहानियाँ जो बुनावट और कथ्य ही नहीं बल्कि कहने की कला में दो कदम आगे हो। 'जुम्मै री नमाज' ऐसा ही कहानी संग्रह है। आवरण पृष्ठ गौरीशंकर आचार्य ने बनाया है। 96 पृष्ठ की इस कृति का प्रकाशन ऋचा इंडिया पब्लिशर्स ने किया है।

समीक्षक : **हरीश बी. शर्मा**
बेनीसर बारी के बाहर, बीकानेर-334005
मो: 9829212603

बालकों की अदालत

लेखिका: डा. चेतना उपाध्याय, **प्रकाशक:** अंतरा-शब्द शक्ति प्रकाशन वारासिवनी बालाघाट (म.प्र.), **संस्करण:** 2018, **पृष्ठ संख्या :** 32, **मूल्य:** ₹ 55/-

वैश्वीकरण के इस तकनीकी युग में बालकों के मनोरंजन हेतु तकनीकी संसाधनों की प्रचुर भरमार है। अत: स्वाभाविक रूप में बालक पुस्तकीय संसार से दूर होता दिखाई दे रहा है। ऐसे समय पर पुस्तक 'बालकों की अदालत' का आना बड़ी ही खुशी की बात है। इसका खूबसूरत, मनमोहक मुख्य पृष्ठ बच्चों

को आकर्षित करने की क्षमता रखता है। भीतरी रचना संसार भी बालमन से उपजा ही महसूस होता है। प्रत्येक रचना बालकों द्वारा ही रचित लगती है क्योंकि लेखिका ने इसमें बाल अनुभूतियों को बड़ी ही बेबाकी व मासूमियत से उकेरा है। मैं अपने पाठकीय दृष्टिकोण से कह सकता हूँ कि पुस्तक बालमन को परोसने में खरी उतरी है। प्रत्येक रचना कहीं माँ तो कहीं पिता को, कहीं दादी-नानी को तो कहीं समाज को कटघरे में खड़ा करती ही प्रतीत होती है जो कि पुस्तक के शीर्षक को भी सार्थकता प्रदान करता है। शब्द चयन भी सरल, सहज व सुन्दर है जिसके परिणामस्वरूप रचनाएँ भी रुचिकर हो गई है।

पुस्तक की पहली रचना 'सुनहरी सुबह' तो प्रत्येक बच्चे के दिल का राज खोलती महसूस होती है। बालक इसे पढ़ते ही खुद को पुस्तक से जुड़ा हुआ पाएगा जिससे वह स्वयं आत्मप्रेरित हो आगे पढ़ना जारी रख सकेगा। आगे की रचनाओं में सेहत का खजाना, लाल टमाटर, अटर-बटर, मैगी जी की बारात बेहत खूबसूरती से उकेरी गई है। जिन्हें पढ़ते-पढ़ते दैनिक जीवन से जुड़े दृश्य स्वत: ही आँखों के आगे तैरने लगते हैं। एक रचना है ऐरोप्लेन जरा बानगी देखिए-

पापा ऐरोप्लेन दिला दो
आकाश घूम कर आउंगा
सूरज चाचू से बात करुंगा
थोड़ा डॉट कर आउंगा....

बाल सुलभ चपलता कितनी सहजता से पेश की गई है। यही वो विशेषता है जो इस संकलन की ताकत है।

यह पुस्तक बालकों को बहुत अच्छी लगेगी क्योंकि इसका कलेवर ही कुछ इस तरह का दिया गया लगता है यहाँ कोरा ज्ञान कहीं भी परोसा नहीं गया है। यह बालकों के साथ बड़ों हेतु भी पठनीय है क्योंकि इसकी रचनाएँ रोचक स्वरूप में बाल मनोविज्ञान से ओत प्रोत होने से स्पष्ट रूप में बाल अपेक्षाएँ बड़ों के सामने रखने का साहस जुटाती है।

रचनाओं में दूरदर्शन के बाजारू विज्ञापनों का बालकों पर प्रभाव भी, इसमें स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। यह एक विचारणीय मुद्दा है जो हमें समझना होगा कि ये बाजारू विज्ञापन हमारे मानवीय मूल्यों, मनोभावों को कितनी गहराई से प्रभावित कर रहे हैं कि हमारे पारिवारिक रिश्ते भी इसकी चपेट में आकर अपने अस्तित्व पर प्रहार झेल रहे हैं। आम जीवन में विज्ञापन वाले आभासी रिश्तों का नकारात्मक प्रभाव भी रचनाओं के माध्यम से स्पष्ट हो रहा है। पुस्तक में यथोचित रेखाचित्रों का समावेश किया गया है फिर भी यहाँ थोड़ी सी कमी अखरती है कि काश ये चित्र रंगीन और बड़े आकार में होते तो इस पुस्तक में और निखार आ जाता।

मौज, चंदा मामा, नन्हीं गुड़िया, पिज्जा, पापा आपका साथ सभी विविधता से भरी रचनाएँ हैं जो बाल सुलभ सहजता के साथ मनोरंजक संसार से भी परिचित करवाती है और सशक्तता से अपनी बात बड़ों के सम्मुख रख भी जाती है।

पापा आपका साथ चाहिए
छूने को आकाश चाहिए
मैं तिल तिल बढ़ पाउंगी
मेहनत संग स्नेह संबल चाहिए

बाल सुलभ आकांक्षा इतनी सहजता से पेश की गई है कि हमारे चेहरे पर स्नेहिल मुस्कान आ ही जाती है। देखिए अगली रचना में दादी को घेरा है....

दादी अब हो जाओ मौन
बोलता है डोरे मोन
सरपट दौड़ो या फिर भागो
देखो अब आ गया है पोगो

इस रचना में इतनी सरलता से दादी पोते का संवाद दर्शाया गया है कि लगता है हर घर की यही कहानी है। आशाओं, अपेक्षाओं से जुड़ी हर बच्चे की बानी है। इस संकलन में एक रचना है 'परांठा' जो अन्य रचनाओं से थोड़ी बड़ी है। मगर सरलता व समझदारी से इसका ताना बाना बुना गया है कि तरन्नुम में गाते-गाते बच्चे तो बच्चे बड़े भी झूमने को विवश हो जाए।

यम यम यम्मी आलू परांठा
कितना टेस्टी आलू परांठा
भोर उठे तो पेट साफ है
कल के सारे गुनाह माफ है
यम यम यम्मी आलू परांठा

कुल मिलाकर यह पुस्तक बालकों को पुस्तकों से जोड़ने की ताकत रखती है। विद्यालयों में ऐसी पुस्तक होनी चाहिए जिसे बालक स्वयं पढ़ने को उत्सुक हो उनमें पुस्तक पढ़ने की आदत विकसित हो। यह पुस्तक सहज सरल रोचक संसार उपलब्ध कराती है बालकों को। जिसमें प्रत्येक रचना में बाल सुलभ अपेक्षा व विविधता के दर्शन होते हैं। यह बालकों के लिए लिखी जाने वाली पुस्तकों से अलग है जो कि स्वयं बालमन द्वारा लिखी गई प्रतीत होती है। इस हेतु लेखिका को हार्दिक साधुवाद, हार्दिक अभिनन्दन।

समीक्षक : **ब्रह्म प्रकाश गौड़**
म.नं. 6, हिल एरिया, कृष्णा मार्ग,
कुन्दन नगर, अजमेर
मो: 9462373220

बाल शिविरा

अपनी राजकीय शालाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा सृजित एवं स्वरचित कविता, गीत, कहानी, बोधकथा एवं चित्रों को इस स्तम्भ में प्रकाशन हेतु नियमित रूप से संस्थाप्रधान/बालसभा प्रभारी भिजवाएं। श्रेष्ठ का चयन करते हुए इस स्तम्भ में प्रकाशन किया जाता है।

-व. संपादक

मार्ग दर्शक अध्यापक

अध्यापक हमें पढ़ाते हैं
अच्छी अच्छी बातें सिखाते हैं
कभी प्यार से कभी फटकार से
नव जीवन की राह दिखाते हैं
जब हम उलझन में पड़ जाते हैं
उलझन दूर अध्यापक ही कर पाते हैं
हम राही, अजनबी अनजान हैं
अध्यापक सभी समस्या का समाधान है
अध्यापक हमारे दाता हैं
पिता और माता हैं
अध्यापक ही कुमार्ग से सुमार्ग ले जाता है
वन्दन है अध्यापकों को
अभिनन्दन है अध्यापकों को

सादिया बानू, कक्षा 7
आदर्श नगर, ग्राम अलीपुरा, रा.बा.मा.वि. अलीपुरा, जिला अजमेर (राज.)

खेल

खेल जीवन का सहारा है
खेल ने ही जीवन को संवारा है।
खेल हमें अध्यापक सिखाते हैं
जीवन का पाठ हमें पढ़ाते है
खेल खेल में पढ़ते हैं बच्चे
खेल खेल में आगे बढ़ते हैं बच्चे
खेल जीवन में प्यार बढ़ाता
खेल जीवन को सफल बनाता
खेल में सिन्धु, खेल में रोहित
खेल से है जीवन पोषित
खेलेंगे कूदेंगे सजायेंगे ख्वाब
खेलने से हम बनेंगे नवाब।

सिमरन बानो, कक्षा 7
राजकीय बालिका माध्यमिक विद्यालय अलीपुरा, जिला अजमेर

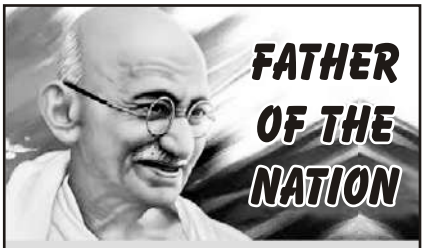

Mohandas Karamchand Gandhi 'The greatest of leaders', The champion of truth and non violence, Father of nation. As we approach yet another Gandhi Jayanti today, let us celebrate his achievements. Mahatma is a Sanskrit word which means great soul. It was Ravindra Nath Tagore who first used Mahatma for Gandhi ji, It was because of great thoughts and ideologies of Gandhi ji which made people honour him by calling Mahatma Ganhdhi. Mahatma Gandhi's contribution on various social issues could never be ignored his campaign against untouchability, help the upliftment to the community in modern era. Apart from this he also advocated the importance of education cleanliness, health and equality in the society. Mahatma Gandhi was a liberal face of independence struggle he challenged the British rule in India through this peaceful and non violent protest. The champaran satyagraha, Civil disobedience movement are just the few non violent movement lead by him. Gandhi ji is also famous to his strict discipline, he believed that discipline helped to achieve bigger goals though he left this world on 30th January 1948 but he proved that everything is possible in the world if you have strong will, courage and determination. He rightly said that they ignore you, then they laugh at you, then they fight you, then you win.

-Sangita, Class XI

महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम), बीकानेर (पृष्ठ 42, 43, 44) तथा राजकीय बालिका माध्यमिक विद्यालय, अलीपुरा, जिला-अजमेर (पृष्ठ 42) के विद्यार्थियों की हस्तलिखित स्वरचित रचनाओं को एक साथ प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है।

बाल मन को रचनात्मक कार्यों के लिए प्रेरित करने, उनमें सृजन के संस्कार देने हेतु विद्यालय स्तर से ही कविता, कहानी लिखने हेतु उचित वातावरण प्रदान करना चाहिए। प्रत्येक विद्यालय अपने विद्यार्थियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को 'बाल शिविरा' में प्रकट करने का अवसर दे सकते हैं। हमें विद्यालयों के छोटे-छोटे बाल रचनाकारों की रचनाओं का बेसब्री से इंतजार रहता है।

-वरिष्ठ संपादक

THERE IS A REASON

If one has a tooth and a
whole set of teeth
Then why shouldn't the
plural of booth be beeth?
If one may be that and
two may be those
Why shouldn't the plural
of hat be hose?
The masculine pronouns are he,
his and him.
But imagine the feminine-
she, shis and shim.
If the plural of man is always men
Then why shouldn't pan
always be pen?
So this English I fancy,
you'll all agree
Is the funniest language
you did ever see.
But still….. there is a reason !!!
(Poet: unknown)

-Farhan, Class-VII

INDIAN SPACE RESEARCH ORGANISATION

- ISRO Indian Space Research Organisation is India's premier space research and exploration agency.
- It was formed in 1969 since its venture with a simple satellite Aryabhatta in 1975.
- ISRO has come a long way ahead. It has master the skill of launching not only advanced national satellites but also earns a considerable forming exchange by launching foreign satellites.
- ISRO has earned worldwide name and fame by conducting extraterrestrial space mission successfully first such extra terrestrial mission was Chandrayaan-1.
- First mission to the moon the other was the most acclaimed mission mars orbiter mission knows as Mangalyaan.

-Rida Bano, Class-V

My Grandmother

My grandmother is great, why?
She is bold and never shy.
She loves everyone me and you,
The great grandma is sixty two.
She likes to climb trees,
And feel the cool breeze.
One day she climbed a tree,
Her action we did not agree.
Climbing gave her a big fall,
She lay in bed that was all.
Sometimes after she climbed again,
We thought her to be insane.
She climbed and could not come to me,
All her life she lived in a tree.

-Nikita, Class-VIII

MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL

Non-Violence stands Gandhi's name,
The institute to which we joyfully came.
In this wide world we shall radiate
The qualities that here we inebriate,
Our candle glows in the darkest night
We always tred on to the right
The goal remains within our sight
Labour shall we, with all our might.
Truth and empathy floats in our pool
Such is Mahatma Gandhi Govt. School.

-Bhawana, Class-VI

SKILLS TO SUCCESS

Creative thinking……

……is to think innovatively and skillfully with a clear perspective. Progress in life comes through taking initiative with new concepts and innovations. Keep refilling your engine of inspiration with a fuel of fresh ideas.

Self Awareness-

The skills of being able to know and understand oneself before you understand the rest of the world is self awareness. You are a special and unique creation of God, appreciate your strength and identify your limitations.

Communication Skills-

The skill to know the art of being expressive to emphasize your point of view efficiently. It is not always what you say that makes a difference. Sometimes it is the way you say it.

Logical Action-

An analytical mind always perceives the world rationally. It is how you handle your problems that counts, not the problems themselves.

-Tushar, Class-VII

The Story of MAN

God came out on space
He looked around….
Said-"I am lonely"
"I will make the world"
He made days and nights
The sun, the moon, the stars
The sky, the earth.
He looked around…
Said – " I am lonely."
God walked and
looked around He lifted his
finger and made mountains.
He looked down and made valleys.
He clapped his hands–
Water started running.
God smiled. But again he said –
"I am lonely still."
His smiles made rainbows.
He made plants, animals,
birds and beasts.
He looked at the forests and said–
"Good".
With all these things
He was lonely still.
He thought and thought and said,
"I will make MAN."
He took a lump of day
Shaped it like his own image
He blew the breath of life
And MAN came…..
A living soul…..

Dheeraj Suthar, Class-12

SONG
MY MAA EARTH

Are you waiting for me, Mamma!
Are you quaking for me, Mamma!
Are you warming for me, Mamma!
Are you freezing for me, Mamma!
My Mamma, My Maa EARTH….
Your rains rain on me, Mamma
Your spring blossoms me, Mamma
Your roses are mine, Mamma
Why am I blind, Mamma
Why am I hard, Mamma
My Mamma, My Maa EARTH
SAVE THE EARTH!!!
Your pine and your cone, Mamma
Your heat and your hail, Mamma
You're green, so I'm there, Mamma
Why am I blind, Mamma?
Why am I hard, Mamma?
My Mamma, My Maa EARTH
SAVE THE EARTH!!!
SAVE THE EARTH!!!

-Twinkle Soni, Class VIII

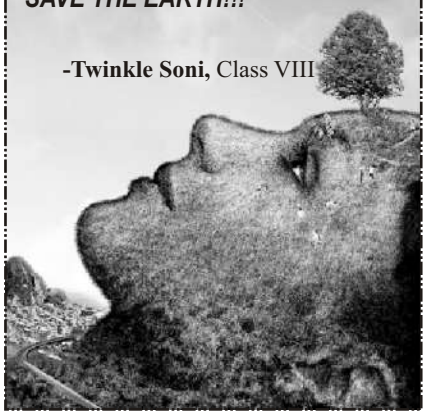

CHANDRAYAAN – 2

- **"Mooncraft" is the second lunar exploration mission developed by the Indian Space Research Organisation (ISRO) after Chandrayaan-1.**
- **It consists of a lunar orbiter' the Vikram Lander and the Pragyan lunar rover.**
- **The main objective is to study Variations in lunar surface composition and location of lunar water.**
- **The mission was launched the moon from the second launch pad at Satish Dhawan Space Center on 22 July 2019 at 2:43 pm.**
- **The craft reached the moon's orbit on 20 August 2019 and began preparation for landing of Vikram Lander.**
- **Vikram and rover landed on the near side of the moon, in the South Polar region at a latitude of 70 degree south at 7 September 2019 for conducting scientific experiments for 1 Lunar day (14 Days on earth).**
- **But unfortunately, Vikram lost communication when it was 2.1 km away from the surface of the moon.**
- **Efforts are going on for restoring communication with Vikram.**
- **I pray God that ISRO get success in communication with Vikram to make India 4th nation to send a successful lunar mission….!**

-Dakshita Upadhyay,
Class-V

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shivira.dse@rajasthan.gov.in** पर भिजवाकर सहयोग करें।

-व. संपादक

विद्यार्थियों ने किया पॉकेट पंखे का आविष्कार

कापरेन। कापरेन कस्बे में स्टेशन के समीप स्थित राजकीय माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 9 के विद्यार्थियों ने पॉकेट पंखे का आविष्कार करके नवाचार का प्रदर्शन किया। विज्ञान के वरिष्ठ अध्यापक श्री रामकेश गोचर के निर्देशन में कक्षा 9 के विद्यार्थियों ने मोबाइल की बैटरी से चलने वाले एक लघु पंखे का आविष्कार किया। इस पॉकेट पंखे को कोई भी व्यक्ति अपने साथ कही भी लेकर गर्मी से राहत पा सकता है। इस दौरान विद्यार्थियों ने सूक्ष्म मोटर, स्विच व तारों के माध्यम से मोबाइल की बैटरी से जोड़कर पंखे को चालू करके प्रदर्शन किया। प्रधानाध्यापक श्री विष्णुप्रकाश शृंगी ने छात्रों के प्रयास की सराहना की और छात्रों को शाबासी देकर प्रोत्साहित किया। छात्र अजय कुमार ने बताया कि इस प्रयोग में उसने कबाड़ से जुगाड़ तकनीक काम में लेते हुए कबाड़ के पार्ट्स का भी उपयोग किया।

64 वीं जिला स्तरीय जूडो कुश्ती प्रतियोगिता सम्पन्न

भरतपुर। राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय शीशवाडा, डीग, भरतपुर में 64 वीं जिला स्तरीय जूड़ो कुश्ती प्रतियोगिता (17 व 19 वर्षीय) 01.09.2019 से 04.09.2019 तक आयोजित हुई। इस प्रतियोगिता में जिले भर की 148 टीमों के 434 खिलाडियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता का उद्घाटन पर्यटन एवं देवस्थान विभाग के केबिनेट मन्त्री महाराजा विश्वेन्द्र सिंह द्वारा किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता गाँव के वयोवृद्ध श्री परसोती बाबा द्वारा की गई। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्री सीताराम गुप्ता निदेशक लुपिन, श्री प्रेम सिंह कुन्तल जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक (मुख्यालय) भरतपुर, श्री तारासिंह सिनसिनवार मुख्य ब्लॉक जिला शिक्षा अधिकारी डीग थे। चार दिन तक चली इस क्रीड़ा प्रतियोगिता में समस्त सम्भागीयों की भोजन व्यवस्था गाँव के भामाशाह श्री प्रीतम सिंह चौधरी द्वारा की गई। समस्त सम्भागीयों, निर्णायकों एवं टीम प्रभारियों ने प्रतियोगिता में आदर्श आवास व्यवस्था, भोजन व्यवस्था, पेयजल व्यवस्था एवं साफ सफाई की भूरी-भूरी प्रसंशा की। उद्घाटन एवं समापन कार्यक्रम में विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। विद्यालय के प्रधानाचार्य ने बताया कि 17 वर्षीय छात्रा जूडो, 17 व 19 वर्षीय छात्र जूडो चैम्पियनशिप शीशवाड़ा विद्यालय के नाम रही। वहीं 19 वर्षीय छात्रा की जूडो चैम्पियनशिप जयश्री नगर ने जीती। 17 वर्षीय कुश्ती चैम्पियनशिप पान्हौरी तथा 19 वर्षीय कुश्ती बेढ़म ने जीती।

सरगांव के भामाशाह ने विद्यार्थियों को गोद लिया

अजमेर। राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय सरगांव पं.स. जवाजा, अजमेर के समाजसेवी एवं भामाशाह श्री गोरधन सिंह रावत द्वारा स्वतंत्रता दिवस 2019 पर विद्यालय के 5 छात्र-छात्राओं को गोद लिया गया। गोद लिए गए छात्र-छात्राएँ जरूरतमंद थे जिनका शिक्षा संबंधी सम्पूर्ण खर्च उठाने की घोषणा की गई। इसी की क्रियान्विति करते हुए कक्षा प्रथम की गायत्री, मोनिका, आरिफ, दीपक, यश का चयन कर स्वागत किया गया। इस अवसर पर पंचायत समिति जवाजा के उप प्रधान श्री पदमसिंह सुहावा, ग्राम पंचायत सरमालिया के सरपंच श्री रमेश चन्द जाट, प्रधानाध्यापक श्री नन्दकिशोर कुमावत, एसएमसी. के अध्यक्ष श्री प्रहलाद गुर्जर व उपाध्यक्ष श्री नरसिंह चौहान सहित अन्य सदस्य व अभिभावक उपस्थित रहे।

बालिकाओं ने संभाला एक दिन विद्यालय प्रशासन

बाड़मेर। जिले के सिवाना उपखंड में अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस पर हु.रा.बा.उ.मा.वि. मोकलसर में एक दिन के लिए विद्यालय का पूरा प्रशासन बालिकाओं को सौंपकर मनाया। इस दिवस के उपलक्ष्य पर एक

दिन की विद्यालय प्रधानाचार्य कुमारी कुसुम्बी को बनाया जिसने पूरे दिनभर दायित्व बखूबी निभाया और अन्य सभी विषयों में अध्यापक नियुक्त किए। जिन्होंने अपने अपने कालांश में बालिकाओं को पढ़ाया एवं भविष्य में आने वाली जिम्मेदारियों को निभाने का काम किया। जिसमे नीतू कंवर अनिवार्य हिंदी, प्रियंका गोस्वामी अनिवार्य अंग्रेजी, उषा भाटी राजनीति विज्ञान , वीणा गोस्वामी हिंदी साहित्य, प्रेमा कुमावत इतिहास, किरण कंवर गणित , रितिक सीरवी विज्ञान, खुशबू भाटी सामाजिक विज्ञान, निर्मला भाटी संस्कृत के लिए नियुक्त किया गया। कक्षा 1-5 तक के लिए कक्षा 6-8 तक की बालिकाओं को अध्यापक नियुक्त किया गया। जिसमें उर्मिला, कृष्णा कंवर, किरण कंवर ने दिनभर बालिकाओं को पढ़ाया तथा ज्योति कंवर को शा.शि. नियुक्त किया गया। प्रधानाचार्य श्री सुरेश कुमार सोलंकी ने बताया कि इस प्रकार के कार्यक्रमों से बालिकाएँ में जिम्मेदारियाँ निभाने का कौशल बढ़ता है। इस अवसर पर विद्यालय परिवार के व्याख्याता श्री भरत कुमार सोनी, श्री जगदीश विश्नोई, श्री ओम प्रकाश पटेल, वरिष्ठ अध्यापक श्री कुमार जितेन्द्र, श्री मांगुसिंह भायल, अध्यापिका श्रीमती सुमित्रा बाई, श्रीमती मोहनी गोदारा, वरिष्ठ लिपिक जेठू सिंह व तुलसी बाई उपस्थित रहे।

संस्था प्रधान एवं शिक्षक बनी छात्राएँ

बीकानेर। अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस पर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय शिवनगर में कार्यक्रम आयोजित कर बड़े धूमधाम से मनाया गया। छात्रा गीता चारण प्रधानाचार्य के नेतृत्व में कक्षाओं में अध्यापन कार्य भी छात्राओं ने शिक्षक बन करवाया। विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कार्यवाहक पीईईओ. मोहरसिंह सलावद ने कहा कि प्राचीन काल में महिलाओं का बहुत सम्मान किया जाता था। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बालिका दिवस मनाने की पहल एक गैर-सरकारी संगठन 'प्लान इंटरनेशनल' प्रोजेक्ट के रूप में की गई. इस संगठन ने 'क्योंकि में एक लड़की हूँ' नाम से एक अभियान भी शुरू किया। इसके बाद इस अभियान को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विस्तार करने के लिए कनाडा सरकार से संपर्क किया। कनाडा सरकार ने 55वें आम सभा में इस प्रस्ताव को रखा। अंतत: संयुक्त राष्ट्र ने 19 दिसंबर, 2011 को इस प्रस्ताव को पारित किया और इसके लिए 11 अक्टूबर का दिन चुनते हुए अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस 11 अक्टूबर,2012 को प्रथम बार मनाया गया और उस समय इसका थीम था बाल विवाह को समाप्त करना। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाषण प्रतियोगिता, वाद विवाद, दहेज प्रथा, बालिका शिक्षा, सती प्रथा पर निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें विजेता बालिकाओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में बालिका संस्थाप्रधान गीता चारण, शिक्षक बनी छात्रा जस्सू कंवर, कमलेश स्वामी, प्रीता, विमला, हर्सिता राठौड़, निकिता, रोशनी, मधु चारण, देबल बाई, गुड्डी, पूजा, कविता स्वामी सहित सैकड़ों छात्रा एवं शिक्षक मौजूद रहे।

अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस हर्षोल्लास से मनाया

बाड़मेर। जिले के गुड़ामालानी ब्लॉक के रा.उ. मा. वि. भेडाना गुड़ामालानी में अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर बालिकाओं ने विद्यालय का समस्त कार्यभार संभालकर विद्यालय का सफल संचालन किया। कक्षा बारहवीं की छात्रा कविता कुमारी ने प्रधानाचार्य की भूमिका निभाते हुए अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन कर बालिका शक्ति का परिचय दिया। कार्यक्रम में मनीषा कुमारी, ममता कुमारी व रमकु कुमारी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि बालिकाएँ अपनी योग्यता से हर क्षेत्र में सफलता का परचम लहराएँगी। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संस्थाप्रधान श्री रामेश्वर लाल, व्याख्याता श्री दुर्गाराम गोयल, व्याख्याता श्री मनोज सोलंकी, व्याख्याता श्री नरपत राम तथा वरिष्ठ अध्यापक श्री जितेन्द्र गोदारा आदि ने बताया कि बालिका पढ़ेगी तभी बढ़ेगी। वरिष्ठ अध्यापक श्री हेमेंद्र कुमार विश्नोई व गोपाल लाल खटिक पु. अ. ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में श्री भट्टाराम व. शा. शि., बाबूराम गोयल अ., फरसाराम गर्ग अ., सावित्री देवी अ. व प्रभुराम सहित सैकड़ों विद्यार्थी उपस्थित रहें। कार्यक्रम का सफल संचालन छात्रा कविता कुमारी व रमकु कुमारी ने किया ।

भावनगर शाला में बनाई हिन्दी सेना

पाली। रा.मा.वि.भावनगर, पाली में अश्वनी करसोलिया व.अ. हिन्दी ने कक्षा 7 व 8 के पाँच छात्रों दुर्गेश, अशोक, हार्दिक, पर्वत व राहुल से हिन्दी सेना का गठन किया। यह सेना हिन्दी विषय के प्रति लगाव, स्वरचित कविता, गीत, कहानी एवं बोधकथाओं का लेखन करके सामुदायिक बालसभा में प्रस्तुतियाँ देगी। यह सेना श्री करसोलिया के मार्गदर्शन में राजस्थानी-हिन्दी शब्द कोश का भी निर्माण करेगी साथ ही वृक्षारोपण में पूर्ण सहयोग करेगी। संस्थाप्रधान ने आभार जताते हुए कहा

कि यह हिन्दी विषय के प्रति प्रबल जिज्ञासा उत्पन्न करते हुए हिन्दी को समर्थ बनाने हेतु शाला का नवीन नवाचार है।

साइकिल वितरण व सम्मान समारोह का आयोजन

चूरू। राजकीय माध्यमिक विद्यालय दांदू (चूरू) में नि:शुल्क साइकिल वितरण व सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ माँ सरस्वती की प्रतिमा के आगे दीप प्रज्वलित कर किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता बाल संसद के प्रधानमंत्री छात्र रजनीश कुमार ने की। इस अवसर कक्षा 9 में अध्यनरत 10 पात्र छात्राओं को साइकिल वितरित की गयी। इस अवसर पर जिला स्तरीय विज्ञान मेले में भाग लेकर लौटे विजेता विद्यार्थियों का ग्रामीण, विद्यालय स्टाफ ने स्वागत व अभिनंदन किया। विद्यालय के छात्र चन्द्रप्रकाश ने मॉडल प्रतियोगिता जूनियर वर्ग में प्रथम, खुशबु जांगिड़ ने दूसरा स्थान प्राप्त किया तथा मॉडल प्रतियोगिता सीनियर वर्ग में मोनिका नाई ने दूसरा स्थान प्राप्त किया। श्री संजय कुमार के मार्गदर्शन में छात्रों ने विज्ञान मेले में भाग लिया। संस्थाप्रधान श्री नेमीचंद सुडिया ने बताया कि चंद्रप्रकाश 27 नवम्बर से 30 नवम्बर तक आयोजित होने वाले राज्य स्तरीय मेले में भाग लेगा। चंद्रप्रकाश ने धुँआ व कोहरा अवशोषक यंत्र का निर्माण किया जिससे वातावरण को धुँआ व कोहरा मुक्त किया जा सकता है। महानगरों में कोहरे व धुंवे से होने वाली परेशानियों से निजात मिल सकती है। ग्राम पंचायत घांघू उपसरपंच श्री लखेंद्र सिंह ने राजकीय विद्यालयो में मिलने वाली लोक कल्याणकारी योजनाओं की प्रशंसा की। इस अवसर पर गाँव के सर्व श्री विजेंद्र सिंह राठौड़, शिक्षाविद् गोवर्धन सिंह, तेजपाल नायक, सुभाष मीना, पवन कुमार नाई, भंवर लाल जांगिड़, खेमाराम बाबल आदि उपस्थित थे।

निपुण प्रशिक्षण में रोवर रेन्जर ने भाग लिया

चित्तौड़गढ़। स्काउट गाइड जिला मुख्यालय चित्तौड़गढ़ पर आयोजित रोवर रेन्जर प्रशिक्षण शिविर में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय खेरपुर के 8 रेन्जर एवं 4 रोवर ने भाग लिया। इस शिविर में कला, पायनियरिंग, कम्पास दिशा ज्ञान, आपदा प्रबन्धन, प्राथमिक चिकित्सा, दक्षता पदक आदि विषयों में प्रशिक्षण प्राप्त किया। छात्र-छात्राओं ने सेवा कार्य करते हुए जल शक्ति अभियान स्वच्छता एवं श्रमदान सड़क सुरक्षा अभियान आदि में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। रोवर लीडर श्री जितेन्द्र शर्मा ने बताया कि शिविर में वन्य जीव सप्ताह के अन्तर्गत आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता में श्री गोवर्धन जाट ने प्रथम एवं उर्मिला धाकड़ ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। शिविर में रोवर रेन्जर ने जिला स्तर पर आयोजित सर्वधर्म प्रार्थना सभा में भी भाग लिया एवं जिला न्यायालय परिसर एवं किला रोड़ पर साफ सफाई करके कुड़ा करकट एवं पॉलिथिन एकत्र कर स्वच्छता का संदेश दिया। विद्यालय पहुँचने पर विद्यार्थियों, अध्यापकों एवं एसडीएमसी. सदस्यों द्वारा रोवर रेन्जर का स्वागत किया गया।

गजसिंहपुरा स्कूल में बनवाया सरस्वती मंदिर

भोपालगढ़। राउमावि. गजसिंहपुरा में भामाशाह रामप्रकाश, सुखराम, रामरतन पुत्र नैनाराम खदाव ने 31 हजार रूपए की लागत से सरस्वती माता का मंदिर बनवा स्कूल परिवार को भेंट किया। मंदिर का विधि विधान से मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा की गई। इस अवसर पर संस्थाप्रधान श्री राजूराम खदाव ने भामाशाह का स्वागत-सत्कार करते हुए सम्मानित किया तथा आभार जताया। सर्वश्री मांगीलाल, राजेश कुमार, उम्मेदसिंह, कालूराम, राजीव सोऊ, महिपाल, जगदीश गहलोत, देदाराम, मनोहर देवासी, कोजाराम माली, रामविलास सैन, भेवरलाल मेघवाल, भींयाराम, सुनील खदाव, रामचन्द्र जाखड़ आदि मौजूद थे।

झुंझनूं में 52वें जिला स्तरीय विज्ञान मेले का आयोजन

झुंझनूं। राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय उदावास में 52 वाँ जिला स्तरीय विज्ञान मेले का अयोजन किया गया। मेले का अवलोकन मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी झुंझनूं श्री घनश्याम दत्त जाट, जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) झुंझनूं श्री अमरसिंह पचार एवं प्रधानाचार्य श्री राकेश ढ़ाका द्वारा किया गया।

राजकीय उ.मा.वि. चौमूं, जयपुर में वृक्षारोपण

जयपुर। राजकीय उ.मा.वि. चौमूं, जयपुर में दिनांक 18.10.19 को वृक्षारोपण कार्यक्रम का अयोजन हुआ। कार्यक्रम में मुख्यअतिथि श्री बनवारी लाल सीबीइओ. पं.स. गोविन्दगढ़, विशिष्ट अतिथि श्री बाबूलाल टेलर से.नि. व्याख्याता, राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त एवं प्रेरक, श्री विद्याप्रकाश मीणा आर.पी. एवं भामाशाह श्री बिरदीचन्द गोयल, राज्य स्तरीय भामाशाह ने इस अवसर पर 25 पौधे उपलब्ध कराए। साथ ही लॉन विकसित करने में जो भी व्यय होगा उसकी भी घोषणा की। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती पुष्पा शर्मा, कार्य.प्रधानाचार्य ने की। इस अवसर पर

श्री चौथमल यादव, श्री अशोक सैनी, श्री गजानन्द यादव, श्री रामलाल कुमावत मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन मुकेश भार्गव व.अ. ने किया।

सांईसर में स्वर्ण विजेता का सम्मान व साइकिल वितरण समारोह

बीकानेर। रा.उ.मा.वि. सांईसर जिला बीकानेर की छात्रा प्रियंका गिला ने दिनांक 1.1.19 से 4.10.19 तक रा.गंगा बाल मा.वि. बीकानेर में आयोजित 64 वीं जिला स्तरीय एथलेटिक्स प्रतियोगिता (17–19 वर्ष छात्रावर्ग) में भाग लेकर 3000 मीटर दौड़ में जिला स्तर पर विजेता रहकर स्वर्ण पदक प्राप्त किया। तदुपरांत राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु आयोजित राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में चतुर्थ स्थान प्राप्त कर शाला परिवार, माता–पिता के साथ बीकानेर जिले का नाम भी रोशन किया। विजेता बालिका के विद्यालय लौटने पर विद्यालय प्रांगण में शाला परिवार, ग्रामीणजन, एसडीएमसी. सदस्यों एवं संस्थाप्रधान श्री गोमाराम जीनगर द्वारा प्रियंका गिला का भय स्वागत किया गया। बालिका मैनका ने व प्रिंयका सरावग ने विजेता छात्रा का तिलक, माल्यार्पण कर मुँह मीठा कराया। संस्थाप्रधान श्री गोमाराम जीनगर द्वारा छात्रा को स्वर्ण पदक पहनाकर स्टाफ की तरफ से 1100 रुपए भी भेंट किए। इसी अवसर पर सेवानिवृत समारोह कमाण्डेंट श्री बुराम द्वारा विद्यार्थियों के लिए 1000 रु. की खेल सामग्री भेंट की गई। उन्होंने विद्यार्थियों को खेल का महत्व बताया। विद्यालय मे आयोजित समारोह में सत्र 2019–20 में अध्ययनरत कक्षा 9 की छात्राओं को साइकिल वितरण सरपंच श्रीमती शारदा देवी द्वारा किया गया। शाला परिवार के श्री श्रीराम गुर्जर व्या. श्री मुकेश खदावा ने बालिका शिक्षा प्रोत्साहन की राज्य सरकार की योजनाओं की जानकारी दी। शिक्षिका सुमन लोहिया, सुनीता मीणा, सम्पतलाल, सांवरलाल, मांगीलाल, जसराज, मुनीमचन्द्र, मनोजकुमार एवं बाबूलाल ने पर्यावरण संरक्षण पौधारोपण के लिए प्रोत्साहित किया। संस्थाप्रधान ने खेल सामग्री के भामाशाह एवं सरपंच महोदया का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन शिक्षक महावीर सिंह चारण द्वारा व्यवस्थित रूप से किया गया।

गाँधी जयन्ती सप्ताह का आयोजन

राज. उ. प्रा. विद्या. माण्डेला छोटा, फतेहपुर शेखावाटी सीकर अ. शबनम भारतीय के नेतृत्व में एक से 7 अक्टूबर तक गाँधी जयन्ती सप्ताह मनाया गया। जिसका शुभारम्भ सिंगल यूज प्लास्टिक (बॉटल थेली, डिस्पोजल) के प्रयोग से होने वाले नुकसान से ग्रामीणजनों को सचेत व जागरूक करने के लिए रैली से किया गया। इसी विद्यालय में 11 अक्टूबर को अन्तर्राष्ट्रीय बालिका दिवस मनाया गया। कक्षा 7 की छात्रा को एक दिन के लिए प्रधानाध्यापक बनाने व शिक्षण कार्य करवाया गया। प्रार्थना सभा के साथ पोषाहार निरीक्षण एवं अन्य गतिविधियों को भी समय पर पूर्ण करवाया गया। अन्तिम कालांशों में मीना मंच सम्बन्धित चित्रकला प्रतियोगिता करवाई गई और प्रथम, द्वितीय आने वाली बालिकाओं को पारितोषिक देकर सम्मानित भी किया गया। अन्त में सामूहिक प्रतिज्ञा के साथ कार्यक्रम सम्पन्न किया गया।

सीकर आगमन पर जिले की पहली महिला हैण्डबाल अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी पूजा का भव्य स्वागत

सीकर। राजकीय माध्यमिक विद्यालय सांवलोदा लाडखानी से सत्र 2018 में 10वीं कक्षा उत्तीर्ण छात्रा पूजा कंवर का 8वीं एशियाड अन्तर्राष्ट्रीय महिला हैण्डबाल चैम्पियनशिप में चयन हुआ । अपनी खेल प्रतिभा का लोहा मनवाकर पूरे देश में नाम रोशन किया। शनिवार को सीकर आगमन पर गांव तक भव्य स्वागत किया। गांव पहुंचने पर ग्रामवासियों ने गोगामेडी परिसर में माला पहनाकर, गुलदस्ता देकर व प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर शिक्षाविद् भगवानाराम झोटवाल, मदन लाल जांगिड़, मोहन लाल शर्मा, गंगाराम थालौड़, केप्टेन सागर लाल, पुजारी मुकनाराम सहित सैकड़ों जन उपस्थित थे। ग्रामवासियों ने राष्ट्रपति शिक्षक पुरस्कार प्राप्त शारीरिक शिक्षक भंवर सिंह के उल्लेखनिय कार्यों की प्रशंसा की । इस अवसर पर प्रधानाध्यापिका भंवरी देवी ने बताया पूजा खेल के साथ पढ़ाई में भी अव्वल थी। पिछले वर्ष 71 प्रतिशत से 10वीं कक्षा उत्तीर्ण की है तथा इस वर्ष सीकर जिले की पहली अन्तर्राष्ट्रीय महिला हैण्डबाल खिलाड़ी होने का गौरव प्राप्त किया है। यह विद्यालय के लिए सबसे बड़ी ऐतिहासिक उपलब्धि है। शारीरिक शिक्षक भंवर सिंह ने बताया कि पूजा कंवर इस विद्यालय से चार बार जिला, चार बार राज्य स्तर तथा दो बार राष्ट्रीय स्तर पर खेल चुकी है। यह विद्यालय हैण्डवाल में राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर खिलाड़ी तैयार करने में अग्रणी है और 17 वर्ष से लगातार जिला स्तर पर टीम विजेता रही है। पिछले पांच वर्षों से लगातार भामाशाहों द्वारा खेल पोशाक दी जाती है तथा जिला स्तरीय खेल प्रतियोगिता में आने व जाने की वाहन सुविधा भामाशाहों द्वारा प्रदान की जाती है। इस अवसर पर व.अ. प्रवीण तेतरवाल, रोहिताश थालौड़, बनवारी लाल शर्मा, राजेश पूनियां, सरिता फेनिन, रेणुका, जुगल किशोर, रामलाल गोदारा, हरीराम थालोड़, चिरंजीलाल शर्मा, सन्तोष देवी, इन्दिरा देवी व उम्मेद सिंह गौड़ सहित सैकड़ों विद्यार्थी व ग्रामीण जन उपस्थित थे।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

चतुर्दिक समाचार

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किये जाते हैं। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं।

-वरिष्ठ सम्पादक

ब्रह्मोस के निशाने से नहीं बचेगा दुश्मन

बालासोर– ओडिशा के बालासोर जिले में सुपरसोनिक मिसाइल के जमीन पर मार करने वाले विशेष संस्करण का सफलतापूर्वक परीक्षण किया गया। यह मिसाइल जमीन के अलावा समुद्री पोतों और पनडुब्बी से भी दागी जा सकती है। एक तरह से यह टू-इन-वन मिसाइल है। हालांकि समुद्र, जमीन और हवा से दागे जाने वाले ब्रह्मोस मिसाइल के अलग-अलग संस्करण पहले ही तैयार किए जा चुके हैं, लेकिन जिस मिसाइल का परीक्षण किया गया है वह अकेले ही जमीन के अलावा समुद्र में मार कर सकेगी। इस अत्याधुनिक मिसाइल को रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन और ब्रह्मोस एयरोस्पेस द्वारा संयुक्त रूप से चांदीपुर के एकीकृत परीक्षण रेंज से छोड़ा गया। परीक्षण सुबह 10 बजकर 20 मिनट पर किया गया। परीक्षण के दौरान यह कसौटी पर खरी उतरी। इसकी प्रणोदन प्रणाली और एयरफ्रेम स्वदेशी निर्मित है।

हँसना तन-मन को स्वस्थ रखने में मददगार

नई दिल्ली– प्यार और रिश्ते को मजबूत बनाने के लिए एक-दूसरे के प्रति सम्मान और समर्पण जरूरी है। वहीं, आत्मसम्मान और वजूद खोना रिश्तों की डोर को कमजोर कर सकता है। साथ ही कहा कि हँसना मन और शरीर को स्वस्थ रखने में मददगार है। विशेषज्ञों ने यह बात एम्स में शुक्रवार को आयोजित मानसिक स्वास्थ्य उत्सव में कही। इसमें मनोचिकित्सक, हास्य कवि सुरेन्द्र शर्मा, डीयू के छात्रों की नाटक मंडली आदि शामिल हुए। उर्दू में दास्तानगोई के जरिए मानसिक स्वास्थ्य के बारे में जागरूक किया गया। एम्स में जगह-जगह बने स्टॉल के जरिए लोगों को तनावमुक्त होने का संदेश दिया गया। मेंटल हेल्थ उत्सव की शुरूआत हास्य कवि सुरेन्द्र शर्मा के कार्यक्रम से हुई। उन्होंने लोगों को हँसना क्यों जरूरी है यह बताया। इस दौरान टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंस की प्रोफेसर डॉ. अपर्णा जोशी, गंगाराम अस्पताल के डॉ. अजय गुप्ता आदि भी मौजूद रहे।

मोबाइल का ज्यादा इस्तेमाल कमर दर्द बढ़ा रहा

नई दिल्ली– मोबाइल और लेपटॉप का गलत तरीके से रोजाना घंटों इस्तेमाल युवाओं को कमर और गर्दन दर्द का मरीज बना रहा है। सफदरजंग अस्पताल के कम्युनिटी मेडिसिन विभाग की ओर से दिल्ली के ग्रामीण इलाकों में मरीजों पर किए गए अध्ययन में यह बात सामने आई है। अध्ययन में शामिल 60 % लोग मस्कुलोस्केल्टन डिसऑर्डर यानी जोड़ों के दर्द से पीड़ित थे। सफदरजंग के डॉक्टर वेंकटेश ने बताया कि लगातार कम्प्यूटर और मोबाइल फोन को गलत अवस्था में बैठकर चलाने से लोग कमर के निचले हिस्से में दर्द और सर्वाइकल के शिकार हो रहे हैं। डॉक्टर जुगल किशोर ने बताया कि 200 लोगों पर हुए शोध में 54% को कमर दर्द की शिकायत थी।

नशे के खिलाफ एकजुट हुए युवा तो विश्व कीर्तिमान बन गया

नई दिल्ली– युवा पीढ़ी को नशे से दूर रखने के उद्देश्य से रविवार को इंदिरा गाँधी इंडोर स्टेडियम में आयोजित यूथ फेस्टिवल उद्धार ने कीर्तिमान कायम किया। इस्कॉन यूथ फोरम के बैनर तले आयोजित कार्यक्रम में दिल्ली-एनसीआर से 12 हजार लोग पहुँचे। यह कार्यक्रम वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड में दर्ज हो गया। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हर्षवर्धन मौजूद रहे। उन्होंने कहा कि काफी खुशी महसूस हो रही है कि इतनी बड़ी संख्या में युवा इस कार्यक्रम का हिस्सा बने हैं। उन्होंने कहा कि देश में 65 फीसदी युवा हैं। युवाओं से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को काफी उम्मीदें है। एक देश के स्वास्थ्य मंत्री होने के नाते मेरे लिए यह गर्व की बात है कि आज यहाँ नशा मुक्ति कार्यक्रम के लिए 15 हजार युवाओं ने पंजीकरण करवाया है। उन्होंने कहा कि देश का विकास होगा तो पूरे विश्व का विकास होगा। इस्कॉन इस दिशा में काफी सराहनीय कार्य कर रही है।

नई तकनीक से आँखों का इलाज आसान

वॉशिंगटन– आँखों में सूखेपन की बीमारी का आसानी से पता लगाने और उसका इलाज करने के लिए शोधकर्ताओं ने नई 'नॉन इनवेसिव इमेजिंग' तकनीक विकसित की है। आँखों में सूखेपन की बीमारी (ड्राई आई सिंड्रोम) में आँखों की जलन होती है और धुँधला दिखाई देता है।

अभिजीत बनर्जी को अर्थशास्त्र का नोबेल

स्टॉकहोम– भारतीय मूल के अमेरिकी अर्थशास्त्री और जेएनयू के छात्र रहे अभिजीत बनर्जी को इस साल के अर्थशास्त्र के नोबेल पुरस्कार के लिए चुना गया है। दुनिया से गरीबी मिटाने के प्रयासों के लिए अभिजीत को पत्नी एस्थर डुफ्लो व माइकल रॉबर्ट क्रेमर के साथ संयुक्त रूप से यह सम्मान दिया गया। रॉयल स्वीडिश एकेडमी ऑफ साइंसेज ने सोमवार को पुरस्कार की घोषणा करते हुए कहा कि इन तीनों का शोध वैश्विक स्तर पर गरीबी से लड़ने की हमारी क्षमता को बेहतर बनाता है। मात्र दो दशक में इनके नए दृष्टिकोण ने विकास के अर्थशास्त्र को पूरी तरह बदल दिया। इनके शोध से स्कूलों में शिक्षण का जो तरीका बदला उससे 50 लाख से अधिक भारतीय बच्चे लाभान्वित हुए हैं। स्वास्थ्य सेवाओं पर भारी सब्सिडी देने का सुझाव कारगर रहा, जिसे कई देशों ने लागू किया है।

हृदय की मैपिंग से ठीक होंगी दिल की बीमारियाँ

लंदन– हृदय की बीमारी से पीड़ित लाखों मरीजों के लिए हार्ट मैपिंग तकनीक आशा की किरण बनकर आई है। इन स्कैनिंग तकनीक की मदद से अब सर्जन मरीजों के शरीर में एक खास तरह का पेसमेकर बिल्कुल सटीक स्थान पर लगा सकेंगे जिससे दिल की धड़कन को सही तरीके से नियंत्रित किया जा सकेगा। विशेषज्ञों की मानना है कि इस तकनीक की मदद से मरीजों को लंबी और स्वस्थ जिंदगी जीने में मदद मिलेगी। एनएचएस फाउंडेशन ट्रस्ट के शोधकर्ता और हृदय विशेषज्ञ आल्डो रिनालडी ने कहा, इस तकनीक से हार्ट फेलियर के मरीजों के जीवन बेहतर बनाया जा सकता है। पहली बार इस मैपिंग तकनीक की मदद से हम पेसमेकर को बिल्कुल सही जगह पर लाने में सक्षम हुए है। इस तकनीक की मदद से से हमें मरीज के क्षतिग्रस्त ऊतकों के बारे में जानकारी मिल गई। ये ऊतक पेसमेकर के इलेक्ट्रिकल प्लस को संचालित नहीं कर पाते।

इंसानों जैसी त्वचा वाला पहला रोबोट बनाया

म्यूनिख– म्यूनिख की टेक्निकल यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं की टीम ने एक ऐसा रोबोट बनाया है जिसकी त्वचा इंसानों जैसी है। शोधकर्ताओं के मुताबिक, इंसानों जैसी त्वचा वाला यह दुनिया का पहला रोबोट है। इसका नाम एच-1 है। प्रोफेसर गॉर्डन चेंग द्वारा विकसित यह कृत्रिम त्वचा में दो यूरो के सिक्के के आकार की हेक्सागोनल कोशिकाएँ शामिल हैं। प्रत्येक कोशिका में संपर्क, निकटता और तापमान का पता लगाने के लिए माइक्रोप्रोसेसर और सेंसर लगे हैं। यह रोबोट को अधिक संवेदनशीलता के साथ अनुभव करने में सक्षम बनाती है।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

हमारे भामाशाह

भामाशाहों के अवदान का वर्णन प्रतिमाह इस कॉलम में कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें। **-व. संपादक**

भरतपुर

रा.आ.उ.मा.वि शीशवाड़ा को श्री पीतम सिंह चौधरी उद्योगपति शीशवाड़ा द्वारा सीसीटीवी. कैमरे जिसकी लागत 50,000 रुपये, रंगीन प्रिंटर जिसकी लागत 6,500 रुपये, डीप वोर समरसीबल सहित जिसकी लागत 25,000 रुपये, जनरेटर जिसकी लागत 40,000 रुपये, विद्यार्थी पहचान-पत्र जिसकी लागत 10,850 रुपये, सरस्वती मंदिर का निर्माण जिसकी लागत 30,000 रुपये, मयूर नृत्य पार्टी भुगतान 21,000 रुपये, जिलास्तरीय क्रीड़ा प्रतियोगिता में समस्त संभागियों का 5 दिन का भोजन खर्च 1,00,000 रुपये, श्रीमती नीतू सिंह (पंचायत समिति सदस्य) से एक वाटर कूलर जिसकी लागत 26,000 रुपये, श्री मुकेश बाबू जेलदार से White Board प्राप्त जिसकी लागत 16,000 रुपये, ऑफिस कुर्सी जिसकी लागत 6,000 रुपये, श्री देवी सिंह से दो इन्वर्टर प्राप्त जिसकी लागत 36,000 रुपये, श्री सतीश चौधरी एवं गिरधर फौजदार से आहूजा का साउण्ड सिस्टम प्राप्त जिसकी लागत 19,000 रुपये, श्री पूरन सिंह से 10 ओरियन्ट पंखें प्राप्त जिसकी लागत 15,000 रुपये, श्री प्रकाश बडेसरा से 20 एलईडी. बल्ब प्राप्त जिसकी लागत 4,000 रुपये, श्री बाबूलाल द्वारा रंगाई-पुताई खर्च जिसकी लागत 35,000 रुपये, जेलदार परिवार द्वारा आईसीटी. लैब जीर्णोद्धार जिसकी लागत 11,000 रुपये, श्री सुरेन्द्र फौजदार से 5 कट्टे सीमेन्ट प्राप्त जिसकी लागत 1,500 रुपये, श्री भूदेव प्रसाद मथुरिया से एक आर.ओ. वाटर प्योरीफायर प्राप्त जिसकी लागत 20,000 रुपये, पीतल की घंटी जिसकी लागत 2,000 रुपये, श्री सुनील गुप्ता से एक ऑफिस टेबल प्राप्त जिसकी 13,000 रुपये और एक पंखा (ओरियन्ट) जिसकी लागत 1,200 रुपये, सर्वश्री हरिराम राणा, दानसिंह, चन्द्रपाल, रमेश फौजदार, ओमप्रकाश पण्डित प्रत्येक से एक-एक अलमारी प्राप्त जिसकी प्रत्येक की लागत 7,000 रुपये, श्री देवी प्रसाद पाराशर से इलेक्ट्रॉनिक बेल टाइमर प्राप्त जिसकी लागत 23,000 रुपये, सर्वश्री गोविन्द प्रसाद, रामधन सिंह, रामचरन लाल मीणा, बालमुकुन्द, अवधेश, जितेन्द्र शर्मा से फर्श निर्माण हेतु प्रत्येक से 2,000-2,000 रुपये प्राप्त हुए, स्टाफ भामाशाह द्वारा मंच निर्माण हेतु 84,000 रुपये, जल मंदिर हेतु 50,000 रुपये, ऑफिस पर्दे हेतु 3,000 रुपये, स्पीकर हेतु 3,000 रुपये, पार्किंग टीन शेड हेतु 11,000 रुपये, सीमेन्ट गमला-50 हेतु 5,000 रुपये, सुविधाओं का जीर्णोद्धार हेतु 12,000 रुपये प्राप्त हुए, श्री चन्द्र भान (अध्यापक) से भगोना प्राप्त जिसकी लागत 2,340 रुपये, 75 थाली प्राप्त जिसकी लागत 2,600 रुपये, श्री विनोद शर्मा से प्राथमिक उपचार पेटी-1,850 रुपये, गरिमा पेटी, गरिमा प्लेट 1,150 रुपये, श्री रजत शर्मा से वाटर केम्पर प्राप्त जिसकी लागत 750 रुपये, जन सहयोग द्वारा एमलसन से रंगाई-पुताई का खर्चा 1,50,000 रुपये, लोहे के गेट जंगला-1,00,000 रुपये, 190 स्टूल-टेबल प्राप्त जिसकी लागत 1,90,000 रुपये, दीवाल की ऊँचाई में वृद्धि जिसकी लागत 2,20,000 रुपये, H.P. प्रिंटर जिसकी लागत 15,300 रुपये।

नागौर

रा.उ.मा.वि. टूंकलियां, पं.स. मेड़ता को श्रीराम खोजा प्रधानाचार्य से एक स्पीकर प्राप्त जिसकी लागत 2,500 रुपये, दो पुस्तकालय रैंक जिसकी लागत 4,400 रुपये, शौचालय में पानी की टंकी व फिटिंग करवाई जिसकी लागत 4,500 रुपये, श्री राजेश खदाव (व.अ.) से एक प्रिन्टर प्राप्त जिसकी लागत 15,000 रुपये, पानी की टंकी व नल लगवाई जिसकी लागत 5,100 रुपये, श्री पांचाराम मातवा (व.अ.) से एक अलमारी प्राप्त जिसकी लागत 11,000 रुपये, श्री बाबूलाल (अ.) से रोटी सेंकने की भट्टी प्राप्त जिसकी लागत 5,500 रुपये, श्री संतोष कुमार चौहान से 21 टेबल-स्टूल प्राप्त जिसकी लागत 25,000 रुपये, श्री सोहन लाल गैणा से एक माईक सैट मशीन व एक स्पीकर प्राप्त जिसकी लागत 11,000 रुपये, श्रीराम खोजा, श्री राजेश खदाव, श्री नेमाराम बेड़ा (शा.शि.) ने मिलकर 110 बेग छात्रों को वितरित किए जिसकी लागत 12,500 रुपये तथा शौचालय व मूत्रालय की मरम्मत करवाई जिसकी लागत 30,000 रुपये, समस्त टूंकलियां स्टाफ द्वारा 30,000 रुपये की लागत से 15 पट्टि का बरामदा निर्माण करवाया गया तथा 5 पंखें व 4 पानी के कैन जिसकी लागत 11,000 रुपये, तथा एक वायर लैंस माइक सैट भेंट जिसकी लागत 2,200 रुपये, समस्त PEEO. टूंकलिया स्टाफ से एक अलमारी प्राप्त जिसकी लागत 11,000 रुपये, श्री पुरखाराम अध्यापक द्वारा विद्यालय परिसर में लाईट फीटिंग का कार्य करवाया गया जिसकी लागत 15,000 रुपये।

हनुमानगढ़

रा.आ.उ.मा.वि. दलपतपुरा तह. नोहर को श्री रामेश्वर लाल (अधीक्षक कृषि विभाग) जनसहभागिता योजना गर्त हाल निर्माण (पुस्तकालय कम वाचनालय) बनाने हेतु 10 लाख का चैक, संस्थाप्रधान को भेंट किया, श्री यशपाल बुरड़क से एक दरी (15x12) प्राप्त जिसकी लागत 11,000 रुपये, श्री सतवीर सहारण से 6 केम्पर 20-20 लीटर के प्राप्त। **रा.आ.उ.मा.वि., गोरखाना तह. नोहर** में श्री सुरजाराम शीला द्वारा अपने माता-पिता की पुण्य स्मृति में कक्षा-कक्ष मय बरामदा का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 5,51,000 रुपये, श्री साँवरमल पारीक द्वारा 1,10,000 रुपये की लागत से जलघर का निर्माण करवाया गया।

झालावाड़

रा.आ.उ.मा.वि. करनवास, तह. खानपुर को श्री घनश्याम अग्रवाल व श्री जगदीश नागर से एक-एक पंखा विद्यालय को सप्रेम भेंट।

जालोर

रा.उ.मा.वि. वीरावा पं.स. चितलवाना को श्री भग्गाराम ऐचरा द्वारा कक्षा 11 व 12 के विद्यार्थियों हेतु 50 टेबल व स्टूल भेंट जिसकी लागत 60,000 रुपये।

जोधपुर

रा.उ.मा.वि. शिकारपुरा, लूणी में महन्त श्री दयाराम 108 श्री महाराज द्वारा अपने गुरु श्री 1008 श्री किशनाराम महाराज की स्मृति में तीन कक्षा-कक्ष मय बरामदा का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 30,35,000 रुपये, प्रवेश द्वार मय चारदीवारी का निर्माण जिसकी लागत 6,13,810 रुपये, लोहे का मुख्य द्वारा एवं ग्रिल जिसकी लागत 1,65,000 रुपये, विद्यार्थियों के बैठने जेतु 201 टेबल व 201 स्टूल लोहे की जिसकी लागत 3,18,400 रुपये की राशि व्यय कर विद्यालय को सप्रेम भेंट। **रा.उ.प्रा.वि. बारा कलां, पं.स. ओसियां** को फर्नीचर व पंखें में निम्न भामाशाहों का योगदान रहा। श्री परमेश्वर सारण पुत्र हेमाराम सारण से 15,000 रुपये, सर्वश्री धनाराम तरड़ पुत्र श्री केशुराम तरड़ व गिरधारीराम तरड़ पुत्र चेनाराम तरड़ प्रत्येक से 5,000-5,000 रुपये प्राप्त, सर्वश्री खुमाराम पुत्र श्री खींयाराम जाणी बारा कला, बाबूराम पुत्र खुमाराम तरड़ बारा कला, लालाराम पुत्र केसुराम मेघवाल बारां कला प्रत्येक से 2,000-2,000 रुपये प्राप्त हुए।

चूरू

रा.आ.उ.मा.वि. चारियाँ तह. सुजानगढ़ को श्री अर्जुनसिंह पुत्र समन्द्रसिंह राठौड़, श्री चेतनराम पुत्र श्री नरसाराम मेघवाल, श्री नानूराम शर्मा पुत्र चौथाराम शर्मा द्वारा पचास प्लास्टिक कुर्सी विद्यालय को सप्रेम भेंट, श्री चन्द्रभान पुत्र मंगलचन्द मेघवाल से 05 प्लास्टिक कुर्सी विद्यालय को सप्रेम भेंट।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

शिविरा पत्रिका (मासिक) : नवम्बर, 2019 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादक: अनिल कुमार अग्रवाल, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

बालशिविरा

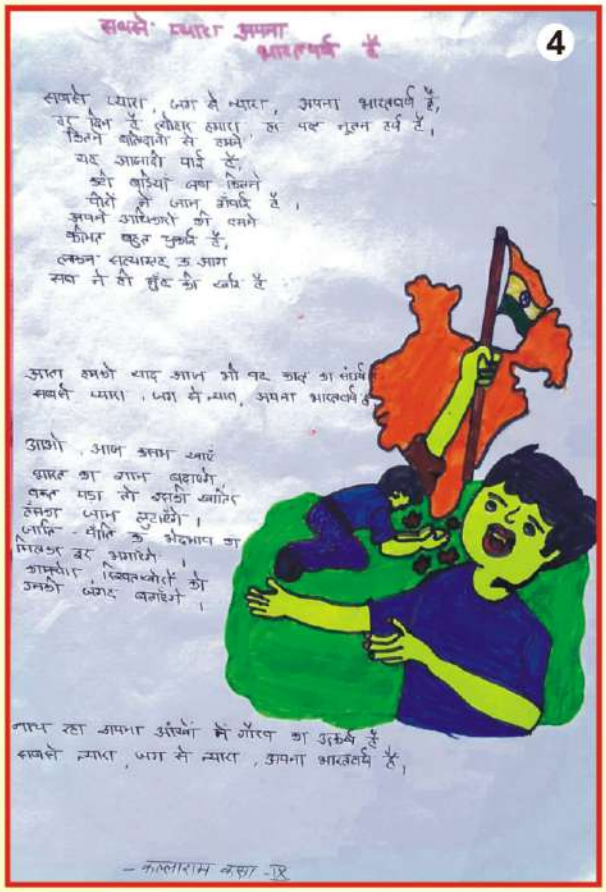

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय चिड़िया तहसील–गिड़ा, जिला–बाड़मेर के संस्थाप्रधान द्वारा प्रेषित शाला के विद्यार्थियों द्वारा सृजित एवं संकलित चित्रों में श्रेष्ठ चित्रांकन

(1) भंवरी कुमारी कक्षा–9, (2) भूपेश कुमार कक्षा–9,
(3) सविता कुमारी कक्षा–10 (4) कल्लाराम कक्षा–9 एवं
(5) कमला चौधरी कक्षा–10

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/417/2017-19 शिविरा पत्रिका (मासिक) ● नवम्बर, 2019 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 नवम्बर, 2019 पृष्ठ 52 ● प्रेषण : माह की 5-6 तारीख

चित्रवीथिका : नवम्बर, 2019

माननीय शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) राजस्थान श्री गोविन्द सिंह डोटासरा : कजाकिस्तान यात्रा झलकियाँ

शिक्षा संकुल, जयपुर में सरकारी स्कूलों से 33 जिलों के 66 विद्यार्थियों को शैक्षिक भ्रमण हेतु रवाना करते हुए माननीय शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री गोविन्द सिंह डोटासरा एवं अधिकारीगण

निदेशालय माध्यमिक शिक्षा राजस्थान के अधिकारीगण को अपनी सेवा निवृत्ति के अवसर पर श्री हरी राम वर्मा (वरिष्ठ निजी सचिव) पंखे (51,000 रूपये के) भेंट करते हुए।

नागौर जिले की रा.बा.उ.मा.वि. बिल्लू हरनावा के भामाशाह अध्यापक श्री सुरेश कुमार, निशा यादव तथा शाला स्टाफ के प्रयासों से बने डिजिटल विद्यालय के उद्घाटन अवसर पर उपस्थित शिक्षक एवं ग्रामीणजन।

रा.उ.मा.वि. चौमूं जयपुर में वृक्षारोपण कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री बनवारी लाल (सीबीइओ., गोविन्दगढ़) विशिष्ट अतिथि श्री बाबूलाल टेलर (प्रेरक एवं राज्यस्तरीय शिक्षक पुरस्कार प्राप्त) एवं अन्य भामाशाह पौधारोपण करते हुए।

रा.उ.मा.वि. मूलजी की ढाणी, बाड़मेर में संस्थाप्रधान श्री सुरेश कुमार डांगी के साथ पुरस्कृत शिक्षक फोरम के अध्यक्ष श्री सालगराम परिहार बालसभा में श्रेष्ठ विद्यार्थियों को पुरस्कृत करते हुए।

रा.उ.मा.वि. उदावास में 52 वें जिला स्तरीय विज्ञान मेले का अवलोकन करते मुख्य जि.शि.अ. झुंझुनूं श्री घनश्याम दत्त जाट, जि.शि.अ. (मुख्यालय) झुंझुनूं श्री अमर सिंह पचार एवं प्रधानाचार्य श्री राकेश ढाका एवं अन्य अतिथिगण।